ISSN : 2436-5017

जापान से निकलने वाली हिंदी साहित्य की प्रथम त्रैमासिक ई-पत्रिका

हिंदी की गूँज

वर्ष 3, अंक -8-9

हिंदी कल्चर सेंटर, जापान की पहल

हिंदी की गूंज

日本インド

Japan India

अतंरराष्ट्रीय ई पत्रिका

संरक्षक

एव

मुख्य संपादक

— रमा शर्मा, जापान

साहित्य और समाज की पगडंडियों पर आगे बढ़ती,हिन्दी के लिये जनसंवाद, चिंतन, मंथन करती हुई,जापान से निकलने वाली पहली हिंदी त्रैमासिक ई पत्रिका

संरक्षक

रमा शर्मा जापान

इंद्रजीत शर्मा (अमेरिका)

प्रधान संपादक
रमा शर्मा (जापान)

संपादक
विनोद पाण्डेय

सह संपादक
उपासना सियाग
डॉ मीना शर्मा

प्रबंध सम्पादक
कपिल कुमार (बेल्जियम)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल जी(प्रसिद्ध व्यंग्यकार)

विदेश प्रतिनिधि

कपिल कुमार (बेल्जियम)
शामलाल पुरी(लंदन)
श्वेता सिंह उमा (रशिया)
मोनी बिजय जी(कतर)

भारतीय प्रतिनिधि
डॉ कामराज गुरू जी कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी
राकेश छोकर-सहारनपुर (यूपी) ,भारत
पूनम माटिया (नई दिल्ली)
डॉ मोनिका देवी (यू पी)

सहयोगी प्रतिनिधि
आलोक रंजन पांडेय (लोक बात टी वी)

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज
बोध गया विश्वविद्यालय

तकनीकी सहयोग
जे पी द्विवेदी
गाजियाबाद

संपादकीय कार्यालय
त्सुकुबा सिटी, टोक्यो ,जापान
व्हट्सअप नंबर -00818038529320
00818042417303
ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

Twitter

@hindikigoonj

यू ट्यूब चैनल-

https://youtube.com/channel/UC2XvCU6zq0FKYqVsQsSONkA

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक, अव्यवसायिक !

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं ।संपादक तथा प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं ।प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका ISSN (जापान) नंबर के साथ जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होगी।
विशेषांक ISBN (जापान) के साथ प्रकाशित होंगे

हिन्दी की गूँज

अनुक्रम

संपादकीय

हिन्दी साहित्य पर परिचर्चा- रमा शर्मा/5
अपनी बात-बिनोद पाण्डेय/6
चलते-चलते- कपिल कुमार/7

आलेख /निबंध /शोध लेख

संत साहित्य को रामानन्द के शिष्यों का योगदान-संतोष बंसल/35-39

गीत /गजल /कविता

गजल-कपिल कुमार/7
गति- बिनोद पाण्डेय/7
ऐसा मेरा गाँव-श्याम सुंदर श्रीवास्तव'कोमल'/12
गजल-हमीद कानपुरी/13
जब भी तिरंगा लहराया है-डॉ मीनू 'मानसी'/13
वह दौर-कीर्ति वर्धन/14
तीन कविता-व्यग्र पाण्डेय/14-15
रिस्तों की खोज में-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/15
गजल-डॉ आलोक बेजान /24
निधन से धन हार गया- प्रो0 नीलू गुप्ता 'विद्यालंकार'/28
द्वंद- मोनी विजय/29
मनुष्य और प्रकृति-लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव/29
तीन-कवितायें-राकेश छोकर/30
बदल रहे हैं रोज कैलेंडर-अमलेंदु शुक्ल/31
मनहरण घनाक्षरी छंद-कामना मिश्रा/31
युद्ध-एल सी कुमार/32
मै दीवार हूँ उसके घर की-आशीष मिश्रा/32-33
हाइकु-लक्ष्मी रानी लाल /41
वर्षा की सीख-नीलम मलकानिया/42
हाइकु-शालिनी गर्ग/47
श्वेता सिंह उमा की कवितायें- श्वेता सिंह उमा/48
गीत-शोभना श्याम/51
बोधि वृक्ष- केशव मोहन पाण्डेय/51
किसान-डॉ अम्बे कुमारी/53
हाइकु-नीलम वर्मा/53
सब निश्चित है-पूनम गौतम/55
हाँ मै तुम्हें भुला नहीं पा रही हूँ- सौम्या दुआ/55
नारी सशक्तिकरण-डॉ मीना शर्मा 'मनु'/56
नहीं भूली हूँ-डॉ अनीता कपूर/56
मृगतृष्णा है प्रेम-सुमन तनेजा/57
सुनो अर्जुन-रश्मि प्रभा/58

लघुकथा /कहानी /रम्य रचना

अजन्मी बेटी की कथा-सुधा गोयल/8-9
नवेली विधवा-दिव्या माथुर/9
डाईवर्सिफिकेशन-डॉ नयनाडेलीवाला/16
कमाऊ माँ-डॉ अन्नपूर्णा सिसोदिया/16
नेकी का फल-कुमकुम कुमारी 'काव्यकृति/16-17
प्रतीक्षा-डॉ उषा अग्रवाल/17-18
किलकारियाँ-प्रो0 नीलू गुप्ता 'विद्यालंकार'/18-19
अनुभव की कुर्सी-मोनी विजय/19
सुनना: एक कला-अंकिता बाहेती/20
लाइन-ज्योत्सना सक्सेना/20
शिकवा-शिकायत-अशोक वाधवाणी/21
कहानी एक किसान की-शिवम शर्मा/21-23
एक खत-शालिनी वर्मा/23
बुजदिल -ज्योत्सना सिंह/24
कहाँ रहे भगवान-महेश शर्मा/28
गरीब की माँ-डॉ रामनिवास 'मानव'/44
विज्ञापन-नन्हें-नन्हें चमकीले तारे-डॉ पूनम माटिया (मानद)/44-45
धंधे की बरकत-डॉ राजीव पाण्डेय/49-50
स्नेहिल माँ- डॉ क्षमा सिसोदिया/50
बेटी-बेचवा-पूर्णिमा राघव शर्मा/54
डेरियाना-सुरेश पांडे/54
लुप्त होती कलाएं- डॉ जयशंकर शुक्ल/57-58
साँझ की लाली-मीना धर पाठक/59-60
नैतिकता-रमा शर्मा/63

यात्रा-वृत्त

खजुराहो यात्रा : एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव- डॉ विदुषी शर्मा/25&27

व्यंग्य

आधी दुनिया की पूरी बातें-डॉ जेन्नी शबनम/10-12
साहित्य का कैशबैक- दिलीप कुमार/40-41

संस्मरण/श्रद्धांजलि

सुर साम्राज्ञी लता दीदी एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व:आपको भूल न पाएंगे-डॉ दीप्ति गौड़/34

विचार/विमर्श

पुस्तक है अनमोल-डॉ ममता श्रीवास्तव 'सरूनाथ'/43
भारत कैसे बनेगा आत्मनिर्भर-तरुणा पुंडीर 'तरुनिल'/43

पुस्तक चर्चा/ समीक्षा

दुम टूटने का दुख-एक नजर-विनोद वत्स/46-47
अंक के चित्रकार/61
साहित्य समाचार /52 & 62

हिन्दी साहित्य पर परिचर्चा

जापान से निकलने वाली पहली हिन्दी की पत्रिका हिंदी की गूंज अभी ई पत्रिका है, इसे छपवाने का मुद्दा जब संपादक मंडल के सामने आया तो बहुत सी और बातें भी उभर कर प्रकाश में आईं। जैसे कि आज हिन्दी साहित्यिक पत्रिका को कितने लोग पढ़ते हैं या फिर हिन्दी साहित्य का ही आज के समाज में क्या और कितना स्थान है । मैं ये नहीं कहती कि हिन्दी साहित्य कम है क्योंकि हिन्दी साहित्य से समाज को क्या क्या मिला है ये तो जग विदित है परन्तु आज के समय में हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम हो रही है । ये कड़वा सच है। हिन्दी साहित्य छप कर बस किताबों में ही सिमट कर रह जाता है । गिनती किताबों की बढ़ रही है, किताबें पढ़ने वालों की नहीं । बहुत ही गंभीर मुद्दा है ये कि हमारे साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिले।

पिछले दिनों हिंदी भाषा को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक बढ़िया समाचार आया । हिंदी लेखिका गीतांजलि श्री की पुस्तक "रेत–समाधि" को बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया । यद्यपि बुकर पुरस्कार की दौड़ में इस किताब की अनुवाद "Tomb of Sand" शामिल हुई । अनुवाद करने का श्रेय डेजी रॉकवेल को जाता है । इस पुरस्कार के बहाने एक चर्चा शुरू हो गयी कि रेत समाधि का अनुवाद न हुआ होता तो क्या यह पुस्तक बुकर पुरस्कार प्राप्त कर पाती ? यह चर्चा काफी हद तक सही भी है और उम्मीद करती हूँ कि यह बात जल्दी खत्म नहीं होती । आज हिंदी में तमाम अच्छे लेखक हैं जो गद्य विधा के हर क्षेत्र में बहुत शानदार लेखनी कर रहे हैं लेकिन उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान कौन दिलाये और कैसे दिलाई जाये ? अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी की लोकप्रियता किसी से छिपी नहीं है । यदि भारतीय भाषा की पुस्तकों का व्यापक अनुवाद अंग्रेजी सहित अन्य विदेशी भाषाओं में हो तो निश्चित रूप से भारत के लेखकों की झोली में तमाम बड़े अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार आएंगे । कई बातें हैं जिस पर अच्छे लेखक और प्रकाशकों को ध्यान देने की आवश्यकता है । खास तौर पर प्रकाशकों की यह कोशिश होनी चाहिए कि केवल हिंदी में किताब छापकर, हिंदी बाजार में पुस्तकों को बेचकर , अपना थोड़ा बहुत मुनाफा निकाल कर बैठ न जाएँ । लेखक की अपनी सीमा है और प्रकाशक की अपनी सीमा है । अगर प्रकाशक अच्छी किताबों को अन्य भाषाओं में अनुवाद कराये तो हिंदी साहित्य के लेखकों को बड़ा बाजार मिल सकता है । इससे लेखक को आय और प्रकाशक को मुनाफा तो होगा ही लेकिन सबसे बड़ी बात है कि अच्छा और अलग लेखन से दुनिया परिचित होगी तो उसके परिणाम कुछ ऐसे ही आएंगे जैसे इस बार बुकर पुरस्कार के रूप में आये हैं । ऐसा हरगिज नहीं है कि भारत में और लेखक नहीं है जो बुकर दौड़ में शामिल नहीं हो सकते लेकिन यह सोचने वाली बात जरूर है कि कितने लेखकों को इतना विस्तार और चर्चा मिल पाता है । भारत में हिंदी साहित्य के पाठकों की संख्या में कमी आयी है ,नई पीढ़ी भी अंग्रेजी की ओर भाग रही है । ऐसी स्थिति में गीतांजलि श्री की रेत समाधि ने जो उदाहरण स्थापित किया वो हर वर्ग के पाठकों को प्रभावित करने वाला है । हिंदी लेखकों को गर्व महसूस होना चाहिए । गर्व महसूस करने के साथ–साथ एक संकल्प लेने की भी आवश्यकता है कि कोशिश रहे कि लेखन पाठकों को दृष्टि में रखकर लिखा जाए जिसमे कुछ तत्व हो , कुछ विचार हो , कहानियों की पुनरावृत्ति न हो और सबसे खास बात उन्हें बड़े व्यापकता देने का हर संभव प्रयास करना चाहिए । हिंदी साहित्य को वैश्विक स्तर पर व्यापकता प्रदान करने के लिए यह भी ध्यान रहे कि हिंदी के अच्छे साहित्य की व्यापकता तो जरुरी है लेकिन जो साहित्य की कसौटी पर जो खरा नहीं उतरता है उसकी आलोचना भी बहुत आवश्यक है । आज कई लेखकों में यह आदत देखी गयी है कि सिर्फ छपने के लिए लिखते हैं । धन और प्रतिष्ठा से अगर उनके साहित्य को व्यापकता मिलता है तो वो भी ठीक नहीं है । ऐसी स्थिति में उनकी किताब का महत्त्व और भविष्य में उनके लेखक का प्रभाव शून्य हो जाता है और एक बड़ा वर्ग हिंदी साहित्य से कटने लगता है । साहित्य कभी उबाऊ नहीं होता , इसका अपना एक स्वाद एक रस होता है जो कभी समाप्त नहीं होना चाहिए। ऐसे अनुवादकों को भी आगे आना चाहिए और हिन्दी साहित्य समाज को एक विस्तृत रूप देकर उसे दुनिया के हर कोने तक पहुँचाना चाहिये। ऐसा होता है तो किताबों का विश्व के कोने-कोने में पहुंचना हिंदी लेखकों के लिए सुखद तो होगा।

■■

रमा शर्मा
मुख्य संपादक एवम संरक्षक

अपनी बात

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिंदी को लेकर अक्सर समय-समय पर विवाद उठता रहता है। विवाद अक्सर दक्षिण से उठता है। भारत का संविधान में हर भाषा को समान सम्मान का अधिकार निहित है फिर भी कुछ लोग हिंदी को अपमानित करने में गर्व महसूस करते हैं। एक हिंदी भाषी होने के नाते सभी भाषाओं का सम्मान करते हुए कहना चाहता हूँ कि भारत को मतलब सम्पूर्ण भारत को अगर एक सूत्र में कोई भाषा बांधती है तो वह हिंदी है। राजभाषा तो है किन्तु हिंदी आज तक राष्ट्रभाषा नहीं बन पायी लेकिन फिर भी लोगों का मत रहता है कि हिंदी अन्य भाषा समझने वालों पर जबरदस्ती थोपी जा रही है। यह निराधार बात है ,हिंदी की व्यापकता स्वयं बढ़ी है ,हिंदी को लोग स्वीकार कर रहे हैं।
शायद यह बात कुछ लोगों को चुभ रही है।

दक्षिण की फिल्में इस बात की सबूत है कि हिंदी में डब होने के बाद मुनाफा बढ़ जाता है। जो अपनी फिल्मों को हिंदी में डब करवाने के लिए लालायित रहते हैं जब वो कहते हैं कि हिंदी थोपी जा रही है तो उन की सोच पर अनायास ही हँसी आ जाती है। हिंदी तो जोड़ने की भाषा है भला इससे विखंडन कैसे हो सकता हैं ? महात्मा गाँधी की प्रिय भारतीय संस्कृति की पहचान हिंदी विश्व में भी अपनी पहचान बढ़ा रही है। जब देश में और विदेश में हिंदी की महत्ता दिनोंदिन बढ़ रही है फिर ये चंद लोग जो हिंदी का विरोध कर रहे हैं उनकी मंशा क्या है ?

दरअसल हिंदी भाषा क्षेत्र के लोगों का उत्साह और हिंदी की व्यापकता को देखकर कुछ लोग भ्रम फैला रहे हैं कि इससे क्षेत्रीय भाषाओं को नुकसान होगा। विरोध करने वाले ज्यादातर लोग राजनीति से प्रेरित हैं और हिंदी और दक्षिण भारतीय भाषाओं के बीच खाई को बढ़ा कर राजनैतिक रोटियाँ सेंक रहे हैं। अगर लोग अपनी-अपनी भाषा को आगे बढ़ाने की बात कर रहे हैं तो इसमें बुराई क्या है।हाँ जबरदस्ती थोपना सही नहीं है लेकिन जिसकी स्वीकार्यता बढ़ रही है उसके विषय में बात करना और उसको मजबूत करने के अभियान को बल देना किस प्रकार से गलत हो सकता है ? हाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार वालों को भी इस बात का ध्यान देना जरुरी है कि जोश में किसी और भाषा का अपमान न हो। जैसे अभी हाल में तमिलनाडु के शिक्षा मंत्री पोनमुडी का बयान आया कि हिंदी बोलने वाले गोलगप्पे बेचते हैं। तमिल के समर्थन में ऐसे बयान की निंदा होनी ही चाहिए। तमिल भाषा या किसी भारतीय भाषा को लेकर जब कोई हिंदी वाला ऐसा नहीं बोल रहा तो ऐसे में इनका यह बयान हिंदी भाषा को नीचा दिखाने की साजिश के तौर पर देखा जा सकता है।

भारत के किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार नहीं है कि किसी की भाषा ,जाति ,धर्म ,रूप रंग का मजाक उड़ाए या कोई अभद्र टिप्पणी करे। हिंदी राजभाषा है और व्यापक स्तर पर हिंदी का उपयोग हो रहा है। आज भारतीय मीडिया और सोशल मीडिया की प्रमुख भाषा हिंदी हो चुकी है। अंग्रेजी ऑफिस और कान्वेंट स्कूलों में भले बोला जा रहा हो लेकिन सामान्य बातचीत के लिए अक्सर भारतीय हिंदी का प्रयोग करते हैं। वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में बह्लीवुड का भी बड़ा योगदान है। कुल मिलाकर जिस भाषा को देश में और विदेश में लोग निरंतर पसंद करते जा रहे हैं उसके विषय में अभद्र टिप्पणी शोभनीय नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि केवल हिंदी भाषी लोग ही हिंदी का प्रसार कर रहे हैं। दक्षिण से लेकर उत्तर तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक बड़े स्तर पर हिंदी को समझते और बोलते हैं। संभव है कि सुदूर प्रांतों में बोलते कम हो लेकिन ऐसा बहुत संभव है कि लोग हिंदी न समझते हों।

हिंदी को लेकर विवाद बहुत वर्षों से चला आ रहा है। भविष्य में क्या होगा इसकी भविष्यवाणी अभी नहीं की जा सकती लेकिन फिलहाल एक बात है कि हिंदी सबको जोड़कर चलने वाली भाषा है। विवाद करने वालों को समझने की जरूरत है कि पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली इस भाषा के उन्नति और विकास से किसी अन्य भाषा का अपमान हो ही नहीं सकता। कोई जबरदस्ती नहीं है लेकिन अच्छा लगेगा यदि हर भारतीय हिंदी को बोले ,लिखे और समझे। इससे वैश्विक स्तर पर भी हम मजबूती से हिंदी को प्रस्तुत कर सकते हैं। विवाद से बचते हुए राजनेताओं को हिंदी और उसके साथ-साथ अन्य भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए भी समृद्ध योजनाएं बनानी चाहिए।सब मिलकर हिंदी को मजबूत करें तो अपनी संस्कृति और अपने देश की पहचान और मजबूत होगी।

■■

Humanity
SHARE YOUR HUMANITY
WE NEED HUMANITY

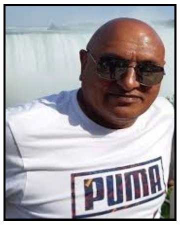

कापिल कुमार

अतिथि संपादक

चलते चलते

विश्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है ।लगभग हर देश कहीं न कहीं उलझा हुआ है । किसी के सामने देश की आंतरिक समस्याएं हैं तो किसी के सम्मुख बाह्य समस्याएं । कोरोना महामारी के बाद रूस-यूक्रेन युद्ध ने तो विश्व को उस तरफ मोड़ दिया है कि बहुत से देशों की आर्थिक व्यवस्था चरमरा गयी है । किस दिशा में विश्व जा रहा है ये अभी साफ नहीं मगर ये साफ है कि कोई अच्छी दिशा की ओर अग्रसर नहीं है । विश्व के देशों की ग्रुपबाजी भी आने वाले समय में कुछ बड़ा धमाका कर सकती है । महाशक्ति बनने की होड़ में रूस, अमेरिका और यूरोपीय देशों से लोहा ले रहा है । यूक्रेन से लड़ाई थमने का नाम नहीं ले रही है । भले ही इस लड़ाई में यूक्रेन बर्बाद हो रहा है लेकिन इस लड़ाई से रूस को भी भारी नुकसान हो चुका है । अब महाशक्ति बनने का सपना टूटता दिखाई दे रहा है ।इसका एक कारण यहीं नहीं है कि यूक्रेन से युद्ध में अपनी शक्ति प्रदर्शन करके रूस खोखला होता जा रहा है बल्कि एक कारण महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि रूस में आंतरिक कलह बढ़ता दिख रहा है । रुसी राष्ट्रपति के युद्ध सम्बन्धी निर्णय को लेकर जनता में असंतोष और अपने शासक के प्रति रोष उत्पन्न हो रहा है । मारे तो रुसी सैनिक भी जा रहे हैं ,मिसाइल तो रूस का भी बर्बाद हो रहा है । आर्थिक स्थिति तो रूस की भी गड़बड़ा रही है । युद्ध का कोई निर्णय नहीं आ रहा,आखिर कब तक आम नागरिक धैर्य रखे ? इस घटना से एक बड़ी बात निकल कर सामने आती है कि देश के शासक को किसी भी बड़ा कदम उठाने से पहले और बार-बार निर्णय बदलने से पहले जनता का रुख भी समझना आवश्यक है । कारण कुछ भी लेकिन यूक्रेन को छोटा समझने की गलती अब रूस को भारी पड़ती दिखाई दे रही है । रूस,यूक्रेन ,अमेरिका और यूरोपीय देशों के राजनयिकों के बीच बयानबाजी भी चल रही है । कूटनीति का अलग रंग दिखाई पड़ रहा है । देशों के नागरिक अलग दबाव दे रहे हैं ।इस स्थिति में येन केन प्रकारेण अगर इस युद्ध को रोका नहीं गया तो यह युद्ध परमाणु युद्ध में भी बदल सकता है ,ऐसी सम्भावना है । और यदि ऐसा हुआ तो यह विश्व शांति के लिए बहुत घातक होगा । सभी देशों को मिलकर ,मुखर होकर इस युद्ध को रोकना ही पड़ेगा वरना कई देश बर्बाद हो जायेंगे और बर्बादी का ऐसा मंजर होगा जिसको दुरुस्त करने में सदियां बीत जाएँगी । आज के परमाणु युग में किसी भी देश को छोटा समझने की भूल बड़े देशों को भी भारी पड़ सकती है । इसलिए सब देशों को जुटकर युद्ध से शांति की ओर बढ़कर मानव मूल्य की रक्षा करने की आवश्यकता है । पैसा ,जमीन , जिद सब धरा का धरा रह जायेगा देश का अस्तित्व वहाँ के नागरिकों की खुशहाली में है ,वहाँ की संस्कृति और साहित्य के संरक्षण में है , वहाँ की नई पीढ़ी के उत्थान में है । ■■

गजल

उफ ये कैसी नफरतें हैं ! उफ ये कैसी बरहमी
ऐ खुदा! तेरी जमीं पर कैसी है भगदड़ मची

नाम पर मजहब के दंगे ,कत्लो- गारत का जुनूं
हर चमन है खूं से लथपथ,सहमी- सहमी हर कली

आदमी को क्या हुआ है जाने,तेरे नाम पर
खूं ही खूं हर तरफ,दरिया-ए-खूं धरती बनी

खुद में कमियाँ दीखती है कब किसी को भी यहाँ
हर किसी को दीखती हैं दूसरे में ही कमी

हमने इस दौर-तरक्की में यही पाया कपिल
जितने हम ऊँचे उठे, इंसानियत उतनी गिरी

■■

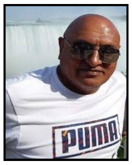

कापिल कुमार

गति

कम समय में दूर जाना है
इसलिए गति को बढ़ाना है

राह में घर्षण बहुत है
चेतना ही सब नहीं है
यदि न विस्थापित हुआ तो
कार्य का मतलब नहीं है

गति घटे तो और तेजी से
उस दिशा में बल लगाना है

है नहीं नजदीक मंजिल
किंतु जिद पर हम अड़े हैं
सूर्य, जल, मिट्टी, हवाएँ
शक्ति देने को खड़े हैं

मिल रही ऊर्जा हमें अब
लक्ष्य पर नजरें गड़ाना है

चढ़ रहे ऊँचाइयों पर
श्वास उलझन दे रहा है
पर हरा मन वृक्ष जैसा
ऑक्सिजन दे रहा है

बस गुरुत्वाकर्षणों के मध्य
संतुलन झुक कर बनाना है

■■

विनोद पाण्डेय
गाजियाबाद

अजन्मी बेटी की कथा

“मां ,तुम अस्पताल जा रही हो?” साड़ी की प्लेटे ठीक करते करते मंजु के हाथ रुक गये।ये आवाज कहां से आई? आसपास तो कोई भी नहीं है। कितनी महीन और धीमी आवाज है।रोली तो अभी कुल एक ही साल की है।अपनी दादी के पास आराम से हो रही है। फिर कौन फुसफुसा रहा है?

सोचते-सोचते मंजु ने हाथ में पकड़ी प्लेटें पेटीकोट के अन्दर कर लीं।इस क्रिया में उसके हाथ अपने पेट से छू गये।फिर एक महीन सी खिलखिलाहट-“तो तुम मुझे नहीं जानतीं मां।या अपनी बेटी कहते हुए डर रही हो?”

“कौन हो तुम? मैंने तुम्हें नहीं देखा। सामने आकर बात करो”-मंजु ने हैरत से पूछा।

“तुम गलत कह रहे हो मां। मुझे तुमने ,पापा ने और डाक्टर अंकल ने अभी पिछले सप्ताह ही तो देखा है।तुम मुझे क्यो नकार रही हो?”

मंजु हैरत से स्वंय को टटोलने लगी।वह चुपचाप सोफे पर बैठ गई।-“जो निर्णय वह लेने जा रही है क्या वह गलत है।मेरी अंतर्रात्मा मुझे क्यों कचोट रही है?अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनूं या स्वंय को धोखा दूं?”अभी मंजु सोच ही रही थी कि फिर वही धीमी आवाज

“मां, तुमने पहचान ही लिया।चलो अच्छा हुआ।कुछ ही समय की तो मेहमान हूं मैं।मेरा मन था कि मरने से पहले एक बार मां कहकर पुकार लूं।तुम्हारा स्नेह स्पर्श पाऊं। तुमने मेरी आवाज सुनी।अब तुम मेरी व्यथा भी सुनो।सुन लो मां।अभी कुछ ही देर में तुम पापा के साथ बाइक पर बैठ कर नर्सिंग होम जाओगी।

डाक्टर तुम्हें आपरेशन थियेटर में ले जाएंगी। तुम्हें एक बड़ी भेज पर लिटाया जायेगा।उस मेज के पास एक और मेज होगी जिस पर औजार रखें होंगे। तुम्हें एनसथिया देकर बेहोश कर दिया जाएगा।डाक्टर बेरहमी से कैंची से काट काट कर तुम्हारे गर्भगृह से मुझे निकाल कर फेंक देगा।तुम दुनिया के सामने जलील होने से बच जाओगी।

मेरी बड़ी बहन रोली ही तुम्हें मां कहकर पुकार सकती है।उसी के लिए अभी से एक एक पैसा कर दहेज जोड़ोगी। फिर तुम अपनी इस अनाम, अनजान भ्रूणकुमारी के लिए जान बूझकर ऐसी जोखिम क्यो उठाओगी।मेरा मर जाना एक तरह से तुम्हारे लिए ठीक ही है मां।

तुम किस सोच में पड़ गई मां।तुम कोई नया काम नहीं कर रहीं।सभी माएं यही कर रही है।पढ़ी लिखी इक्कीसवीं सदी की माएं भली प्रकार जानती है कि उनके लिए क्या उचित है और क्या अनुचित। फिर ये निर्णय तुम्हारे अकेले का नहीं है।दादी मां पापा, डाक्टर और पूरा समाज यही तो चाहता है।दो बेटियों की मां बनकर तुम पूरे समाज में निरीह बन जाओगी।

न....न उदास मत हों। तुम्हारे मन में मेरे प्रति अभी ममता कहां जागी है। मैं तो जरा सा मांस का लोथड़ा मात्र हूं। मुझमें न समझ है न बुद्धि।एक समय था जब धरती पर आने के बाद बेटी को अफीम का गोला खिलाकर या खाट की पार्टी से गला घोंटकर मार दिया जाता था।

मां की ममता सूख जाती थी। लेकिन वह असमानता का युग था। बर्बरतापूर्ण युग था।औरत अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं थी। वैज्ञानिक तरक्की नहीं हुई थी।तभी शायद एक मां अपने गर्भ के अंधेरे में अपनी बेटी को अपने खून से सींचकर जिन्दा रखती थी।बेशक उस बेटी के भाग्य में जिंदगी के उजाले नहीं थे लेकिन आज आप उससे अंधेरे भी छीन लेना चाहती हो।क्यो मां क्यों?

अभी कल तुम नारी चेतना मंच से नारी की वकालत करते हुए उसके अधिकारों के समर्थन में बोली थीं। बोलते समय तुममें जोश था। महिलाएं दम साधे तुम्हारी बातें सुन रही थी।तुम्हारी बातें समाप्त हुई और सारा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।तुम्हारी गर्दन गर्व से तन गई और मैं तुम्हारे अंतर में अकुलाइ तुम्हारी झूठी दम्भी बातों पर मुस्करा रही थी। क्योंकि तुमने मेरी हत्या का फैसला चार दिन पहले ले लिया था।

कहते हैं पूत कपूत हो सकता है पर माता कुमाता नहीं हो सकती। फिर तुम हत्यारिणी कैसे हो सकती हो?डाक्टर की मेज पर पेपर साइन करते समय तुम्हारे हाथ नहीं कांपे थे। तुम्हारे दिल में कोई हूक नही उठीं थी। लेकिन तुम्हारे निर्णय से मैं सहमत गई थी।

मां की ममता तो बांटने से और बढ़ती है।बच्चे को कांटा चुभने तो दर्द मां को होता है।क्या यह सब सच है मां? पर मैं तुमसे इतने सवाल क्यों कर रही हूं?स्त्री चार अक्षर पढ़ कर अपनी तरक्की का कितना ही ढिंढोरा पीट ले,वह पल पल स्वंय को छलती जीती रहती है लेकिन उसकी स्थिति में कभी कोई परिवर्तन नहीं आता।

तुम आज भी वही हो मां जहां पहले थीं।तुम्हारी भाग्य रेखा कभी नहीं बदली और न बदलेगी।बल्कि इक्कीसवीं सदी की नारी भ्रूण हत्यारिणी बन पहचानी जाएगी। इतिहास इसे कभी माफ नहीं करेगा। अपने नाम के काले अक्षर अभी पढ़ लो मां।

तुम इतनी कायर क्यो हो मां? तुममें तो त्याग और समर्पण की भावना है जो धारा के प्रवाह को मोड़ सकती है। तुममें इतना धैर्य क्यो नहीं है ।तुम्हारा आंचल इतना छोटा क्यों हो गया है ?तुम अपनी बेटी की आवाज क्यों नहीं सुन सकतीं?तुम अपने खून से बगावत क्यों कर रही हो मां?

तुम्हारी आवाज कोख परीक्षण के खिलाफ क्यो नही उठती?औरत होकर भी औरत को आवरणहीन क्यों करती हो?क्या चाहती हो कि धरती नारी विहीन हो जाए? सामाजिक संतुलन बिगड़ जाए। वैसे भी लड़कों के अनुपात में लड़कियां कहीं तीस प्रतिशत कहीं पच्चीस प्रतिशत कम हैं।कौन से सुख तुम्हे पुरुष समाज में मिले हैं?जो तुम उसी समाज के हाथ मजबूत करने में लगी हो?

क्या तुम जीवन की विषमता को अपने आसपास नहीं देखतीं?जिस पुरुष समाज के लिए तुम मेरी बलि दे रही हो ,वही पुरुष अपनी पत्नी को महज एक जिस्म समझता है। वृद्धावस्था में मां को एक फालतू बोझ से अधिक नहीं समझता।पल पल उसी से अपमानित होकर उसी की वकालत करते हुए स्वंय पर इतने अत्याचार?

खैर जाने ही दो मां। तुम्हें वैसे भी देर हो रही है।डाक्टर को दिया समय पास आ रहा है।अब तुम्हें अलविदा कहना ही होगा।

चलते चलते इतना ही कहूंगी कि अपनी जान की भीख नहीं मा.ंगती।बस आपके लिए दुआ करुंगी।मैं जानती हूं कि यदि मैं रही तो तुम हमेशा मेरे लिए चिंतित रहोगी।मेरी सुरक्षा तुम पर भारी पड़ेगी। अपने अंदर के तेजाब से झुलसाने वाले बलात्कारी पुरुष हर गली हर चौराहे पर बैठे हैं।अब तो बेटी अपने घर में अपनों के बीच सुरक्षित नहीं है। कोई निर्भया पैदा हो इससे अच्छा तो मर जाना है।

मां मेरी सोच नकारात्मक नहीं है।पर बलात्कार से एक बेटी की नहीं पूरे परिवार की मौत होती है। बेटियां बच भी जाएं तो उन्हें कोई नहीं स्वीकारता। पूरे जीवन नारकीय यंत्रणाएं झेलती है।कदम कदम पर मानसिक बलात्कर की शिकार होती हैं।मैं नहीं चाहती कि आपको कभी शर्मिंदा होना पड़े। अलविदा मां।

“अरे मंजु,तुम अभी तक ऐसे ही बैठी हो? तैयार नहीं हुई।अरे भई डाक्टर से समय लिया है।“राकेश ने मंजू को चेताया।

“मुझे क्षमा करना राकेश । मैंने अपना निर्णय बदल लिया है।”

“यह क्या कह रही हो मंजु? तुम होश में तो हो?”

“मैं पूरे होश में हूं।मैं यह हत्या नहीं होने दूंगी”.

“लेकिन इसकी शादी और लालन-पालन के लिए पैसा कहां से लाएंगे?तुम तो स्वंय समझदार हो।”

“मैंने समझदारी से ही फैसला लिया है बेटी तुम पर बोझ हो सकती है मुझ पर नहीं।यदि बेटा होता तो क्या उसका खर्च नहीं उठाते?क्या वह दोनों हाथों में धन की थैली लेकर आता?”

“तुम होश में नहीं हो।खुद को संभालो और चलो डाक्टर के पास।”

“नहीं राकेश, मुझे अब कहीं जाने की जरुरत नहीं है।”

“क्या अब यही तुम्हारा फैसला है?”

“हां राकेश , इसके जन्म के बाद मैं आपरेशन करा दूंगी।”

-“लेकिन मां का सपना?”

“मां का सपना पूरा करने के लिए एक के बाद एक स्त्रियां नहीं करुंगी।मेरी कोख में पलने वाला बच्चा जन्म ले या न ले ये तुम्हारा और मां का नहीं मेरा अधिकार है।”

और मंजु अपनी विजय पर या हार पर आंसुओं के सैलाब में डूब गयी......

सुधा गोयल
१८६-ए, कृष्णानगर ,डा दत्ता लेन ,
बुलंद शहर-२०३००१
मोबाइल नंबर ९९१७८६९९६२
sudhagoyal0404@gmail. com

नवेली विधवा

हैनरी विलियम्स का शव काली रौल्स-रहयस में रखा थाय ताबूत पर चम्पा के फूलों से लिखा था ‘माई-डार्लिंग-हब्बी’ और लिलीज से गुंधी हुई अन्य शुभकामनाएं ताबूत के चारों ओर सजी थीं। कारों में बैठे सगे-संबंधी शमशान-गृह की ओर रवाना होने के लिए बेचौन थेय कब ये क्रियाक्रम निबटे और कब वे पब पहुंच कर शराब पियें।

‘लैला का जनाजा है जरा शान से निकले,‘ इस मिसरे का जिक्र करते हुए माइरा ने हैनरी से वादा लिया था कि मृत्योपरांत वह उसका जनाजा बड़े धूम-धड़ाम से निकालेगा किन्तु वह खुद ही चल बसा। माइरा ने तय किया कि वह हैनरी को धूमधाम से विदा करेगीय उसके अपने भविष्य के लिए भी यह बहुत आवश्यक था। ऐसा दिन क्या बार-बार आता हैय हर एक की नजर माइरा पर टिकी होगी। सत्तर बरस की माइरा आज भी शहद से भरी हैय उसे भंवरों की भी कोई कमी नहींय हैनरी के बचपन के मित्र, बैरी, उनमें से एक है।

बैरी ने माइरा को बड़ा संभाल के कार में बैठाया, सुबह उसके मेक-अप में ढाई-घंटे लगे थेय बैरी से ऐसे सटी बैठी थी माइरा, जैसे दुनिया में बैरी के सिवा अब उसका कोई नहीं था।

अन्त्येष्टी-निदेशक की चौकसी में कारों का जुलूस चींटी-चाल से आगे बढ़ा। पूरा मोहल्ला बड़े अदब से खड़ा थाय राहगीर एक तरफ सरक कर महंगी कारों के काफिले को निहार रहे थेय रायल्स-रायस में सवार माइरा का दिमाग सातवें आसमान पर थाय उसका भविष्य सुनिश्चित था।

फ्यूनरल के दौरान, छुई-मुई बनी माइरा बैरी के कंधे पर ही टिकी रही। रूमाल को कभी इस आँख से तो कभी दूसरी आँख से छुआते वह बार-बार घबरा उठती कि कहीं उसका मेक-अप तो खराब नहीं हो गया। एकाएक बूंदाबूंदी शुरू हो गयी और लोग जल्दी जल्दी अपनी अपनी कारों की ओर लौटने लगे।

‘बैरी, तुम छतरी नहीं लाए?‘ चालीस वर्षों के विवाहित जीवन में ऐसा कभी नहीं हुआ कि माइरा को बारिश में बिना छतरी के खड़ा रहना पड़ा हो।

‘ओह यू पुअर माइरा, आओ, जल्दी से मेरे अम्ब्रेला के नीचे आ जाओ,‘ कहते हुए हैनरी के अन्य दोस्त विंस्टन ने अपना छाता माइरा पर तान दिया। जब तक बैरी छाता लेकर लौटा, विंस्टन की लैम्बोर्गिनी में माइरा सातवें आसमान पर उड़ रही थी।

- **दिव्या माथुर**

आधी दुनिया की पूरी बातें

भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने २४ दिसम्बर १९१४ को श्री गोपाल कृष्ण गोखले को एक पत्र लिखा था। पत्र में लिखा "... ऐसा लगता है कि हमें भारत को उसकी बीमारी से मुक्त करने से पहले पुरुषों की एक नयी नस्ल की आवश्यकता है। हम मकसद को लेकर अधिक प्रतिबद्धता, भाषण में अधिक साहस और कार्रवाई में अधिक ईमानदारी चाहते हैं। हम ऐसे पुरुष चाहते हैं जो इस देश से प्यार करते हों और अपने भाइयों-बहनों की सेवा और सहायता के लिए इच्छुक रहते हैं। वे नहीं जो कपट और स्वार्थ से देश के पतन में और बढ़ावा दे रहे हैं। मैं आपको कैसे बताऊँ कि मुझे दिखावा और पूर्वाग्रहों से कितनी सख्त नफरत है। इसी तरह साम्प्रदायिक संकीर्णता, दृष्टि और उद्देश्य की प्रांतीय सीमाओं से भी मुझे सख्त नफरत है। मानव निर्मित विभाजनों और मतभेदों के सभी अभिमानी परिष्कार मुझे थका चुके हैं।"

इस पत्र को पढ़कर एक बात मेरे जेहन में आती है कि उन दिनों क्रांतिकारियों और आजादी के लिए प्रतिबद्ध लोगों को छोड़कर कुछ ऐसे पुरुष भी थे जो कुटिल और बेईमान थे, जिनकी मानसिकता समाज के विरुद्ध थी। सरोजनी नायडू का पुरुष की नयी नस्ल की बात कहना पुरुष के सोच, मासिकता और कायरता को दर्शाता है। निःसंदेह अगर ऐसा न होता तो किसी भी सदी में कभी भी देश गुलाम न हुआ होताय चाहे मुगल शासकों की गुलामी हो या अँगरेजों की। कठिन संघर्षों के बाद अब हमारा देश भगौलिक रूप से आजाद है, लेकिन मानसिक गुलामी से आजादी की हर सम्भावना अब धूमिल पड़ती दिखती है। इसके लिए दोषी कोई खास समाज, सम्प्रदाय, जाति, धर्म नहीं, बल्कि सदियों से रोपित व पोषित हमारी मानसिकता है।

एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है, 'जर, जमीन, जोरू जोर की, नहीं तो किसी और की'। आखिर ऐसा क्या बदलाव हुआ जो ऐसी लोकोक्ति बनी, हमें इसपर विचार करना चाहिए। जर यानी संपत्ति और जमीन से स्त्री की समानता क्यों? एक ही समानता है कि ताकत के बल पर इन तीनों पर आधिपत्य जमाया जा सकता है। गुलाम भारत में स्त्रियाँ संपत्ति की तरह देखी जाती थीं। अगर किसी राज्य या रियासत को अपने अधीन करना है तो युद्ध में जीत के बाद संपत्ति के साथ ही स्त्रियों पर भी अधिकार कर लिया जाता था। कई वीरांगनाओं ने अधीनता स्वीकार न कर जंग किया और मृत्यु को गले लगाया, कुछ स्त्रियों ने जौहर कर आत्मदाह किया तो कुछ ने पति के साथ सती हो जाना स्वीकार किया। गुलामी से पहले भी स्त्रियों पर अत्याचार हुए हैं क्योंकि स्त्री की शारीरिक शक्ति पुरुष से कम है, और इसका फायदा हर युग में पुरुषों ने उठाया है। अहल्या की कहानी से यह बहुत अच्छी तरह समझा जा सकता है। बेहद अफसोसनाक है कि अपराधी पुरुष हैं और सजा स्त्रियाँ पाती हैं। आज के वक़्त में इस पर गहन विमर्श और बदलाव की जरुरत है।

आज के समय में ज़्यादातर प्रगतिशील होने का ढोंग ही होता है, क्योंकि मानसिक रूप से आज भी सदियों पुरानी रूढ़ियों और परम्पराओं के प्रभाव से हम उबर नहीं सके हैं। कहीं न कहीं हमारा सोच एक ऐसे जाल में उलझा हुआ है जो रूढ़ियों, परम्पराओं, प्रथाओं, चलन, रिवाज इत्यादि के द्वारा सदियों पहले बुना गया था। निश्चित ही उस समय की यह जरुरत रही होगी, क्योंकि हर कार्य के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। समय के उस दौर में जो आवश्यक रहा होगा, वह भी विकास प्रक्रिया के अनुसार सोच के बदलाव से ही संभव हुआ होगाय अन्यथा आज भी पाषाण युग में मानव सभ्यता जी रही होती।

हमारे सोच को मानसिक गुलामी ने इस-कदर जकड़ रखा है कि समय के साथ हुए परिवर्तन के बावजूद देखने का नजरिया रूढ़िवादी और ढकोसलावादी ही है, विशेषकर स्त्रियों के लिए। ऐसा नहीं है कि सिर्फ पुरुष का सोच ऐसा है, बल्कि स्त्रियाँ स्वयं मानसिक गुलामी की शिकार हैंय गलत रूढ़ियों को बढ़ावा देती हैं, परम्पराओं और प्रथाओं के नाम पर। ऐसा कहना गलत होगा कि सिर्फ अशिक्षित समाज की स्त्रियाँ रूढ़ियों का पालन करती हैं, बल्कि शिक्षित समाज की स्त्रियाँ ज़्यादा रूढ़िवादी हैं।

अशिक्षित समाज की स्त्रियाँ अगर रूढ़िवादी हैं तो उसी अनुरूप कार्य-व्यवहार करती हैं, किन्तु अधिकतर शिक्षित समाज की स्त्रियाँ दोहरे व्यवहार के साथ जीती हैं। स्वयं को आधुनिक दिखाने के लिए पहनावा और रहन-सहन में भले ही आधुनिकता अपना लें, लेकिन रूढ़ियाँ उनके दिमाग को जकड़े हुए हैं। जिन रूढ़ियों की अभी के समय और समाज में न जरुरत है न औचित्य, उससे वे खुद को अलग नहीं कर पाती हैं। जितनी कुरीतियाँ व कुप्रथाएँ हैं उनके पक्ष में उनके पास ढेरों तर्क हैं, जो बेबुनियाद, अतार्किक, मूढ़ और फिजूल हैं। अधिकांशतः रूढ़ियों के पक्ष के सारे तर्क और व्यवहार, धर्म और मान्यता से जोड़कर ही किए जाते हैं।

अगर हम सनातन धर्म के अनुसार देखें, तो यह सत्यापित होता है कि वेद, पुराण, ग्रंथ, इत्यादि के अनुसार उस युग या काल की स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी थी, वे आजाद थीं, उनके अपने सोच-व्यवहार थे, उनका रहन-सहन और पहनावा उनके अपने अनुसार था। सतयुग और त्रेतायुग में स्त्री का अपना एक अलग सम्मानीय स्थान था। द्वापरयुग से स्त्रियों की स्थिति निम्न होती गई और मध्यकाल आते-आते स्त्री पूरी तरह से पुरुष की गुलाम बन गई।

उपनिषद काल में पुरुषों के साथ स्त्रियों को भी शिक्षित किया जाता था। लव-कुश के साथ आत्रेयी पढ़ती थीय यानी उस युग में भी सहशिक्षा थी। दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, काली, पार्वती, सीता, उर्मिला, कौशल्या, कैकेयी, कुंती, द्रौपदी, गांधारी, राधा, रुक्मिणी, अदिति,शची, गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, अपाला, आदि सभी अपने-अपने विचारों, कर्तव्यों और कार्यों के लिए स्मरणीय मानी गई हैं। अगर इन युगों को हम काल्पनिक भी माने, तो ऐसी कल्पना करने वालों ने स्त्रियों के लिए बहुत मजबूत चरित्र का निर्माण किया है। इसके लेखन-काल के समय स्त्रियों की दशा क्या थी, यह भी पता चलता है। अगर हम कलयुग में देखें तो हमारे इतिहास में ऐसी अनेक विदुषी और वीरांगना स्त्रियों की गाथा मिलती है जो पुरुष से जरा भी कम न थीं।

युग में स्त्रियों का अपना अस्तित्व था। शक्ति, शिक्षा, सम्पदा के लिए देवी को ही आराध्य माना गया। किसी भी युग

में न सिन्दूर की प्रथा थी, न अपने शरीर को लेकर लज्जा की कोई बात, न गहना-जेवर पर स्त्रियों का एकछत्र अधिकार, न कन्या-वध, न दहेज हत्या, न पर्दा प्रथा, न नाम परिवर्तन। निःसंदेह मुगल शासन के समय इन कुप्रथाओं की शुरुआत हुई, क्योंकि उस समय की यही माँग थी। उस काल में सिन्दूर, घूँघट, बाल-विवाह इत्यादि का चलन स्त्रियों की सुरक्षा के कारण शुरू हुआ, जो बाद में प्रथा और परम्परा का रूप ले लिया।

अब जब भारत आजाद है, तब इन कुप्रथाओं को ढोने का कोई सटीक तर्क नहीं मिलता, सिवा इसके कि समाज द्वारा यह स्त्रियों के लिए नैतिक माना गया है। इन कुप्रथाओं से स्त्री के चरित्र और नैतिकता को आँकना न सिर्फ गलत है बल्कि अनैतिक भी है। ऐसा नहीं कि स्त्रियों का अपना कोई सोच नहीं है, लेकिन ज़्यादातर ऐसा देखने में आता है कि पुरुष के सोच से प्रभावित होकर ही स्त्रियाँ अपने जीवन की दिशा निर्धारित करती हैं। सिर्फ धार्मिक कार्य करते समय स्त्री को पूरा सम्मान मिलता है।

आज जब बुर्का-हिजाब-नकाब को लेकर विवाद देख रही हूँ तो सचमुच बेहद आश्चर्य हो रहा है। बुर्का या पर्दा से आजादी मिल रही है और स्त्रियाँ खुद इसकी गुलाम रहने को बेकरार हैं। मुस्लिम स्त्रियों के शरीर का ढाँचा अन्य स्त्रियों से अलग तो नहीं, जिसे सबसे छुपाना जरूरी है? बिना नकाब या बुर्का के अगर कोई देख ले तो कौन सा कहर टूट पडेगा? कोई भी स्त्री हो, सभी खूबसूरत होती हैं, नकाब में क्यों छुपाना अपना चेहरा? जिन पुरुषों को स्त्री का चेहरा देखकर ही कामुकता आती हो, तो वैसे पुरुषों से क्या डरना, उनको कानून के हवाले कर देना चाहिए न कि खुद को पर्दा में छुपा लेना चाहिए।

सम्प्रदायों के सैद्धांतिक मत-भिन्नता के विवाद ने फिर से हद को पार किया है, और इस बार स्त्रियों के पहनावा को मुद्दा बनाया गया है। इस विवाद में अब एक नया अध्याय शुरू हुआ है हिजाब-नकाब-बुर्का का। मुझे याद है जब मैं छोटी थी तब मुहर्रम के समय ईरान से कुछ स्त्री-पुरुष मस्जिद में आते थे। वे क्यों आते थे, यह अब तक मुझे मालूम नहीं। जानने की जिज्ञासा भी न हुई कभी। बस इतना याद है कि जो भी बुर्का में होती थी हम उसे ईरानी कहते थे। उन दिनों भारतीय स्त्रियाँ बुर्के में ज़्यादा नहीं दिखती थीं। मेरे कहलेज की कुछ शिक्षक और छात्राओं को बुर्का पहनकर आते देखा, लेकिन वे कहलेज पहुँचकर उतार देती थीं। मैं सोचती थी कि चूँकि वे सुन्दर हैं इसलिए उनके घर से उनपर बुर्का पहनने का दबाव होगा। एक फायदा यह भी है कि छेड़खानी से वे बच जाएँगी। हमारे जमाने में भी छेड़खानी होती थी, लेकिन अभी से जरा कम। मुझे नहीं लगता कि कोई भी लड़की इस छेड़खानी का शिकार होने से बच पाई होगी। अगर घर के बाहर बच गई तो घर में भी पुरुष होते हैं, चाहे रिश्ता कोई भी हो।

मैं हमेशा सोचती थी की छोटी-छोटी लड़कियों को उनके घर से बुर्का से आजाद होने नहीं दिया जाता है। मैं मन में बहुत दुखी रहती थी उनको देखकर। लेकिन अभी जो हिजाब-विवाद हो रहा है, इसे देखकर उन छात्राओं के लिए दुःख हो रहा है, जो अपना वस्त्र दूसरे के मन से धारण करती हैं। हैं। वे अपनी जिन्दगी का कोई भी निर्णय क्या कभी खुद ले पाएँगी? आखिर ऐसी गुलामी उन्हें स्वीकार क्यों है? अब जब मौका है, जरा-सा हिम्मत जुटातीं और खुद ही नकाब से बाहर आ जातीं। पर अब तो राजनीति के हाथों का खेल खुद को बना चुकी हैं। अब खेलो बुर्का-बुर्का, सिन्दूर-बिन्दीय और तमाशा देखेगा आज का तथाकथित धार्मिक समाज।

संविधान हमें अपने पसंद के कपड़े पहनने से नहीं रोक सकता है। परन्तु हिजाब बनाम सिन्दूर-चूड़ी विवाद का कोई औचित्य समझ नहीं आता। जो बुर्का शौक से पहनती हैं, पहनेंय लेकिन स्कूल कहलेज या किसी भी व्यवसाय में अगर ड्रेस कोड है तो उसका तो पालन करना ही होगा। अब इसका तो यही अर्थ हुआ कि कोई बुर्का या घूँघट में रहती है तो स्कूल-कहलेज में पढ़ने जाए तब भी वह घूँघट-बुर्का में रहे। जिसे ऐसे रहना है वह घर में ही बैठें, शिक्षा की क्या जरुरत है। बुर्का और घूँघट में न कोई सुविधापूर्ण तरीके से चल सकती है, न खेल सकती है, न कोई नौकरी कर सकती है। बस बच्चा पैदा करने का काम ही है, जो वे कर सकती हैं। पुलिस, आर्मी, नर्स, वकील आदि नौकरी उनके लिए संभव नहीं, क्योंकि बुर्का पहनकर तो यह सब मुमकिन नहीं। बुर्का खुद को छुपाने का बेहतरीन विकल्प है, परन्तु आज के समय के अनुसार जायज नहीं। न ही सिन्दूर, बिंदी या चूड़ी ही जायज है। जिसे जो शौक हो इस्तेमाल में लाएँ। यह सभी शृंगार प्रसाधन है, जिसे सुन्दर दिखने के लिए उपयोग में लाया जाता है। हिजाब से सिन्दूर-चूड़ी की तुलना अर्थहीन है।

मैं भागलपुर के एक सरकारी गर्ल्स स्कूल जिसका प्रबंधन मिशनरी द्वारा किया जाता था, में पढ़ती थी। हमारे स्कूल में कक्षा ८ तक सभी को सफेद शर्ट, नीला स्कर्ट, नीला फीता, काला जूता पहनना होता था। ९वीं और १०वीं कक्षा से सभी को सफेद ब्लाऊज और नीले पाड़ की सफेद साड़ी पहनना अनिवार्य था। ब्लाऊज की लम्बाई इतनी हो कि पेट न दिखे। सप्ताह में हमलोगों के नाखून देखे जाते थे कि किसी के नाखून बड़े तो नहीं, नेलपहलिश या मेंहदी तो न लगाया, हाथ में चूड़ी या कड़ा तो न पहना। स्कूल सरकारी था लेकिन मिशनरी का प्रबंधन था। हमारी प्राचार्य मिस सरकार का बहुत सख्त अनुशासन था। स्कूल के किसी भी नियम में जरा-सी भी ढील वे बर्दाश्त नहीं करती थीं। हर दिन पहला एक क्लास बाइबल का होता था, जिसमें हम सभी का जाना अनिवार्य था। उस स्कूल में जिस भी धर्म की छात्रा हो, उसे यह सब नियम मानना ही होता था। अगर किसी को शर्ट-स्कर्ट से समस्या है तो वह उस स्कूल में जाए जहाँ सलवार कमीज पहनावा हो। हर संस्थान के अपने नियम होते हैं, और नामांकन के बाद वहाँ के नियमों का पालन करना बाध्यता है और यही उचित भी है। संस्थान के नियम से अगर आप सहमत नहीं हैं तो आप वहाँ न जाएँ।

मैं सोचती हूँ, खूब सारे सौंदर्य सामग्री का इस्तेमाल कर बुर्का पहन लिया तो क्या फायदा? हिजाब में कम-से-कम चेहरा तो दिखता है, पर फैशन के अनुरूप वस्त्र धारण करने का क्या फायदा? बुर्का बिरादरी से बाहर निकल हिजाब को तिलांजलि देकर एक आम

स्त्री का जीवन जीना खुद स्त्रियों को अच्छा लगना चाहिए। इसके लिए दुनिया की सभी स्त्रियों को एक साथ मिलकर आगे बढ़ना होगा। क्यों पुरुषों की गुलामी सही जाए? क्यों खुद को नकाब में रखें? दुनिया का कोई भी पुरुष बुर्का या नकाब नहीं पहनता, तो स्त्रियाँ क्यों पहनें? अपने पसंद के अनुरूप परिधान धारण करना हमारी स्वतंत्रता है और यह स्वतंत्रता भारत में रहने वाले सभी लोगों के लिए है। लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि संस्थान के नियम के विरुद्ध जाएँ।

जहाँ तक मुझे लगता है कि मन की कट्टरता ने हिजाब बुर्का या घूँघट को अपनाए रखने के लिए विवश किया हुआ है। इस विवाद में पुरुष पड़े हैं, और वह भी बुर्का के पक्ष-विपक्ष में, यह समझ से परे हैय क्योंकि यह मसला स्त्रियों का है। बुर्का के विरोध में बोलना जरूरी है न कि बदले में भगवा चादर लेना। मुझे तो यह निहायत मूर्खता वाली बात लगती है। यह समय है जब पुरुषों को आगे बढ़कर इन कुप्रथाओं के खिलाफ स्त्रियों का साथ देना चाहिए।

यह सही है कि लीक से हटकर जिन स्त्रियों ने जीना शुरू किया उन्हें समाज का तिरस्कार और आक्षेप सहना पड़ता है। फिर भी यह ज़्यादा सही है बनिस्पत रूढ़ियों से जकड़े हुए कठपुतली की तरह दूसरों के इशारे पर जीवन जीते जाएँ। मेरे विचार से पुरुष-वर्ग को आगे आना होगा, अपने घर की स्त्रियों को बुर्का या घूँघट से बाहर आने की हिचक को तोड़ने के लिए। एक तरफ जब हम वैश्वीकरण की बात करते हैं, विकास की बात करते हैं, दूसरे ग्रह पर जाने की बात करते हैं तो दूसरी तरफ धर्म-जाति के लफड़े के बाद अब व्यक्तिगत पहनावा पर राजनीति कर रहे हैं। आशचर्यचकित हूँ, बुर्का या हिजाब के पक्ष में स्त्रियाँ कैसे हैं? प्रगति और विकास की बात कोई क्या करेगा, जब किसी का सोच पहनावे में उलझ जाए।

महिला दिवस पर मेरी तो यही कामना और शुभकामना है कि पूरी दुनिया की स्त्री खुद के मन से जीवन जीएँ, अपने पसंद के अनुसार नैतिक रूप से जो सही हो वह करें। मैं तो चाहती हूँ कि "दुनिया की महिलाएँ एक हों" की जगह अब यह कहा जाए- "दुनिया के इंसानों एक हों!"

- **डॉ. जेन्नी शबनम**

ऐसा मेरा गाँव

प्रकृति जहाँ पर रूप सँवारे,
ऐसा मेरा गाँव ।

खेत जहाँ पर हरे-भरे हैं,
हरदम लहराते ।
जिन्हें देख कर सब किसान जन,
मन में हर्षाते ।
नव जीवन देती है सबको,
सघन पेड़ की छाँव ।

सुबह-सुबह ही पूर्व दिशा में,
छा जाती लाली ।
और झूमती पुरवाई भी,
शीतल मतवाली ।
खग कलरव मधुमय रस घोले,
और काग की काँव ।

नदिया की निर्मलतम धारा,
कल-कल बहती है ।
चलते रहना ही जीवन है,
मानो कहती है ।
और धार से लड़ती-भिड़ती,
इक छोटी सी नाव ।
प्रकृति जहाँ पर रूप सँवारे,
ऐसा मेरा गाँव ।।

- **श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'**
अशोक उ०मा०विद्यालय, लहार
भिण्ड, (म०प्र०)

गजल

प्यार से बुलाते हैं।
प्यार ही सिखाते हैं।

जो मिलें दबे कुचले,
हम गले लगाते हैं।

हैं दलित भी मानवही,
क्यूँ इन्हें भगाते हैं।

जो मिले गरीबी में,
साथ मिलके खाते हैं।

झिड़कियाँ नहीं देते,
साथ में बिठाते हैं।

दूरियाँ नहीं रखते,
दिलसेदिल मिलाते हैं।

मान जो नहीं पाते,
मान हम दिलाते हैं।

२

देश की हालत संभलनी चाहिए।
बद तरीं सूरत बदलनी चाहिए।

अब सियासतदानकी हरकत कोई,
आम जनता को न खलनी चाहिए।

जिस पे राजी हो सके दोनों फरीक,
राह कुछ ऐसी निकलनी चाहिए।

माफिया के राज का हो खात्मा,
दाल उनकी अब न गलनी चाहिए।

जीतनी बाजी अगर शतरंज की,
सोच कर हर चाल चलनी चाहिए।

हमीद कानपुरी
अब्दुल हमीद इदरीसी,
१७६, मीरपुर, कैण्ट,
कानपुर-२०८००४

जब भी तिरंगा लहराया है

"जब भी तिरंगा लहराया है
एक नई उड़ान फिर लाया है
कुछ भी कह लो कुछ भी कर लो
काम यही तो आया है ।।
जब पड़ी मुसीबत दिखा दिया
औरों को भी सिखा दिया
न धर्म पूछा न रंग दिखा
बस भारतीय थे यही दिखा ।।
आँसू पोंछे उन माँओं के
जिन्हें आस नहीं थी बाकी अब
हर पल हर क्षण बढ़ता उनको
चारों ओर से काल दिखा ।।
युद्ध नहीं है चिंता का हल
मत दिखलाओ कमजोरों पर बल
अंत सभी का एक ही है
मृत्यु का भय चहुँओर दिखा ।।
शव पूछ रहे हैं अब तुमसे
और कितने घरों को लूटोगे
सर्वस्व छीन कर लाशों का
क्या महल बनाने आया है ।।
उड़ती मिट्टी ये कहती है
न घमंड दिखा झूठे बल पर
तूने अपना क्या पाया है
अरे! नश्वर तेरी काया है ।।
जब भी तिरंगा लहराया है
एक नई उड़ान फिर लाया है
कुछ भी कह लो कुछ भी कर लो
काम यही तो आया है ।। "
जय हिंद, जय भारत

डॉ मीनू 'मानसी'
कवयित्री, लेखिका एवं पूर्व हिंदी प्रवक्ता
दोहा - कतर

वह दौर

वह दौर पुराना परिवारों का, जब बुआ फूफा घर पर आते थे,
गली मोहल्ले सारे गाँव में, घर खुशियों से तब भर जाते थे।
हर घर से दावत का न्योता, फूफा का आया करता था,
फूफा सब बच्चों के होते, मेहमान गाँव के कहलाते थे।
सारे गाँव से रिश्ते जुड़ते, बनते ताऊ चाचा बाबा भाई,
माँ के गाँव से कोई होता, सब मामा नाना बन जाते थे।
ऊँच नीच और जाति धर्म का, रिश्तों में अवरोध न था,
बूढ़े तो बाबा होते थे, बाकी ताऊ चाचा कहलाते थे।
बाबा जब भी घर आते थे, बाहर से आवाज लगाते,
बहुएँ घूँघट कर लेती, छोटे दौड़ कर आया करते थे।
कोई पानी लेकर आता, बाबा के पैर हाथ धुलवाता,
बहुएँ खाने की थाली लाती, बच्चे खाना खिलवाते थे।
खाना खाकर बाबाजी, खटिया पर लेटा करते थे,
सोनू मोनू से बातें करते, कस्सिे बतलाया करते थे।
दरवाजे के पीछे से भाभी, घर का सामान बताती थी,
शाम ढले सारा सामान, बाबा बच्चों से ही भिजवाते थे।
खाट बिछी बाबा की आँगन, आसपास सब होते थे,
गली मोहल्ले सारे गाँव के, झगड़े निपटाया करते थे।
बहन बेटियाँ सारे गाँव की, सबकी साझा होती थी,
उनके गाँव कभी गये तो, मान सम्मान जताया करते थे।
ताऊ जी का काम अधिकतर, खेतों की रखवाली था,
हम बच्चे भी प्रतिदिन ही, खेतों पर जाया करते थे।
रोज रहट पर पशु नहलाते, खुद भी नहाया करते थे,
माँ जो रोटी भेजा करती, संग बैठकर खाया करते थे।
वह रोटी साग का स्वाद पुराना, मट्ठे संग गुड़ का खाना,
साझे रिश्ते साझी संस्कृति, मुझको बहुत ही भाते थे।
बदल गया वह दौर पुराना, अब अपने ही रूठे रहते हैं,
गली मोहल्ले गाँव की क्या, निज में सब सिमटे रहते हैं।

- **कीर्ति वर्द्धन**

५३ महालक्ष्मी एनक्लेव
मुजफ्फरनगर २५१००१ उ प्र

तीन कविता...

कभी देखा ... (१)

देखा है कभी
पेड़ों को रोते हुए
हाँ, मैंने देखा है
शीत-ऋतु में
उनकी पत्तों की आँखों से
आँसुओं को टपकते हुये
जिसे सब ओस का टपकना कहते

पेड़ हँसते भी हैं
जब आती पावस
और नहलाती उन्हें
हवा संग निर्मल बूंदों से
तो लुक लुक जाती
उनकी शाखाएँ पत्तों के संग
जैसे बल पड़ जाते पेट में
हँसते समय आदमी के

प्रभात की क्या बात... (२)

प्रभात की क्या बात
रीत गयी रात
तम को प्रकाश ने
दे दी है मात
प्रकृति को मिली है
फूलों की सौगात
उड़े पंछियों की
नभ में जमात
गैया चाट रही
बछड़े का गात
राहों में आवाजाही
की हो गयी शुरुआत
बिखरा सिंदुरी रंग
पूरव की ओर
पेड़ों के झुरमुट में
चिड़ियों का शोर
सतरंगी किरणें
पड़ रही हर पात
हो गयी शुभ शुभ
दिन की शुरुआत
प्रभात की क्या बात
रीत गयी रात

चाँद आवारा हो गया है... (३)

चाँद आवारा हो गया है
रात सकते में है इससे ।
कभी देर से आता
कभी जल्दी चला जाता
घटते-बढ़ते रहते उसके तेवर
अमावस की रात ना जाने, कहाँ खो गया है
चाँद आवारा हो गया है ।
पूर्णिमा को सजता-सँवरता
निशा की कालिमा हरता
घटाओं संग करें अठखेलियां
छुपता कभी पीछे, फिर प्रकट हो गया है
चाँद आवारा हो गया है ।
ग्रहण से जो बेखबर
कब खत्म हो जाये असर
सुधर पायें पर ना सुधरें, ये इसको क्या हो गया है
चाँद आवारा हो गया है ।

- **व्यग्र पाण्डे**
(राजस्थान, भारत)

रिस्तों की खोज मे

व्यथित खोज मे
निकाला असमय
निपट अकेला
भावशून्य सा
क्षितिज झाँकता ।

चलता रहा
बिन मंजिल के
पता नहीं था
पहले पल से
रहा ताकता ।

अपलक आंखे
स्वप्नहीन
नीरव रातें
डर को छोड़ कहीं पीछे ही
रहा काँपता ।

सोच नहीं कुछ
ढूंढ रहा बस
रिस्तों की डोर
पा न सका कुछ
बस रहा हाँफता ।

हार न मानी
अब तक भी
उम्मीद लिए
बस चलता जाता
पथरीली राह नापता ।

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
वेव सम्पादक
हिन्दी की गूँज

डाइवर्सीफिकेशन

‘ये तो मेनेजमेंट के दबाव के कारण लोकल ब्रांच मेनेजर को स्पीकर के रुप में रखना पड रहा है। वरना डाइवर्सीफिकेशन स्ट्रेटेजी में इस छोटे से गाँव के मेनेजर को तो क्या पता चलेगा?’ बम्बई से आये हुए रिजीयोनल मेनेजर मिश्रा ने तनिक धिक्कार से सेमिनार के एजन्डा की ओर दृष्टि डाली और कहा--- मनमोहक समुद्र तट पर स्थित रिसोर्ट में दो दिन का फायनान्सियल सेमिनार था। रिटायरमेंट तक पहुँचे बहुत से संपन्न लोग तगडी फीस भरकर भी आए थे।

‘म्युच्युअल फंड्स, बॉन्ड्स के बारे में होमवर्क तो किया है न?’ आपके गाँव में तो ऐसी पब्लिक शायद पहली बार आयी होगी, हमारी बेंक की नाक न कट जाए, अगर पता न चले तो कह दीजिए, आइ विल मेनेज बाय मायसेल्फ...’ मिश्राजी ने लोकल मेनेजर अरजण को सावधान किया।

सेमिनार में अरजण को बोलना था, तब वह हॉल से बाहर जाकर एक वृद्ध स्त्री का हाथ पकड़ कर स्टेज पर ले आए और उनके चरण स्पर्श करके कुरसी पर बिठाया। ‘ ये हमारे गाँव के काशीबा है। मैं तो मछवारे का बेटा हूँ और शायद आज भी मछली पकड़ने का काम ही कर रहा होता।। पर मैं जब छोटा था तब इस समुद्र के तूफान ने गाँव के कई मछवारे को ग्रस लिया था। काशीबा के घर से पति एवं दोनों बेटे उसकी भेंट चढ़ गये। प्रति मृतक सरकार ने पांच लाख की सहाय भी की। काशीबा को मिले पंदरह लाख। तब काशीबा ने गाँव की बस्ती को इकठ्ठा करके एलान किया कि -घर के सारे पुरूष मछवारे नहीं होने चाहिए। उसी दिन से प्रत्येक घर से कम से कम एक बच्चा तो शहर जाकर पढ़ाई करता है, जिसके खर्च का वहन काशीबा करती है, ताकि भविष्य में यदि तूफान आया तो कोई भी घर पुरूष एवं आय के बगैर न रहे। डाइवर्सीफिकेशन का इससे अधिक महत्व शायद पावर पोइन्ट की कोइ स्लाइड नहीं समझा पाएंगी।’

वाकई में अरजण की स्पीच पूरी हुई तब तक डाइवर्सीफिकेशन स्ट्रेटेजी, हलुए के कोर की भाँति बम्बई से आनेवाली क्रीम पब्लिक को हलक से उतर गई थी।

- **डॉ.नयना डेलीवाला**

अहमदाबाद

कमाऊ माँ

सुबह की सैर करते वक्त नजर फुटपाथ के किनारे बैठी एक बुजुर्ग महिला और उसका मुँह धुलाकर, उसके कपड़े ठीक करते एक युवा जोड़े पर पड़ी, जो संभवत उसके पुत्र और पुत्रवधू थे। मैंने देखा, उसकी बहू बड़े जतन से एक प्लेट में डालकर उसे चाय पिला रही है, तो बेटा उसके बैठने की व्यवस्था कर रहा है, कुछ रुपये जेब में रखकर खुल्ले पैसे एक प्लेट में माँ के पास रख दिए हैं। देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि फुटपाथ पर रहकर भी इनके संस्कार अनुसरण योग्य हैं। सैर से लौटते समय उत्सुकतावश निगाह उस ओर उठी तो देखा, बुढ़िया के सामने कटोरे में वही खुल्ले पैसे रखे हैं, आते-जाते लोग कुछ और डाल जाते। बेटा-बहू थोड़ी ही दूरी पर बीड़ी के कश मारते हुए समोसे खा रहे हैं। कमाऊ माँ की इस अनूठी मातृसेवा से अवाक मन खिन्न हो घर की ओर बढ़ गया।

डॉ. अन्नपूर्णा सिसोदिया
लेखिका /कवयित्री
अशोकनगर (म.प्र.)

नेकी का फल

ऑफिस का मीटिंग तो रात १०:०० बजे ही खत्म हो गया था। ऑफिस से निकलते हुए रवि ने रागिनी को फोन कर के बताया कि वो थोड़ी ही देर में घर पहुँच रहा है।लेकिन रात के १२:०० बज गये रवि अभी तक घर नहीं पहुँचे। रागिनी परेशान हो बरामदे में चहलकदमी कर रही है। कई बार रवि को फोन लगा चुकी है लेकिन रवि का फोन पहुँच से बाहर बता रहा है। रागिनी अपने रिश्तेदारों एवं रवि के कई दोस्तों को भी फोन कर चुकी है,पर रवि के बारे में कहीं से कोई जानकारी नहीं मिली। अंधेरा बढ़ता जा रहा है। सर्द भरी राते रागिनी का मन बहुत घबरा रहा है कहीं कोई........ नहीं- नहीं ऐसा नहीं हो सकता रवि को कुछ नहीं हो सकता । रागिनी अपने मन को समझाती है। अब तो रात के १:०० बज चुके हैं ।रागिनी पूजा घर में भगवान के आगे हाथ जोड़ विनती कर रही है, हे प्रभु अपनी कृपा बनाए रखना, रवि जहाँ भी हो सुरक्षित हो।रागिनी का हृदय बैठा जा रहा है, तभी दरवाजे पर दस्तक होती है और रागिनी दौड़ कर दरवाजा खोलती है। लेकिन दरवाजा पर रवि नहीं बल्कि कोई अंजान व्यक्ति हाथ में आई कार्ड लिए रागिनी को दिखाते हुए पूछता है। मैडम आप इन्हें जानती हैं? हाँ - हाँ ये तो मेरे पति रवि हैं, पर ये कहाँ हैं? मैडम यहीं पास के नर्सिंग होम में भर्ती हैं, आप जल्दी चलिए। रागिनी उस व्यक्ति के साथ नर्सिंग होम पहुँचती है। डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर से बाहर निकलते हुए कहता है चिंता की कोई बात नहीं अब रवि जी ठीक हैं। रागिनी पूछती है डॉक्टर साहेब रवि को क्या हुआ और वे यहाँ कैसे आए? तभी हाथ में दवाईयों की पोटली लिए घनश्याम आता है। यह वही मेहनतकश गरीब घनश्याम है –

जो अपनी जमीन के छोटे टुकड़े में अनाज उपजाता है और उसे बोरे में बांधकर अपने कंधे पर रख गाँवों की कच्ची सड़कों से होते हुए शहर में मंडी तक जाता है। बोझा ढोते-ढोते उसके पीठ में कुबड़ निकल आया था। रागिनी अपने पति से कहकर घनश्याम के लिए एक ठेलागाड़ी का प्रबंध करा दी थी। आज जब रवि ऑफिस से घर आने के लिए निकला तभी उसका एक्सीडेंट हो गया। सड़क पर वह जख्मी हालत में खून से लथपथ बेहोश पड़ा था। तभी घनश्याम अपने ठेलागाड़ी से वापस घर जा रहा था। रवि बाबू को सड़क पर इस तरह जख्मी हालत में देख घनश्याम उन्हें जल्दी से अपने ठेलागाड़ी पर लिटाकर अस्पताल ले आया। डॉक्टर ने बताया अगर सही समय पर रवि का इलाज नहीं होता तो शायद रवि का बचना मुश्किल था ।

कुमकुम कुमारी 'काव्याकृति'
मुंगेर, बिहार

प्रतीक्षा

बहुत बार हम एक ही परिस्थिति से बार-बार गुजरने पर भी हम उसके अभ्यस्त नहीं हैं। प्रतीक्षा करना एक आदत सी बन जाती है जो कहीं ना कहीं एक समस्या भी बन जाती है। एक और समस्या तो दूसरी और उसकी आदत जिसमें वह निरंतर प्रतीक्षा करना और यह प्रतीक्षा कहीं न कहीं मन में तनाव पैदा करती है जहां हर एक फोन की घंटी बजने पर लगता है कि ये वही फोन है जिसका हमें बेसब्री से प्रतीक्षा थी। जब समय बीतता जाता है फोन और मैसेज नहीं आते तो बेबस होकर बिस्तर पर जाकर अपना मुंह छुपा कर लेट जाती है ऐसे प्रतीत होता है जैसे स्वयं से अपने को छुपा रही हैं कोई भी काम किया जाए लेकिन मन तो उसका फोन की घंटी पर ही लगा रहता है।

जब नीता का मन ठीक नहीं होता और वह अकेली होती है तो अपनी सहेली नीलम से कहती है कि तुम कहीं भी जाओ देखो जल्दी आना मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूंगी। नीलम अपने दोस्त के साथ बाहर चली जाती है और नीता उसे स्तब्ध देखती है उसे व उसके दोस्त अरुण को जाते हुए।

अरुण ने हाथ हिलाकर नीता से बाय कहा और नीलम व अरुण साथ-साथ चल दिए तभी नीता उन्हें मुग्धज भाव से देखती रही और खुले दरवाजे को खटके से बंद किया।

अरुण कुछ दिनों के लिए कलकत्ता आया हुआ था अपने काम से नीलम और अरुण की पहचान बहुत पुरानी थी जब भी अरुण कलकत्ता आता नीलम से आकर जरूर मिलता उनके जाते ही नीता अपने विचारों में गुम हो जाती और उसकी प्रतीक्षा शुरू हो जाती है। उसे ऐसे लगने लगता है जैसे यह क्रम वर्षों से चल रहा हो नीता के सामने अरुण बहुत खुल जाता नीलम के पास बैठना और उससे हंस-हंस कर बात करना लेकिन नीता को कभी पसंद नहीं भी आता तो वह कोई सवाल नहीं उठाती नीलम देर से उठती गुनगुनाते हुए तो नीता को लगने लगता है जैसे सारी फिल्म हिंदी-अंग्रेजी इसी ने देख ली हों।

नीता को अपने दिनों की याद आ गई जब वह भी किसी के साथ बहुत खुश रहती थी हंसती मुस्कुराती थी लेकिन एक दिन उसके बाबूजी को पता चल गया तो उन्होंने नरेन्द्र को बहुत अपमानित कर घर से निकाल दिया और नीता तभी से अकेले और उदास सी रहने लगी लेकिन जाते वक्त नरेंद्र ने नीता से कहा मैं तुमसे मिलने जरूर आऊंगा नीता को रोज ही उसके फोन का इंतजार रहने लगा। नीता, नीलम और अरुण को देखती तो कहीं अवसाद बढ़ सा जाता और कहीं-कहीं अपनी असमर्थता का, हीनता का बोध भी उसके मन में घर करता है।

नीता के पिता नीता की शादी करने की जब बात करते हैं तो वह कहती है मुझे अभी अपनी पढ़ाई पूरी करनी है और वह अपनी पढ़ाई पूरी करते हुए कहलेज में नौकरी करने लगी और उसके पिता का घर छूट गया जहां उसे रोज-रोज अपमानित होना पड़ता था। अब उसकी वह स्थिति नहीं थी वह अलग कलकत्ता में रह रही थी उसके पास उसकी सहेली नीलम थी दोनों का समय बहुत अच्छे से व्यतीत होता था नीता बड़ी थी, जिससे उसे नीलम की बहुत चिंता रहती नीलम को वह अपनी छोटी बहन, बेटी की तरह ही प्यार करने लगी। जब नीलम के पास अरुण आ जाता तो वह भी प्रसन्न हो जाती क्योंकि अरुण की शादी हो गई थी तब भी वह नीलम से मिलता, नीता के यहां काम करने वाली बाई पूछती ये आदमी कौन है? नीता कहती कौन ये उसका आदमी है उसे मनाने आया है। उसने काम करने वाली बाई से कह तो दिया लेकिन उसे डर लगा रहता हमेशा ही क्योंकि नीता और नीलम इतने बड़े-बड़े शहरों में दोनों अकेली रहती थी।

नीता बहुत ही सादगी से रहती वहीं नीलम बड़े साज श्रृंगार के साथ रहती नीलम कभी-कभी कहने लगती लिपस्टिक हल्का जूड़ा बना लिया करो जैसे वह सुनकर अनसुना कर देती। नीलम डांस करती वह उसे देखती रहती कि उसके कितने सपने हैं उसके जीवन के लेकिन नीता परेशान होती कभी-कभी उसे अरुण की उपस्थिति असहाय लगने लगती थी।

नीता सोचती क्या नीलम और अरुण की शादी हो जाएगी? अरुण नीलम से शादी कर लेगा तब उसका क्या होगा क्योंकि वह अपना जीवन तो नीलम के साथ ही देखने लगी थी उसे कभी-कभी अरुण का आना खटकने लगता है एक दिन नीलम और नीता के बीच में कहा सुनी हो गई तो नीलम ने कहा ठीक है मैं दूसरा घर देख लूंगी नीता को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ नीलम स्वतंत्र विचार वालों थी क्योंकि बचपन से ही वह अकेली थी उसके

उसके जीवन में अरूण आया और वह अरूण से प्यार तो करती लेकिन वह अपने और दोस्तों के साथ भी घूमती फिरती थी सुबह जब नीता अपने कहलेज चली गई तो नीलम ने एक पर्ची लिखी और घर छोड़ दिया वह कहां जाकर रह रही है वहां का पता लिखकर दरवाजे के भीतर छोड़ दी की जैसे ही नीता दरवाजा खोले उसे मिल जाये। नीता ने तो इसकी कल्पना भी नहीं की थी नीता जिस ऑटो से आई थी उस ऑटो वाले को रोककर जो पता लिखा था वहां पहुंच गई दरवाजा खटखटाया दरवाजा खुला उसने नीलम का सामान अहटो वाले से कहा अहटो में रखो और नीलम का हाथ पकड़ा और नीलम को वापस ले आई। रास्ते भर दोनों में आपस में कोई बात नहीं की। नीता ने उस दिन घर में खाना नहीं बनाया खाना होटल से मंगा लिया उसने अपने हाथों से नीलम को खाना खिलाया तो नीलम फूट-फूट कर रोने लगी और नीता भी रोने लगी किसी तरह दोनों ने खाना खाया। नीता बच्चों की तरह नीलम को प्यार करने लगी।

नीता की तो जैसे जिंदगी ही नीलम बन गई थी दोनों ने घूमने का प्रोग्राम बनाया एक हफ्ते का अवकाश लेकर नीता और नीलम कश्मीर की सैर करने चले गए दोनों कश्मीर की वादियों में खो गये तभी नीलम नीता से पूछती है आपने किसी से प्यार नहीं किया आपको तो अरुण के बारे में मालूम है वह कहीं पर भी रहे वह हमारा प्यार है। लेकिन आपने कभी नहीं बताया कि आपने किसी से प्यार किया तो आपने शादी क्यों नहीं की?

नीता ने कहा हां जब मैं कहलेज में पढ़ रही थी तब लेकिन मेरे पिताजी ने उसे बहुत अपमानित करके घर से निकाल दिया तो मैंने अपनी पढ़ाई पूरी करके नौकरी करने लगी और अपना ट्रांसफर यहां ले लिया उसने कहा था कि वह जरूर आएगा आज भी इतना कहकर वह चुप हो गई और खिड़कियों से बाहर देखने लगी एक स्तब्ध मौन सी जैसे वह पचास वर्ष की हो गई हो लेकिन आज भी उसे उसके आने की प्रतीक्षा हो।

■■

डॉ. ऊषा अग्रवाल
प्राध्यापक (समाजशास्त्र।)
महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड
विश्वदविद्यालय छतरपुर
(मध्य प्रदेश)

किलकारियाँ

धीरे धीरे पाँच साल का समय निकल गया।अब तो सभी को बहुत चिंता होने लगी।एक से बढ़कर एक डॉक्टर के पास जाने लगे। पैसे की कमी थी नहीं , पैसा पानी की तरह बहाया जाने लगा।बहुत प्रयत्न करने के बाद भी जब कोई परिणाम नहीं निकला तो परिवार में सभी बहुत दुखी रहने लगे।नैना भी बहुत ही उदास रहने लगी।

मंजुला नैना को बहुत प्यार करती थी मंजुला से भी नैना की उदासी देखी नहीं जाती थी।दुख तो दीपक को भी बहुत था पर फिर भी वो नैना को समझाता था नैना इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है ईश्वर चाहेगा तो जरूर हमारे घर में खुशियां आएंगी।

पूजा पाठ, दान दक्षिणा किसी भी बात में किसी किस्म की कमी नहीं बरती गई ।जिसने जो भी बताया वह सब किया गया लेकिन परिणाम फिर भी कुछ न मिला। निराशा ही निराशा।

एक दिन बहुत साहस करके नैना ने मंजुला से कहा मम्मी मैं आपसे एक बात करना चाहती हूँ आशा है आप बुरा नहीं मानेगी।

नहीं नहीं बुरा नहीं मानूँगी , आखिर तुम मेरी बेटी हो मैं भला तुम्हारी बात का बुरा मानूंगी।मैं जानती नहीं कि तुम कितनी दुखी हो , बेटे इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है।मुझे पूरा विश्वास है कि हम सब मिलकर कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे और हमारे आंगन में किलकारियां जरूर गूंजेंगी।

हाँ हाँ बेटी बोलो बेफिक्र होकर बोलो,मैं तुम्हारी माँ हूँ मैं तुम्हारे दुख को अच्छी तरह समझती हूँ।मंजू ने नैना को ढाढस देते हुए कहा।

इससे पहले कि नैना कुछ कहती नैना की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। अपने को बहुत संयत कर नैना ने फिर कहना शुरू किया।

मम्मी मैं चाहती हूँ कि आप दीपक की दूसरी शादी कर दें और मैं अपनी माँ के पास वापस चली जाऊँगी। मुझसे आप सब का दुख देखा नहीं जाता। आप सब ने मुझे इतना अधिक प्यार दिया है कि अब मैं आपका दुख और नहीं सहन कर पाऊंगी।मम्मी मुझे मेरे निर्णय के लिए आप क्षमा कीजियेगा।मैं आपकी बेटी हूँ , मैं आपकी आँखों से दूर नहीं जाना चाहती हूँ पर विवश हूँ, नैना ने कहा।

नैना की ऐसी बात सुनकर मंजुला की भी रुलाई फूट पड़ी और दोनों सास बहू बहुत देर तक एक दूसरे से गले लगकर रोती रहीं।

नैना ने दीपक को भी अपना फैसला सुनाया और उसको समझाने की बहुत कोशिश की।दीपक नैना की यह बात सुन कर अचम्भे में आ गया।

नहीं नहीं नैना ऐसा कैसे हो सकता है तुम ऐसा सोच भी कैसे सकती हो।मम्मी पापा तुम्हें कितना प्यार करते हैं और तुम तो जानती हो नैना मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह सकता और दीपक ने प्यार से नैना को अपनी बाँहों में भींच लिया।प्यार से नैना को और करीब लाते हुए दीपक ने नैना से कहा कि तुम मुझसे वादा करो आगे से तुम ऐसी बात कभी अपनी जबान पर नहीं लाओगी और नैना अब तुम अपने आँसू पोंछो। मैं तुम्हारी आँखों में आँसू नहीं देखना चाहता, चलो अब मेरी कसम खाओ तुम कभी ये बात नहीं कहोगी।हम , तुम और मम्मी पापा मिलकर जरूर कोई न कोई उपाय ढूँढ लेंगे।तुम मत घबराओ , तुम चिंता मत करो , तुम अकेली नहीं हो।हम सब तुम्हारे साथ हैं , हम सब तुम्हें बहुत प्यार करते हैं , कहकर दीपक की आँखों से टपकते अश्रु नैना के गाल भिगोने लगे।

प्रदीप भी ऑफिस से आ चुके थे और जब मंजुला ने प्रदीप को नैना के निर्णय के बारे में बताया तो प्रदीप भी बहुत दुखी हुए।अरे वाह ऐसे कैसे हो सकता है। हमारी नैना हमारे परिवार का हिस्सा है। करना तो दूर,हम ऐसा सोच भी नहीं सकते।

चलो चाय का समय हो रहा है मंजुला दोनों बच्चों को नीचे बुलाओ।हम बैठकर सब चाय पीएंगे और हँसी खुशी इसका कोई न कोई उपाय निकालने का प्रयत्न करेंगे।

मंजुला ने एक बच्चे को अपनाने की बात कही तो दीपक सहित सभी की आँखों में चमक आ गई और घर भर में खुशियों की लहर दौड़ गई।बस फिर क्या था आनन फानन में सब कागजी कार्यवाही, ‘किलकारी अँगना’ की पूरी कर दी गईं।

पूरा ही परिवार बड़ी ही बेसब्री से उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा जब किलकारी अँगना की किलकारियों से उनके घर में भी किलकारियाँ गूँजेंगी।

समय को तो जैसे पंख ही लग गए और निश्चित तिथि पर दोनों पति पत्नी ‘किलकारी अँगना’ में जाकर एक साथ जन्मी जुड़वाँ बच्चियों को लेकर सहर्ष घर पहुँचे।

मंजुला और प्रदीप की प्रसन्नता का पारावार न था। द्वार पर ही आरता सजाए, पलक पाँवड़े बिछाए खड़े थे।शंख ध्वनि के साथ दोनों नन्हीं सुकुमारी, कोमलांगिनी बच्चियों को रोली चन्दन का टीका लगाकर।नए चन्दन के पालनों में दोनों को लिटाकर झूला झुलाने लगे। नैना दीपक के साथ मंजुला और प्रदीप भी मन ही मन यह सोचकर हर्षित थे कि अब वह दिन दूर नहीं जब उनके अँगना में भी किलकारियाँ गूँजेंगीं।

■■

प्रो. नीलू गुप्ता विद्यालंकार
कैलिफोर्निया (अमेरिका)

अनुभव की कुर्सी

“कैसे कर लेती हो इतना सब?”
कभी बच्चो के संग बच्ची बन जाती हो,
कभी बूढ़े लोगो के संग गूढ़ बातें,
और कभी युवा बच्चे की बातों में ऐसे उत्साहित होकर रच बस जाती हो..जैसे लगता है की उनकी दोस्त ही हो...!
और तो और कभी लगता है की ध्यान में बैठकर प्रवचन दे रही हो. ...और... और कहीं कहीं तो एकदम खड़ूस..! बहुत कड़ी लगती हो जैसे की नियम अधिकारी बन गई हो, इतनी कठोर क्यों...??
नाटक करती हो ना...?
कलाकार हो भई तुम तो?
क्या है तुम्हारा सच्चा स्वरूप???..... रवीना के इस ताबड़तोड़ सवाल और आशंकित प्रश्न पर मै चौंक गई।
अरे, अरे ..सम्हलने का मौका तो दो.... सिक्सर पर सिक्सर प्रश्न. ..! मैं अचकचाते हुए मुस्करा भी उठी।
अपनी दोस्त (दोस्त..??? शायद....हां,...पड़ोसन हैं पर मैं तो सबको दोस्त ही समझने लगती हूं...!) के मुंह से यह सब बातें सुनकर एक क्षण मैं भी सोच में पड़ गई . .. नाटक..हां नाटक ही तो है ये पूरा जीवन!! कितनी सच्चाई किसको दिखा सकते है? शायद कोई देखना ही न चाहें!!
पर अब अपनी दोस्त है ,तो उनकी उलझन दूर न करूं ऐसा कैसे? नही तो फिर उनका इतना गिनाया हुआ उदाहरण भी झूठा हो जायेगा।
हंसते हुए मै बोली “तुम्हे पता है मेरे पास एक कमाल की कुर्सी है, जब जैसा वक्त होता है , उसी पर बैठ जाती हूं“....!!
“कमाल की कुर्सी, हो गई न शुरू....अब मुझे मत बहकाओ, जानती हूं . ..लेखिका हो, शब्दो से खेलती हो।“ थोड़ा चिढ़ते कुढ़ते रवीना बोली।
“अच्छा पहले यह नींबू पानी का ग्लास लो,थोड़ा पीकर ठंडा हो लो,फिर बताती हूं।“ कुर्सी उसके पास सरकाते हुए मै बैठ गई और बताने का प्रयत्न करने लगी।
“देखो ईश्वर के हिसाब से देखोगी तो यह सब दुनियां नाटक ही लगेगी , और हम सब उनके खिलौने..।“ और सबसे बड़ी बात यह जो जीवन है ना इसमें हम सबने हर एक रोल किया है और हर भूमिका को बड़े करीब से देखा है।“
जैसे.....रवीना का तपाक से जवाब आया।
“अरे भई,बचपन,युवा और अब चालीस पार इतना अनुभव तो हम सबको मिला ही है, हां किसी को पैदल चलकर मिला,किसी को साइकिल पर! किसी को मोटर बाइक पर तो किसी को हवाई जहाज पर”.....!
“फिर शुरू हो गई , इसलिए बोलती हूं ना शब्दो से खेलती हो”..... रवीना मुझे बीच में काटते ही बोल पड़ी।
“हाहहहाह, अच्छा सुनो, अगर बाजार में पैदल चलकर देखोगी तो तुम ज्यादा दुकान देखोगी, साइकिल से निकलोगी तो पैदल से थोड़ा कम, मोटर साइकिल और बस से निकली तो थोड़ा रुकते-रुकते और अगर ट्रैफिक न मिला तो अपने गंतव्य पर जल्दी पहुंच जाओगी.... !
और अगर हवाई जहाज से चली तो अपने जगह से सीधा अपने मंजिल तक।......मैंने हवा में हाथ उड़ाते हुए बताया, ताकि थोड़ा माहौल हास्यप्रद हो जाए। और अपनी बातों को जारी रखते हुए बोली....“जिंदगी भी ठीक ऐसे ही है एक यात्रा....,एक बाजार ....!!और हर किसी ने इसका बेहतरीन अनुभव भी लिया है अपने अपने अंदाज से...लेकिन सबकी सवारी अलग होती है।

और अपनी बातों को और जोर देकर गहराते हुए मै बोली.... “क्योंकि , मैंने अपनी जिंदगी ’पैदल चलकर’ देखी है, तो तुम सबसे थोड़ा लेट पहुंची हूं, पर हर बाजार का , हर यात्रा का, हर पड़ाव का मजा, अनुभव तुम सबसे ज्यादा लिया है। ठोकर भी तुम सबसे ज्यादा खाई हूं,गिरते- पड़ते , सम्हलते मैं भी वही पहुंची जहां तुम सब पहले से खड़ी थी..!“ अपनी बातों को निरंतर जारी रखते हुए मै बोली....

“और यही अनुभव मुझे हर किरदार में ढलने में ज्यादा मदद करती है,बच्चो के साथ मिलना होता है तो उस अनुभव की कुर्सी पर बैठ जाती हूं और बडो के साथ तो उस कुर्सी पर , युवाओं और वृद्धों के लिए भी यही अनुभव वाली कुर्सी की सहायता लेती हूं..!! ऐसे ही मेरे पास बहुत सारी अनुभव की कुर्सी है,और कुछ कुर्सी अभी नहीं है मेरे पास तो उसे लेने के लिए सुनने और सीखने के निरंतर प्रयास में लगी ही हूं। .....थोड़ा हंसते हुए और रवीना के पीठ पर हल्की धौल जमाते हुए मैं अपनी बातों को समाप्त की।

“ चलो,अब बच्चो को लेकर आए, स्कूल बस आती ही होगी“! मैंने छाते को खोलते हुए कहा....हम दोनों देर हुए तो हमारे प्यारे बच्चे धूप में कुम्हला जायेंगे।“

रवीना अब भी मेरे बातों को समझने के कोशिश में लगी थी, मै कितना समझा पाई उसे, पता नही। पर उसका शांत चेहरा देख कर लगा की कुछ तो उसके प्रश्नों का उत्तर शायद उसे मिल ही गया हो।

मोनी विजय

सुननाः एक कला

आज गीता मेरे यहां आई और धम्म से सोफे पर बैठ गई। उसके हाव भाव से वह बेहद गुस्से में लग रही थी। मैंने चुहल की "क्या हुआ? सुबह सुबह इतनी तमतमाई क्यों हो? पति से लड़ाई हुई क्या?" उसने मुझे देखा और सपाट "नहीं" कह कर चुप हो गई। उसने जैसे मुझे देखा था, दोबारा मजाक करने की मेरी हिम्मत ना हुई।

पानी का गिलास उसके आगे करते हुई बोली "सब ठीक है ना? कुछ है जो तुम कहना चाहती हो, बता सकती हो।"

"गीता", मेरी बचपन की सहेली। शुरु से देखा है मैंने उसे, लोग बड़ी ही सहजता से उससे अपने मन की बात कह देते थे, और वो आराम से सुन लेती थी। कभी किसी की बात किसी से ना कहती। एक दो बार मैंने भी पूछा तो वो कुछ ना कुछ कह कर टाल जाती। गुस्सा उसे भी आता था, वह अपनी बात कह देती और बात खत्म हो जाती।

अभी कुछ दिन पहले ही उसने मेरे पास वाले अपार्टमेंट में घर लिया। इस बात से हम दोनों ही खुश थे, कि बचपन की तरह एक बार फिर हम आस पास रह रहे हैं तो एक दूसरे का साथ बना रहेगा।

आज अचानक यूं उसका गुस्सा करना, मतलब कुछ बड़ी बात ही रही होगी। पानी पीकर गीता ने कहा "बैठ यार, कुछ कहना है।" मैंने कहा "बोल, मैं, रुसुन रही हूं"। बस फिर धमाका हुआ।

वो लगभग बिफर पड़ी "अरे यार! एक बात बता, तू मुझे जानती है ना, मैं सबकी सुनती हूं, कभी किसी की बात इधर उधर नहीं की। पर यार कभी कभी बस हो जाता है। कितना सुनूं? किस किसका सुनूं? अरे मैं भी इंसान हूं, मुझे भी चाहिए मैं भी अपनी बात किसी से जा कर कह दूं, उन्मुक्त मन से, बिना सोचे, सब कुछ, इस विश्वास के साथ की, वो बात आगे कहीं नहीं जाएगी। पर नहीं, मुझे वो कान कभी मिले नहीं। ये कैसा न्याय है प्रभु का? मेरे पास तो कोई भी अपना-परायाध अजनबी भी आकर अपने दुःख, परेशानी, अपनी बातें उंडेल कर चले जाते हैं। और मैं? मैं कहां जाऊं? एक ऐसा धैर्य से सुनने वाला मुझे भी मिलना चाहिए। है कि नहीं?"

मैंने सब चुपचाप सुना बिना उसे रोके टोके और हां मैं गर्दन हिला दी। जिस बात से ये बात यहां तक आई वो उसने बता दी। माफ करना, वो मैं ना बता सकूंगी, क्योंकि यही तो चाहिए था। बात साझा जाए पर आगे परोसी ना जाए। जाते वक्त वो सहज थी, शांत थी और मुस्कुराती हुई चली गई।

पीछे छोड़ गई मेरे मन में प्रश्न। सच में सुनना एक कला है। और आजकल ये विरले ही पाई जा रही है। लोगों को कहना है, सुनना किसी को नहीं है, चाहे वो बात हो, कोई सलाह हो, कोई रचना हो या कुछ और। बस इस आपाधापी में, सबको केवल अपनी कहनी है, सबको धीर कान वाले श्रोता तो चाहिए पर स्वयं श्रोता नहीं बनना।

यह सच में आगे चलकर गंभीर हो सकता है। आप लोग भी सोचिएगा, और अपने आस पास के लोगों को थोड़ा "सुनना" शुरु करिएगा। क्योंकि मैं मानती हूं कि एक धैर्यवान श्रोता बहुत सारे अवसाद, परेशानियों, नकारात्मकता का आसान हल है। जब कोई हमारी बात ध्यान से सुन लेता है तो आधी परेशानी खत्म हो जाती है, और हम भी शायद कहीं अपनी समस्या का हल पा लेते हैं। जैसे जैसे हम बताते हैं और सामने वाला बिना किसी पूर्वाग्रह के सुनता है, बिना कोई बिन मांगी सलाह दिए, तब आप शांत होने लगते हैं और फिर आप भी सुनने को तैयार होते हैं, समझने को तैयार होते हैं।

इतना मुश्किल भी नहीं है, अब की बार कोई गुस्से में या झुंझलाहट में, या परेशानी में आपसे कुछ कहे तो "सिर्फ सुनना" बिना रोके टोके और जब वो कुछ पूछे तब सलाह देना और सबसे आवश्यक उसे आगे "परोसना" मत, विश्वास की डोर को मजबूती से थामना।

सुनाते तो हम सब ही हैं, अब खुले मन से सुनने की कला को भी सीखें, नए दौर में ये अधिक आवश्यक है।

■■

--अंकिता बाहेती

(लेखिका, कवयित्री, चित्रकार,
नृत्यांगना, स्वतंत्र शिक्षिका,
अनुवादक, संपादक, मंच संचालक)

लाइन

हरीश और गीता ने अपने बेटे राहुल को शहर के सबसे अच्छे स्कूल में पढ़ाकर इंजीनियर बना दिया था... सोचा था कुछ बरसों में चाँद सी दुल्हन घर आ जाएगी .राहुल और उसकी मित्र तान्या ने योजनानुरूप विदेश में बसने का निश्चय किया... तान्या ने उसे विदेश में पढाई के लिए प्रेरित किया...लगन से पढाई करके राहुल ने विदेश में अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति भी प्राप्त कर ली . तान्या भी अगले कुछ महीनों में इटली के मिलान शहर में जाने वाली थी . यहीं के लिए राहुल का भी चयन हुआ था .

राहुल और तान्या की घनिष्टता देखकर मन ही मन गीता ने तान्या को घर की बहू के रूप में स्वीकार लिया था . खूब भागदौड़ रही ... कुछ महीनों बाद राहुल लौटा तो तान्या को लेने के लिए ... बहुत सारी बातें बताने के बाद ... लाड से कुछ सकुचाते हुए गीता ने राहुल को समझाया " देख बेटा ! बाकी तो सब ठीक है ... अब तान्या और तुम साथ ही रहोगे " एक बात का ध्यान रखना ... लाइन क्रॉस मत करना"

"मम्मा ! लाइन तो कबकी वाश आउट हो चुकी" बिना शर्माए राहुल बोला

■■

- ज्योत्सना सक्सेना

शिकवा-शिकायत

‘ आज बाजार में तुम्हारी मां मिली थीं। शिकायतों की झड़ियाँ लगा दी। मैं तुम्हारी तरफ पहले जैसा ध्यान नहीं देता, मैं अब तुम्हें महत्वहीन समझने लगा हूं .... वो मुझसे हर सवाल पर स्पष्टिकरण मांग रहीं थी। मैंने उनका आदर करते हुए चुप्पी साध ली।’

‘ सब कुछ सच ही कहती होंगी मां। मैंने ही उन्हें अपना दुखड़ा सुनाया था। इसीलिए तो आप चुप .... ’

‘ अब मैं तुम्हें जानू-जानू कहके पुकारने वाला २५-३० साल का ना. जवान नहीं रहा । ६० की उम्र पार कर चुका हूं जानकी! खैर, छोड़ो। मैंने तुम्हें सत्संग-कीर्तन में जाने से कभी रोका है? ’

‘ भगवान झूठ न बुलवाए। आपने कभी नहीं रोका है, जबकि आप खुद सत्संग-कीर्तन सुनने नहीं जाते हो। ‘

‘ बाजार से सब्जी, किराना सामान लाने के लिए अकेली जाने की जिद करती हो तो मैं तुम्हें अकेला नहीं भेजता हूं। ऐसा क्यों? ’

‘ शहर में भीड़-भाड़ रहती है। दो पहियों, चार पहियों का रेला-पेला लगा रहता है । मैं सिग्नल की प्रतीक्षा किए बगैर रोड क्रोस करती हूं। मेरे साथ दुर्घटना घट जाने की चिंता सताती है, इसीलिए। ’

‘ जब कभी बीमार पड़ती हो, प्यार से समझाने या गुस्सा करने पर डाक्टर के पास जाती हो। ’

‘ गुस्सा करने भी मैं नहीं जाती हूं तो इलाज करवाने जबरदस्ती डाक्टर के पास ले चलते हैं। ’

‘ तुम्हारे बहनोई को किसी बात पर गलतफहमी हो गई थी। निर्दोष होते हुए भी तुम्हारी बहन, बहनोई से क्षमा क्यों मांगी?’

‘ उनके साथ मेरे मधुर सम्बंध खराब न हों, इसलिए मेरी खुशी की खातिर। आपके स्वाभिमान को बहुत ठेस पहुंची थी, जिसे आजीवन नहीं भूलूंगी। ’

‘ इकलौती बहू मेरे सामने ही तुमसे लड़-झगड़ रही थी तो मैंने किसका पक्ष लिया था? ’

‘ उस समय आप खम्बे की तरह मेरे साथ खड़े थे। आपका रौद्र रूप देखकर, कांपकर चुप हो गई थी बहू।’

‘ मैंने उस समय क्या कहा था, वो भूल गई? ’

‘ आपने कहा था कि आप मेरी नस-नस से परिचित हैं। मैंने अपने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला है ....। ’ कहते-कहते जानकी का गला सूखने लगा। आंखें नम होने लगी।

■■

- **अशोक वाधवाणी**
गांधी नगर, कोल्हापुर,
महाराष्ट्र, भारत ,
संपर्क- ९४२१२१६२८८

कहानी एक किसान की

यह कहानी है बुंदेलखंड के एक किसान की, जिसका नाम था राकेश। राकेश बचपन से ही होनहार, मेहनती और ईमानदार इंसान था। बचपन में ही माँ-बाप गुजर जाने के कारण घर की जिम्मेदारी अब उसी के कंधों पर आ गई थी। राकेश के घर में उसके अलावा उसकी दो छोटी बहनें थीं। राकेश के जब माँ-बाप का देहांत हुआ था तब वह आठवीं कक्षा में पढ़ता था, उसकी दोनों बहनें क्रमशः तीसरी और चौथी कक्षा में पढ़ती थीं। चूँकि अब राकेश के पास इतने संसाधन नहीं थे कि वह अपनी बहनों के साथ-साथ खुद की पढ़ाई भी जारी रख सके। उसके पास अब दो ही विकल्प थे, या तो अपनी बहनों को पढ़ाए या फिर खुद पढ़े। लेकिन मरता क्या ना करता, राकेश ने अपनी बहनों का भविष्य सँवारने के लिए उन दोनों की पढ़ाई जारी रखी और खुद पढ़ाई छोड़ दी। चूँकि राकेश के पिता उसके लिए दो एकड़ जमीन छोड़ गए थे, उसी में राकेश खूब मेहनत करता और अपनी बहनों की अच्छे से देखभाल करता। धीरे-धीरे समय बीतता गया और राकेश व उसकी बहनें बड़ी होती गईं। बहनों की बढ़ती उम्र जहाँ राकेश की जिम्मेदारियों को बढ़ा रही थी, वहीं उनके विवाह की चिंता भी उसे सताती रहती थी।

राकेश यह अच्छे से जानता था कि अपनी बहनों का विवाह कराने के लिए उसे अच्छे लड़के चाहिए और अच्छे लड़के तभी मिलेंगे जब मोटा-मोटा दहेज दिया जाएगा। वह खुद को बहुत असहज समझ रहा था क्योंकि उसके पास था तो बस केवल दो एकड़ जमीन का टुकड़ा, उसकी आय के कोई अन्य साधन नहीं थे। वह इतना दहेज कहाँ से लाएगा, अपनी बहनों का ब्याह कैसे करेगा, ये चिंताएँ अब उसे सताने लगीं थीं।

जैसे-जैसे समय बीतता जा रहा था वैसे-वैसे राकेश की चिंताएँ और भी बढ़ती जा रही थीं। लेकिन कहते हैं ना कि ”भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं।“ राकेश की दो बहनें थीं इसीलिए राकेश को दो लड़के देखना थे। लेकिन ईश्वर का रहम था कि एक बहुत अच्छे और प्रतिष्ठित परिवार के दो सगे भाई राकेश की बहनों को ब्याहने के लिए आए। राकेश ने अपनी बहनों को खूब पढ़ाया था। जहाँ बड़ी बहन इतिहास विषय से एम. ए. पास थी, वहीं छोटी बहन अंग्रेजी साहित्य से एम. ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा दे रही थी। अच्छी पढ़ी-लिखी होने के कारण लड़के वालों ने दहेज को तवज्जो ना देते हुए पढ़ाई को महत्व दिया और खुशी-खुशी राकेश की दोनों बहनों को अपने घर ब्याह कर ले गए। राकेश की खुशी का ठिकाना ना रहा, शायद यह सब उसके कर्मों का ही फल था। राकेश को अब अपनी चिंताओं से निजात मिल चुकी थी।

राकेश उम्र में सबसे बड़ा था, अपनी बहनों की जिम्मेदारी के कारण अभी तक स्वयं अपना विवाह नहीं किया था। अब घर में केवल एक ही सदस्य था। पहले तो बहनें खाना बनाकर दे दिया करतीं, शाम को खेत से घर आते ही छोटी बहन चाय देती, लेकिन अब यह सब करने वाला कोई नहीं था। इतने बावजूद राकेश अपनी बहनों के लिए बहुत खुश था।

राकेश अब स्वयं खाना बनाता, खेत जाकर मेहनत करता, शाम को वहाँ से आता और सो जाता। धीरे-धीरे यही सब चल रहा था। इसी बीच राकेश के एक दूर के रिश्तेदार ने राकेश से अपनी बहन के विवाह का प्रस्ताव रखा। राकेश ने यह बात अपनी बहनों को बताई। बहनों ने यह प्रस्ताव खुशी-खुशी मंजूर कर लिया। अभी तक राकेश ने अपनी बहनों की जिम्मेदारी निभाई थी, अब राकेश की बहनें अपने बड़े भाई की जिम्मेदारी निभा रहीं थीं। राकेश का धूमधाम से विवाह हुआ। राकेश के घर में उसकी पत्नी के तौर पर एक लक्ष्मी का आगमन हुआ था। धीरे-धीरे राकेश का वैवाहिक जीवन खुशहाल पूर्वक चलने लगा।

अब राकेश को खुद खाना बनाने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि अब उसके साथ उसकी पत्नी सीमा थी। रोज उसकी पत्नी उसे भोजन देती, राकेश खेत जाकर ज्यादा मेहनत करता और जब शाम के वक्त घर वापस आता तो राकेश की पत्नी उसे चाय देती जिसे पीकर राकेश की थकान ऐसे ही दूर हो जाती।

राकेश की शादी को एक वर्ष से ज़्यादा हो चुके थे। वे दोनों एक दूसरे का साथ पाकर बहुत खुश थे, बस कमी थी तो घर के आँगन में किलकारी गूँजने की। जल्दी ही यह कमी भी पूरी हो गई। आज राकेश की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। वास्तव में राकेश को अपनी प्रथम संतान के तौर पर एक पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई थी। राकेश के जीवन में पुत्री के तौर पर समृद्धि आई थी। पुत्री के जन्म के साथ ही धीरे-धीरे उसकी आर्थिक स्थिति भी सुधर रही थी।

देखते ही देखते राकेश और रेखा को चार संताने हो चुकी थीं, एक पुत्री और ३ पुत्र। राकेश अपने चारों संतानों को बहुत अच्छे से पढ़ा लिखा रहा था। वे दोनों अपने बच्चों के साथ बहुत अच्छे से जीवन यापन कर रहे थे। लेकिन समय हमेशा एक सा नहीं रहता। राकेश के समय में भी परिवर्तन आया।

यह प्रकृति का कहर था, इस बार बुंदेलखंड में भयंकर सूखा पड़ा था। चूँकि राकेश किसान था और खेती अलावा उसके पास आय के कोई अन्य विकल्प नहीं थे। सूखे की चपेट में आने के कारण राकेश की जमीन अपनी उर्वरता खो चुकी थी। राकेश के पास कोई साधन ना होने के कारण उसकी स्थिति बहुत बुरी हो गई थी। साथ ही साहूकारों के कर्ज ने उसे चारों तरफ से दबा लिया था। राकेश अब चिड़चिड़ा रहने लगा था, राकेश का स्वभाव बदलने लगा था। राकेश दिनों दिन अपनी चिंताओं में मरा जा रहा था। उसकी पत्नी और बच्चों को समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्या किया जाए कि वह राकेश को उस मनोभाव से बाहर निकाल सकें। दिनोंदिन राकेश का स्वास्थ्य भी खराब होता जा रहा था। राकेश के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही बुरी हो चुकी थी। वास्तव में राकेश का परिवार अब खाने को मोहताज हो चुका था। इसी बीच राकेश की पत्नी ने उसे एक सलाह दी कि वह अपनी बहनों से मदद ले। चूँकि राकेश बहुत ईमानदार और खुद्दार इंसान था। वह किसी भी स्थिति में अपनी बहनों से मदद लेने के मूड में नहीं था।

हर तरीके से थक-हारकर राकेश की पत्नी ने राकेश के बोझ को कम करने का कुछ उपाय सोचा। वास्तव में राकेश की पत्नी पढ़ी-लिखी थी।मायके में वह छोटे बच्चों को पढ़ाया करती थी। राकेश की पत्नी ने सोचा कि क्यों न किसी स्कूल में पढ़ा कर कम से कम अपने पति और परिवार का बोझ कम किया जाए। राकेश का गाँव में पर्याप्त सम्मान और व्यवहार था इसीलिए राकेश की पत्नी को स्कूल में पढ़ाने के लिए बहुत ही जद्दोजहद नहीं करना पड़ी। शीघ्र ही एक अच्छे प्राथमिक विद्यालय में राकेश की पत्नी को एक टीचर के तौर पर काम मिल गया।

राकेश की पत्नी रोज सुबह अपने बच्चों और अपने पति के लिए खाना बना कर जाती और स्कूल में बच्चों को पढ़ाती और पढ़ा कर वापस आती। राकेश के घर से स्कूल ११ किलोमीटर दूर था। सीमा रोज बस में धक्के खाते हुए जाती और वहाँ से पैदल आती, क्योंकि पैसे भी तो बचाना थे। राकेश अपनी पत्नी का हाल देख कर बहुत दुखी था, उसे यह चिंता खाए जा रही थी कि वह ऐसा क्या करे ताकि उसकी परिवार की स्थिति को सुधार सके। लेकिन वह खुद भी असहाय था।

राकेश की पत्नी और उसके बच्चे अक्सर राकेश को समझाने की कोशिश किया करते, राकेश से संवाद करते कि पिताजी आप परेशान ना हो, लेकिन समझाने मात्र से राकेश की परेशानी दूर होने वाली नहीं थी। राकेश अच्छे से जानता था कि आगे भी स्थिति और भी बिगड़ती जाएगी।

लेकिन समय हमेशा एक सा नहीं रहता। कुछ समय बाद बुंदेलखंड को सूखे से निजात मिली और सभी किसान अपनी-अपनी जमीन पर खेती करने लगे। राकेश ने भी बड़ी मेहनत से खेती की और राकेश की स्थिति धीरे-धीरे सुधरने लगी। धीरे-धीरे अपने परिवार की स्थिति सुधरते देख राकेश और उसका छोटा सा परिवार भी सभी की खुशहाली की कामना करता।

लेकिन एक बात जो गलत हुई थी वह यह थी कि इस वजह से चिड़चिड़ापन और झनझनाहट राकेश के स्वभाव का एक अनिवार्य हिस्सा बन गई थी। अब छोटी सी भी गलतियों में राकेश चिड़ जाता था। उसे गुस्सा जल्दी आने लगी थी। लेकिन इस बात से तो निजात मिल गई थी कि राकेश के ऊपर जो कर्ज का बोझ था वह लगभग समाप्त होता जा रहा था।

एक शाम के ६ बज चुके थे। सीमा को आज स्कूल से वापस घर आने में काफी देर हो गई थी। वैसे तो रोज सीमा ४ बजे तक हर हालत में वापस आ जाती थी, लेकिन आज पता नहीं क्यों वो इतनी लेट हो गई थी। वैसे समस्या लेट आने की नहीं थी, समस्या थी सीमा के बच्चों की..। रेखा के ४ बच्चे थे। चारों बच्चों में जो सबसे छोटा बच्चा था परेशानी उसके साथ थी। बड़ी बहन अपने छोटे भाई को आखिर कितना सम्हाले..? चारों बच्चे अपनी मम्मी की राह देख रहे थे। उनके पापा (राकेश) के खेत से आने का भी समय हो गया था। आज बच्चों की मम्मी के पहले पापा घर आ गए थे, लेकिन मम्मी अभी तक नहीं आईं थीं।

शाम के ७ बजने वाले थे, तभी बाहर से किसी के जल्दी-जल्दी चलने की आहट सुनाई दी। बड़ी लड़की स्वाती ने खिड़की से देखा तो उसकी मम्मी सीमा भागी चली आ रही थी क्योंकि वह भी जानती

थी कि आज तो स्वाती के पापा का पारा बहुत हाई होगा। लेकिन बेचारी वह भी क्या करती..? घर आते ही उसने सबसे पहले अपने छोटे बच्चे को लिया और कमरे में एक जगह बैठकर दूध पिलाने लगी। स्वाती पापा को चाय बनाने के लिए उठी, लेकिन राकेश ने गुस्से में मना कर दिया। बेचारे बच्चे सहम गए। रेखा ने पानी भी नहीं पिया था..। तभी राहुल ने पानी लाकर मम्मी को दिया और कहा, मम्मी पानी तो पी लो..। सीमा के चेहरे पर उदासी भी थी और अपने बच्चे के लिए प्यार भी। सीमा आज बहुत थक गई थी और उसके पैरों में भी दिक्कत थी।

इसी बीच राकेश गुस्से से कमरे से बाहर निकल गए। बच्चे और सीमा समझ गए थे कि आज पापा बहुत नाराज हैं, लेकिन इसमें सीमा की क्या गलती..? वह भी तो अपनी जिम्मदारियों को निभा रही थी, घर भी, बच्चे भी और स्कूल भी। वह यह सब इसीलिए तो कर रही थी ना कि राकेश पर बोझ ना पड़े। लेकिन कौन समझने वाला था..?

खैर, राकेश के निकलने के बाद कुछ देर तक सन्नाटा फैला रहा। थकान इतनी थी कि सीमा को कब नींद आ गई, पता ना चला। सब बच्चे भी अपनी माँ के साथ सो गए थे।

लेकिन तभी कमरे की लाइट जली, सब गहरी नींद में थे। अचानक स्वाती के कानों में उसके पापा की आवाज आई। वह झट से उठी और मम्मी को जगाया। सब डरे हुए थे कि अब क्या हो गया। अचानक गेट खुला और सब अवाक् रह गए..।

सामने उनके पापा खड़े थे, और उनके हाथों में कुछ नाश्ता और चाय की प्लेट थी..। यह सब कुछ राकेश ने खुद बनाया था..। राकेश ने सबसे पहले चाय अपनी पत्नी को दी और कहा, ”तुम बहुत थक गई हो, ये लो अदरक वाली चाय पियो, थकान गायब हो जाएगी२।” सीमा की आँख में आँसू थे। वह कुछ भी समझ नहीं पा रही थी लेकिन वह अपने पति का साथ पुनः पाके भावुक हो गई थी। राकेश ने अपने बच्चों को भी चाय और नाश्ता खाने को कहा। सब बच्चों के चेहरे पर मुस्कान थी। सीमा और राकेश एक दूसरे को देख रहे थे और एक दूसरे की थकान को चाय के तौर पर पी रहे थे..। राकेश के चेहरे पर हल्की सी मुस्कुराहट थी२। राकेश ने आज यह जता दिया था कि “आदमी में इतनी औरत आज भी बची हुई है...।”

■■

शिवम शर्मा
शोधार्थी, इतिहास विभाग
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
भोपाल (मध्यप्रदेश)

एक खत

भारतीय सेना में इनरोलमेंट नंबर ००१ एक ऐसी सैन्य महिला अधिकारी को मिला है जिसके एक पत्र ने महिलाओं को सेना में उनके अधिकार दिलाए और महिलाओं के लिए सेना में प्रवेश के द्वार खोल दिए स इस बहादुर महिला का नाम प्रिया झिंगन है जो इस ऐतिहासिक निर्णय की कर्णधार रहीं । ये बात नब्बे के उस दशक की है जब महिलाओं के सेना में जाने के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था ।

क्या था वो खत?

प्रिया जो उस समय मात्र २१ वर्ष की थीं और शिमला के सेंट बेडे कह्लेज में पढ़ती थीं। उन्होंने समाचारपत्र में सेना के एक विज्ञापन को देखा जिसमें भारतीय सेना से जुड़ने के लिए पुरुषों के लिए आमंत्रण था। इस विज्ञापन ने प्रिया झिंगन के आत्मसम्मान को झगझोर दिया और उन्हें ये बात बड़ी नागवार गुजरी । उन्होंने आनन फानन में उस समय के आर्मी चीफ जनरल सुनीत फ्रांसिस रोड्रिग्स को एक खत लिखा और उनसे प्रश्न किया कि महिलाओं की सेना में नियुक्ति क्यों नहीं ? आपने केवल पुरुषों को क्यों बुलाया स्त्रियों को क्यों नहीं ? उन्होंने अपने पत्र में महिलाओं की सेना में नियुक्ति न होने के कारण पूछे। प्रिया के उस पत्र के कारण आज भारतीय महिला पूर्ण आत्मविश्वास के साथ सेना के पदों पर कार्यरत हैं ।

खत का कुछ इस प्रकार मिला जवाब

प्रिया ने खत तो लिख दिया था पर उन्हें अपने खत का जवाब मिलने की कोई आशा नहीं थी। वह समय ऐसा था जब भारतीय सेना में महिलाओं की भर्ती नहीं की जाती थी और सिर्फ डॉक्टर के तौर पर महिला अवश्य नियुक्त हो सकती थीं लेकिन उनके सेना में किसी और पद पर नियुक्त होने का कोई प्राविधान नहीं था। लेकिन प्रिया झिंगन के खत लिखने के बाद कुछ अलग ही घटित हुआ । कुछ सप्ताह के बाद प्रिया को अपने खत का जवाब सेनाध्यक्ष के द्वारा कुछ इस प्रकार मिला “मैं जानकर बहुत खुश हूँ कि एक महिला भारतीय सेना से जुड़ना चाहती है और ये शीघ्र ही होगा। भारतीय सेना में कुछ ही समय में महिलाओं की नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।”

इन शब्दों ने प्रिया को जैसे सातवें आसमान पर पहुँचा दिया और उन्हें लगा सेना अधिकारी बनने का उनका स्वप्न अब अवश्य पूरा होगा । पर उसके बाद कोई भी सकारात्मक खबर नहीं आई और प्रिया झिंगन ने वकालत में प्रवेश ले लिया ।आखिरकार १६६२ में भारतीय सेना ने अखबार में एक पूरे पेज का विज्ञापन छापा जिसमें महिलाओं को सेना से जुड़ने के लिए आमंत्रित किया गया था । अब प्रिया को लगने लगा कि सेना की हरी यूनिफार्म पहनने का समय नजदीक आ गया है ।

उन्होंने थल सेना में शामिल होने के लिए अनुरोध किया पर इस अनुरोध को सेना के शीर्ष अधिकारियों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया । कानून में स्नातक होने के नाते कोर ऑफ जज एडवोकेट जनरल में उनको मौका मिला। वकालत कर चुकी प्रिया ने सेना में लॉ के लिए ऑफिसर्स ट्रेनिंग अकैडमी में आरक्षित सीट मिली और प्रिया कैडेट ००१ के साथ सेना में प्रवेश करने वाली पहली महिला बनीं। २१ सितंबर १६६२ को प्रिया के साथ-साथ २४ अन्य महिलाओं को भी सेना में प्रवेश मिला था और ये सभी भारतीय सेना की पहली महिलाएँ थीं जिन्होंने बाकि महिलाओं के लिए रास्ता खोला । साहस से मुकाबला किया हर मुश्किल का

प्रिया ने सेना में कई अडचनों का सामना भी किया स उन्हें कई बार अनेक मुश्किलों और भेदभाव का सामना भी करना पड़ा। उस समय अलग से शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं थी । एक महिला अफसर को जवान अपना अधिकारी मानने में हेठी समझते थे ।लेकिन प्रिया ने हर समस्या का साहस से सामना किया और हर जिम्मेदारी को पूरी तरह निभाया। प्रिया महिलाओं को किसी से कम नहीं मानती और कहती हैं कि महिला सही अवसर मिलने पर कोई भी जिम्मेदारी उठाने में सक्षम हैं , बस उन्हें अवसर मिलने चाहिए ।■■

शालिनी वर्मा
दोहा कतर

गजल

१

होते न जो दरबारी तो ये दरबार मर जाता !
दामन को करके खुद ही तार तार मर जाता !!

ये सर किसी के सामने अब तक नहीं झुका ,
झुकता जो सर तो पगड़ी का मेयार मर जाता !!

अच्छा हुआ कि तुमने भी समझौता कर लिया ,
चलते जो सच की राह तो अखबार मर जाता !!

तुम्हारी दीद की चाहत में वो बरसों रहा जिंदा,
दिख जाते अगर तुम तो वो बीमार मर जाता !!

किसी कमजर्फ की तारीफ मिल जाने से बेहतर था,
हमारे फिक्रो फन का एक एक अशआर मर जाता !!

२

माँ के कदमों की आहट ज्यों की त्यों है !
मेरे मन में घबराहट ज्यों की त्यों है !!

एक खेत के लिये हमारे पापा की,
दादाजी से टकराहट ज्यों की त्यों है !!

छुपकर जो देखा करती थीं बचपन में,
उन आखों में शरमाहट ज्यों की त्यों है !!

मैने नीम को शरबत से सींचा बरसों,
लेकिन उसमें कड़वाहट ज्यों की त्यों है !!

मुददत बाद मिला था माँ से होली पर,
उसकेआँचल में गरमाहट ज्यों की त्यों है !!

डॉ आलोक बेजान
बुलंदशहर (उत्तरप्रदेश)
भारत

बुजदिल

“ क्या बात है श्रवण, बहुत परेशान दिख रहे हो? सब ठीक तो है न ?”उसे भोजन को बस अनिच्छा से कुतरता देखकर अनु ने प्रश्न किया।

“ हाँ अनु, सब ठीक है।‘”

“ मुझे लगा था कि बेशक हम जीवन साथी न बन पाए पर अच्छे मित्र तो हमेशा रहेंगे।” उसने शिकायत की।

“ इसमे कोई शक ही नही अनु, हम अब भी अच्छे मित्र हैं।” श्रवण ने उनका मनुहार किया।

“ तो फिर बताओ न कि इतने उखड़े हुए क्यों नजर आ रहे हो ?”

“ तुम ये तो जानती ही हो कि मेरे विवाह को कई वर्ष बीत गए”

“ हाँ तो ?”

“ पर अब भी हम निसन्तान हैं। इस बात को लेकर माँ और दादी जब देखो तब मानसी को ताने देती रहती हैं।”

“ किसी डॉक्टर से मिले तुम ?”

“ सारे चेकअप करवा लिए, कुछ भी समस्या नही निकली। घर का माहौल बहुत खराब हो गया है। हर वक्त के ताने, मानसी का रोना... मन बहुत खराब हो जाता है मेरा।”

“ क्या तुम यह सोचते हो कि इसमें मानसी की कोई गलती है ?”

“ नहीं, ऐसा तो नहीं”

“ तो माँ और दादी से कहते क्यों नहीं, कि औरत भी एक इंसान है, कोई बच्चा पैदा करने की मशीन नहीं। जो एक मशीन ने ठीक काम न किया तो दूसरी खरीद लाए ।”

“ अब तो दादी मेरी दूसरी शादी की बात भी करने लगी हैं। जी चाहता है घर छोड़कर कहीं चला जाऊं।” उसकी बात का जवाब न देकर श्रवण ने आगे कहा।

“ तो बच्चा गोद ले लो।”

“ पर वह अपना खून तो नहीं होगा।”

“ क्यों, तुम्हारे खून में ऐसी कौन सी बात है, जिसका चलना इतना जरूरी है?”

“ अरे ! क्या बात कर रही हो ?”

“ नहीं बताओ न, तुम्हारे खून में स्पेशल क्या है? कौन से महाराणा प्रताप या शिवाजी तुम्हारे यहाँ पैदा हुए हैं?”

“ बेकार की बात मत करो।” अब वह झुँझला गया था।

“ तुम्हारे वंश का चलना इतना जरूरी क्यों है? एक ऐसा बुजदिल, जो बेहिसाब मोहब्बत के बावजूद भी घरवालों की मर्जी के खिलाफ अपनी पसंद की लड़की से शादी की हिम्मत नही जुटा पाया,जो अपनी बेगुनाह बीवी के साथ नही खड़ा हो पा रहा।”

वह खामोश रह गया।

“ अरे आई वी एफ तकनीक है, और भी कई रास्ते हैं। अगर इस बार तुमने अपनी पत्नी का साथ नहीं दिया तो ईश्वर भी तुम्हे माफ नही करेगा।”

कुछ देर वह सर झुकाए सोचता रहा। अनु भी खामोश रही। फिर वह उठ खड़ा हुआ

“ चलता हूँ, कोशिश करूँगा की गलत हालात को सही कर सकूँ।”

“ ऑल द बेस्ट” अनु सन्तोष के साथ मुस्कुरा दी।

ज्योत्स्ना सिंह
१८ - ए, विक्रमादित्य पुरी,
स्टेट बैंक कॉलोनी, बरेली - २४३००५

खजुराहो यात्राः एक अविस्मरणीय दैवीय अनुभव

जिसका नाम आते ही मन में अजीब सी तरंगे उसने लगती है। एक उत्साह ,एक जोश उत्पन्न हो जाता है कि लगातार एक ही तरह की दैनिक जीवन से नया कुछ हटकर देखने को, घूमने को, सीखने को मिलेगा। जहां हम स्वच्छंद होंगे , पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ शायद कुछ कम होगा। जहां अपनी भावनाओं को, अपने सपनों को, आपकी इच्छाओं को जीने का एक अवसर मिलेगा। इसी के साथ- साथ अपने अनुभवों को, अपनी यादों को, अपने आनंद को हम कैमरे के माध्यम से एक अनंत खजाने के रूप में अपने साथ लेकर आएंगे । यही है एक यात्रा की सुखद अनुभूति। इन यात्राओं के स्मृति चित्रों को दोबारा जब भी हम देखते हैं तो जैसे एक फिल्म की भांति पूरी यात्रा हमारी आंखों के सामने से गुजर जाती है और हमें एक नई ताजगी, जीने की प्रेरणा फिर से दे जाती है और यदि यह यात्रा किसी धार्मिक स्थल, तीर्थ स्थल और ऐतिहासिक होने के साथ-साथ प्रकृति से भी जुड़ी हो तो क्या बात है।

हम हमेशा से ही सपने देखते हैं। पर यह सपने ऐसे होते हैं जिन्हें किसी के साथ शायद ही साझा कर पाएं। कोई भी चित्र देखकर, कोई फिल्म देखकर, कोई दृश्य देखकर या किसी की बातें सुनकर, वृत्तांत सुनकर हमारे मन में भी कहीं ना कहीं एक इच्छा, एक हूक सी उठती है कि हमें भी उस विशेष स्थान को देखना है, उसकी यात्रा करनी है जीवन में कभी न कभी तो ऐसा मौका जरूर मिलेगा। हम सभी के जीवन में यह पल जरूर आते हैं जब हमारी दबी हुई इच्छाएं साकार रूप ले लेती है ।जब हमें उनको पूरा करने का कोई कारण कोई, हेतु प्राप्त होता है।

कोई भी यात्रा अपने आप में अनोखी ही होती है और इसके साथ यह भी उसके चित्र भी पास में हो तो वह अविस्मरणीय बन जाती है। यदि इस यात्रा के अनुभव चित्र सहित हम दूसरों के साथ साझा करते हैं तो वह संस्मरण बन जाती है। वैसे तो जीवन भी एक लंबी यात्रा ही है जिसमें विभिन्न प्रकार के पड़ाव आते हैं सुख-दुःख , हानि- लाभ, मिलन - जुदाई जीवन की यात्रा के कुछ अविस्मरणीय , अवश्यम्भावी पड़ाव होते हैं जो सभी के जीवन में एक अलग अनुभव और सीख ले कर आते हैं। जब इन्हीं अनुभवों को यदि शब्द प्रदान कर दिए जाते हैं तो वह 'रचना' बन जाती और शब्द ब्रह्म है इसलिए वह अमर हो जाती है।

बचपन में से लेकर मैं कभी भी खजुराहो के बारे में, उसके मंदिरों इत्यादि के बारे में कोई भी कार्यक्रम, मैगजीन इत्यादि में देखती थी तो मन में इच्छा जरूर होती थी कि जीवन में एक बार तो यहां की यात्रा करनी है। न जाने कब ये इच्छा पूरी होगी।

ये अवसर मुझे १ फरवरी २०२० को खजुराहो में ESW (Environment and Social welfare Society) सोसाइटी की तरफ से २ दिवसीय अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में जाने का सुवसर प्राप्त हुआ।

मेरी खजुराहो की यात्रा के पीछे की एक महत्वपूर्ण कारण था ।

मेरा मन अति प्रसन्न हुआ और मैंने जल्द से जल्द ट्रेन की टिकट रिजर्व करवा लिए कि मुझे समय पर खजुराहो पहुंचना है। निश्चित समय पर मैं खजुराहो पहुंच गई। मन में बहुत उत्साह था कि आज बचपन का सपना सच होने जा रहा था। सबसे पहले संगोष्ठी में उपस्थित रहना भी आवश्यक था इसीलिए नियत समय पर संगोष्ठी प्रारंभ हो गई।

वहाँ पर मेरे द्वारा डॉ देवी शंकर सुमन जी ,साइंटिस्ट मिनिस्ट्री ऑफ एनवायरमेंट फॉरेस्ट एंड क्लाइमेट चेंज गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, डॉ उलरिच वर्क, प्रेसिडेंट जर्मन एसोसिएशन ऑफ होम थेरेपी का स्वागत का विधिवत स्वागत किया गया। ।

बहुत ही सुंदर संगोष्ठी और पर्यावरण पर आधारित विषयों के साथ सभी ने अपने रिसर्च पेपर (पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन) प्रस्तुत किए जिनसे बहुत कुछ सीखने, जानने का मौका मिला ।डॉ उलरिच जो कि जर्मनी से थे उन्होंने हवन थेरेपी पर बहुत सुंदर प्रेजेंटेशन प्रस्तुत की ।उन्होंने बताया कि किस प्रकार से हवन हमारे पर्यावरण के लिए, हमारे अस्तित्व के लिए, हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। यह विडंबना ही कहेंगे कि हम अपनी सभ्यता ,संस्कृति को भूलते जा रहे हैं जो कि हम पश्चिमीकरण की तरफ बढ़ते जा रहे हैं ,कुछ समय की मांग है और कुछ मजबूरी कही जा सकती है। जबकि प्राचीन काल से हमारे ऋषि-मुनियों द्वारा कोई भी शुभ कार्य हवन ,यज्ञ इत्यादि से प्रारंभ किया जाता था जिससे न केवल वातावरण शुद्ध होता था बल्कि हर तरफ एक आध्यात्मिक, सात्विक ऊर्जा का संचार होता था जो हमारे मन मस्तिष्क तथा विचारों को भी सात्विकता प्रदान करती थी ।परंतु आज जहां हर तरफ प्रदूषण का ही बोलबाला है तो इस तरह का कार्य बहुत सही दिशा में काम करेगा।

कुल मिलाकर संगोष्ठी का अनुभव बहुत ही अच्छा रहा, स्मरणीय रहा।

ये तो संगोष्ठी से संबंधित कुछ अनुभव थे।

फिर मैंने अपना शोध पत्र वाचन किया।

इसके पश्चात मैं निकल गई अपनी खजुराहो की यात्रा पर। इसके लिए मैंने एक टैक्सी किराए पर ली ताकि कम समय में मैं अपनी यात्रा पूरी कर सकूं।

खजुराहो के मंदिर अपने आप में ही अपनी मिसाल हैं। खजुराहो के मंदिरों को चंदेल वंश के राजाओं ने बनवाया था। यहां ८५ मंदिर थे, जिनमें से सिर्फ २० ही बचे हैं। खजुराहो के मंदिरों की बाहरी दीवारों की कामुक मूर्तियां विश्वप्रसिद्ध हैं और यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स की लिस्ट में शामिल हैं।

सभी मंदिरों के बारे में एक साथ बताने की बजाय मैं एक एक मंदिर की विशेषता और उसके बारे में कुछ स्मृतियां आपके साथ बांटना चाहती हूं।

खजुराहो कि मंदिर अपने आप में अद्वितीय हैं। यहां हर पत्थर पर जीवन दिखाई देता है ।प्रत्येक मंदिर अपने आप में भव्यता का सबसे बड़ा नमूना कहा जा सकता है। यहां की स्थापत्य कला, शिल्प कला देखते ही बनती है ।प्रत्येक मंदिर के द्वार पर अर्ध चंद्र या सूर्य के चित्र बने हुए हैं जिसके दोनों ओर शंख दिखाई देते हैं। सभी मंदिर अपने आप में भव्यता लिए हुए हैं जिनका अलग अलग महत्व है। यहां पर सभी मंदिर सूर्योदय पर खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं। यही सिस्टम रखा हुआ है यहां पर

जिसका पालन बहुत ही सख्ती से किया जाता है ।एक मंदिर में रात को लाइट एंड साउंड शो होता है जिसकी टिकट ढाई सौ रुपए रखी गई है। यह लगभग सवा घंटे का शो होता है जिसमें मंदिरों के बारे में बहुत विस्तार से बताया जाता है साथ में उनके इतिहास तथा इन मंदिरों के निर्माण के पीछे जो कथाएं किवदंतियां हैं उनके बारे में विस्तार से सूचना दी जाती है। खजुराहो के मंदिर चंदेल वंश के द्वारा बनाए गए हैं। इन सभी मंदिरों में जीवन के सभी पड़ावों पर प्रकाश डाला गया है। मंदिर में जाने से पहले वहां पर अप्सराओं की मूर्तियां है जो नारी सौंदर्य को उजागर करती हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि हमें जीवन में इस तरह के अवसर मिलते रहेंगे जब विषय वासनाएं हमें अपनी और आकृष्ट करती हैं ।हमें फिर भी स्वयं पर संयम रखते हुए अपना कर्म करते रहना है। यह अप्सराएं विभिन्न मुद्राओं में दिखाई देती हैं जिनमें दैनिक जीवन से संबंधित कार्यकलाप भी सम्मिलित हैं। इसके बाद गृहस्थ धर्म, प्रेम, समर्पण भाव भी दिखाया गया है। अभी तक हम लोग यह सोचते थे कि खजुराहो के मंदिर केवल स्त्री पुरुष के मिलन, कामशास्त्र की गाथा का वर्णन करते हैं। वहां पर अंतरंग चित्र अधिक दिखाई देते हैं। प्रेम संबंधों को बहुत सूक्ष्मता से दिखाया गया है। परंतु इनके पीछे जो इतिहास है और जो भावनाएं हैं वह अलग है। यहां पर प्रेम प्रदर्शन के साथ इन मूर्तियों के चेहरों के भावों पर कहीं भी वासना या उत्तेजना नहीं दिखाई देती है। उनके चेहरों पर एक दिव्यता ,एक समर्पण ,एक संतुष्टि, एक तेज दिखाई देता है जो गृहस्थ धर्म के स्तंभ माने गए हैं। यही प्रेम संबंध ,समर्पण सृष्टि चक्र का आधार है। यहीं से एक औरत मां बनने का सौभाग्य प्राप्त करती है और मां बनना पूर्णता को प्राप्त करना है। प्रसव पीड़ा का आनंद और उसके बाद का फल क्या होता है इसके बारे में शब्दों में बता पाना संभव नहीं है। ईश्वर की प्राप्ति का हेतु हमारा शरीर और मन ही है। हम अपने शरीर ,अपने मन के द्वारा संतुष्टि को प्राप्त करने के बाद ईश्वर की ओर अधिक दृढ़ता पूर्वक कदम बढ़ाते हैं। तृप्ति भी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है। शरीर और आत्मा तृप्त होने के बाद हम एक दूसरे पायदान पर चलते हैं जहां पर हमें दिव्यता, भव्यता और स्वार्गिक आनंद की प्राप्ति हो सकती है क्योंकि इन सब के लिए हमारे चरित्र में बहुत सी चीजों की आवश्यकता है। कुल मिलाकर आज मेरा भ्रम भी दूर हो क्या कि खजुराहो के मंदिर केवल प्रेम, संबंधों पर ही आधारित नहीं है। यहां पर बहुत कुछ देखने, बहुत कुछ सीखने को मिलता है। जैन धर्म के मंदिर में जहां बहुत से पुराने चित्र दिखाई दिए जिनमें शोध की बहुत से संभावनाएं नजर आई ।

खुजराहो के दूल्हा देव मंदिर के कुछ चित्र ।

यहां पर एक शिवलिंग है जिसमें १०८ छोटे-छोटे शिवलिंग बने हुए हैं ।यह शिवलिंग केवल शिवरात्रि पर ही पूजा के लिए उपलब्ध हो पाता है यानि इसके कपाट केवल शिवरात्रि पर ही खुलते हैं। कहा जाता है यहां पर सुहागिने अपने पति की लंबी आयु के लिए वर मांगती हैं। इस मंदिर का नाम दुल्हादेव मंदिर इसलिए पड़ा है कि एक बार एक बारात जा रही थी तो दूल्हे की तबीयत अचानक से खराब हो गई और वह परलोक सिधार गया तो इसी मंदिर में उसकी पत्नी ने आकर पूजा की तो उसे पुनः जीवनदान मिल गया। इसलिए इस मंदिर का नाम दुल्हादेव मंदिर है। बहुत ही शांत तथा स्वच्छ निर्मल वातावरण। अविस्मरणीय अनुभव

प्रस्तुत चित्र मंतेश्वर महादेव मंदिर का है। यहां पर प्रातःकाल सभी भक्तजन पूजा करने आते हैं जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि खजुराहो में मंदिर सूर्योदय के समय खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं। प्रस्तुत मंदिर में लगभग १८ फुट लंबा शिवलिंग एक बहुत बड़े चबूतरे पर स्थित है। मैंने अभी तक कि अपनी जिंदगी में इतना बड़ा शिवलिंग नहीं देखा है। अद्भुत, अद्वितीय और आकर्षक भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग अनंतता, विशालता लिए हुए हैं जिसे देख कर आत्मिक शांति और एक सात्विक ऊर्जा का संचार हुआ। वहां पर पंडित जी ने बताया कि यह शिवलिंग फुट कुल १८ फुट का है जिसमें ९ फुट ऊपर और ९ फुट नीचे है ।शिवलिंग के नीचे एक बहुमूल्य मणि चंदेल वंश के राजाओं के द्वारा दबाई गई है कि वह मणि सुरक्षित रह सके। शायद उस मणि का यह प्रभाव है कि अभी तक यह शिवलिंग कहीं से खंडित नहीं नजर आता। बहुत ही सुंदर नजारा ।मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि मैं यहां पहुंचकर इस शिवलिंग के दर्शन कर पाई।

खजुराहो के जैन मंदिर की के कुछ चित्र जहां पर शाकाहार परोपकार ,पर्यावरण संरक्षण इत्यादि के बारे में कितने सुंदर संदेश दिए हुए हैं। इसी के साथ यहां पर पौराणिक भारतीय सभ्यता के बारे में बहुत सुंदर वर्णित चित्र भी प्रस्तुत थे जिन्हें मैं सहेज कर अपने पास ले आई तथा आप सबके साथ साझा करना चाहती हूं। कृपया आप भी देखिए कितना विशाल है हमारा भारत देश और उसका धर्म ,उसकी संस्कृति, उसकी विरासत ।गर्व है हमें हमारे भारतीय होने पर ।

जय मां भारती।

खजुराहो के मंदिरों की श्रृंखला में आज हम बात करते हैं ‘कंदरिया महादेव‘ मंदिर की ।सभी मंदिरों की तरह यह मंदिर भी बहुत भव्य तथा मनमोहक है। यहां की शांति और सौम्यता में तो देखते ही बनती है।

कंदरिया महादेव मंदिर पश्चिमी समूह के मंदिरों में विशालतम है। यह अपनी भव्यता और संगीतमयता के कारण प्रसिद्ध है। इस विशाल मंदिर का निर्माण महान चन्देल राजा विद्याधर ने महमूद गजनवी पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में किया था। लगभग १०५० ईसवीं में इस मंदिर को बनवाया गया। यह एक शैव मंदिर है। तांत्रिक समुदाय को प्रसन्न करने के लिए इसका निर्माण किया गया था। कंदरिया महादेव मंदिर लगभग १०७ फुट ऊंचा है। मकर तोरण इसकी मुख्य विशेषता है। मंदिर के संगमरमरी लिंगम में अत्यधिक ऊर्जावान मिथुन हैं। अलेक्जेंडर कनिंघम के अनुसार यहां सर्वाधिक मिथुनों की आकृतियां हैं। उन्होंने मंदिर के बाहर ६४६ आकृतियां और भीतर २४६ आकृतियों की गणना की थीं। अंदर मंडप में जाने के लिए प्रवेश द्वार पर अर्धचंद्र तथा शंख के चित्र बनाए गए हैं ।उसके बाद अंदर रोशनी का प्रबंध इस प्रकार से किया गया है कि आर पार आने वाली रोशनी का केंद्र सामने पड़ी मूर्ति पर बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाई दे। यह जो चित्र दिखाई दे रहे हैं यहां पर कोई भी कृत्रिम रोशनी का प्रबंध नहीं है क्योंकि जैसा भी कि मैंने

पहले भी कहा है कि यहां मंदिर सूर्य उदय पर खुलते हैं और सूर्यास्त पर बंद हो जाते हैं तो अधिकतर कृत्रिम रोशनी की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। परंतु मंदिरों के अंदर भी वास्तु कुछ इस प्रकार से है कि रोशनी को मुख्य मंदिर की मूर्ति तक केंद्रित किया गया है ताकि भगवान के दर्शन बहुत स्पष्ट और सुंदर तरीके से हो सके ।यह जो चित्र लिए गए हैं मोबाइल के कैमरे से लिए गए हैं और देखिए कितने स्पष्ट, सुंदर हैं। इसी के साथ मंदिर के मंडप में जाने से पहले दाएं तरफ एक लिपि अंकित की गई है जिसमें प्रथम ‘‘ओम नमः शिवाय‘‘ बिल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा है उसके बाद शायद हम पढ़ पाने में संभव नहीं हो पाए। परंतु इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय भी यह सब कुछ इतना उन्नत था और लिपियां आसानी से पढ़ी और समझी जा रही थी तभी तो वह पत्थरों पर उकेरी गई ।यहां की शिल्प कला बहुत ही अद्वितीय है। पत्थरों पर अंकित मूर्तियां अपने आप में इतनी सौम्य और सुंदर है कि उनको शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना शायद मेरे बस में नहीं है ।

खजुराहो के मंदिर की श्रृंखला में दूसरा मंदिर है विश्वनाथ मंदिर। इसमें भगवान विश्वनाथ यानी शिवलिंग रूप में विराजमान है। प्रत्येक मंडप में यहां बहुत सुंदर चित्रकारी और शिल्प कला, नक्काशी देखने को मिलती है ।नंदी मंडप में जब मैंने देखा तो नंदी जी की इसने विशाल प्रतिमा कि मन गदगद हो गया। बहुत सुंदर शांत वातावरण ऐसा लगता है जैसे ईश्वर का साक्षात्कार हो गया हो। यहां के मंदिरों की विशेषता यह है कि एक ही पत्थर के बनाए गए हैं और पता नहीं उन में कौन सी धातु मिलाई गई है कि अभी तक इतने मजबूत और चिकने है के सभी लोग, पर्यटक दांतो तले उंगली दबा लेते हैं। यहां की भव्यता सुंदरता देखते ही बनती है। मंदिर के कक्ष में जहां विश्वनाथ जी, की शिवलिंग की स्थापना है वहां पर रोशनी का इस तरह से प्रबंध किया गया है कि क्रहस वेंटीलेशन के तहत बिना किसी रोशनी के अंदर आते ही शिवलिंग के दर्शन बहुत ही सुंदर प्रकार से हो जाते हैं क्योंकि दोनों तरफ की रोशनी शिवलिंग पर दिखाई देती है ।हर प्रकार के मंदिर के दरवाजे के बाहर अर्धचंद्र या सूर्य का बिंब पूर्ण गोला बनाया गया है। उसके दोनों तरफ शंख हैं। विश्वनाथ मंदिर के मंडप के बाहर एक लिपि का चित्र भी दिखाई दिया जहां पर ओम नमः शिवाय बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा है। यानी तब तक हम यह लिपियां और भाषा बिल्कुल सही से पढ़ने और लिखना सीख गए थे। अनुसंधान का विषय है ।

देवी जगदम्बा मंदिर

कंदरिया महादेव मंदिर के चबूतरे के उत्तर में जगदम्बा देवी का मंदिर है। जगदम्बा देवी का मंदिर पहले भगवान विष्णु को समर्पित था और इसका निर्माण १००० से १०२५ ईसवीं के बीच किया गया था। सैकड़ों वर्षों पश्चात यहां छतरपुर के महाराजा ने देवी पार्वती की प्रतिमा स्थापित करवाई थी इसी कारण इसे देवी जगदम्बा मंदिर कहते हैं। यहां पर उत्कीर्ण मैथुन मूर्तियों में भावों की गहरी संवेदनशीलता शिल्प की विशेषता है। यह मंदिर शार्दूलों के काल्पनिक चित्रण के लिए प्रसिद्ध है। शार्दूल वह पौराणिक पशु था जिसका शरीर शेर का और सिर तोते, हाथी या वराह का होता था।

कुल मिलाकर इस मंदिर की यात्रा भी अविस्मरणीय रही। खजुराहो में जो बात सबसे अच्छी लगी वह यह कि यहां पर किसी भी प्रकार के किसी पुजारी के दर्शन बहुत कम हुए और कहीं भी किसी ने दान- दक्षिणा के लिए मजबूर नहीं किया जैसा कि ज्यादातर हिंदू तीर्थों पर आजकल होता है कि आप को दान- दक्षिणा के लिए मजबूर किया जाता है। यदि हम ऐसा नहीं करते तो तरह-तरह की बातें बनाई जाती हैं और हमारी श्रद्धा और आस्था पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाता है। मैं यह पूछना चाहती हूं कि यदि जो लोग पैसा नहीं दे सकते या नहीं देते हैं क्या उनमें श्रद्धा नहीं है, ईश्वर में आस्था नहीं है? वे लोग इतनी दूर यदि इतना सब कुछ खर्च करके,अपने पीछे से हर तरह से व्यवस्था करके आए हैं तो क्या बिना आस्था ,बिना श्रद्धा के आए हैं? और यदि हम ५० ₹१०० चढ़ा दे तो क्या वह श्रद्धा जाग जाएगी ?

इस तरह के कार्यकलापों से मन दुःखी हो जाता है ।पर यहां ऐसा कुछ नहीं था जिसे देख कर मन को सुकून मिला।

बस इसके बाद वापसी का समय हो गया और वैसे भी खजुराहो के सभी मंदिरों के दर्शन ईश्वर की असीम कृपा से मैंने कर ही लिए थे। यह एक ऐसा वृतांत है जो मन में बहुत शांति, श्रद्धा और एक नई चेतना लेकर आया था। ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद इतने पवित्र स्थल के दर्शन मैं कर पाई। बहुत ही अविस्मरणीय यात्रा ।इस यात्रा के लिए मैं उस असीम शक्ति का हृदय से धन्यवाद देती हूं। इसी के साथ-साथ मन में बहुत कुछ और भी जागृत हो गया है कि काश कभी, मदुरै, तमिलनाडु, तिरुचिरापल्ली के भी मंदिर एक बार देखने का सौभाग्य प्राप्त हो? देखते हैं यह इच्छा कब पूरी हो पाती है ,सब कुछ प्रभु के हाथ है। जब प्रभु इच्छा………

जितना मिला है उसमें भी संतोष करना चाहिए। बस इससे अधिक और क्या लिखना है
इति शुभमस्तु।

डॉ विदुषी शर्मा,
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अकादमिक काउंसलर] IGNOU
शोध निर्देशक, JJTU
विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत सरकार
OSD (Officer on Special Duty)NIOS
(National Institute of Open Schooling)
M 9811702001

कहाँ रहे भगवान ?

बडे परेशान थे भगवान । भक्तों ने उनका चौन से रहना मुश्किल कर रखा था । दिन रात पूजा अर्चना , भजन भाव ,शोर गुल अलग अलग मन्नतें इच्छाएँ वादे आग्रह , इनका कोइ अन्त ही नहीं था । भगवान कितनी भी इच्छाएँ पूरी करे , समस्याऐं मिटायें मनुष्य की मांग खत्मही नही होती थी । आखिरकार भगवान ने अपने कुछ विश्वस्त देवताओं को बुलवाकर सारा विवरण देते हुए प्रश्न रखा कि क्या करना चाहिये मुझे , कहाँ रहना चाहिये ?

पहले तो सारे देवता आश्चर्यचकित हुए, मुस्कराए ओर बोले प्रभु आपको रहने की चिन्ता कैसी , मनुष्य ने तो आपके लिये बडे बडे मन्दिर दैवालय , आदि बनवा रखे हैं रहने के लिये ।

वही तो समस्या है । मनुष्य मुझे इन पुजा गृहों में कैद कर दिन-रात परेशान करता है वहीं से तो बचना है।अब देवताओं को समझ मेंआ गया कि समस्या गम्भीर है । एक देवता ने सुझाव दिया भगवन आप कुछ समय के लिये स्वर्ग का मोह छोडो और घनघोर जंगलो में वास करो वहाँ मनुष्य का दखल नहीं होगा । प्रभु मुस्कराये , बोले मेरा निवास पहले वन उपवन ही हुआ करता था लेकिन अब जंगल कहाँ बचे ओर जो बचे हैं वहाँ भी मनुष्य अक्सर शिकार करने या लकडियों के लालच में जाता रहता है जंगल अब पहले जैसे वीरान नहीं रहे ।

एक अन्य देवता का सुझाव था कि प्रभु अनन्त गहराइयों वाले समुद्र में निवास करें । प्रभु कुछ चिढ से गये इस सुझाव पर । आप नहीं जानते क्या कि मैने क्षीरसागर का अपना स्थाई निवास क्यों छोडा । पूरे समुद्र को इन आधुनिक मछुआरों ने जहाजों ने और कई देशों की पनडुब्बियों ने मथ डाला है वहाँ अब बिलकुल भी शांति नहीं है।

प्रभु,तभी एक अन्य विद्वान देवता ने कहा हमारे अन्तरिक्ष मे विचरण करते ये ग्रह कब काम आयेंगे आप किसी भी ग्रह पर अपना ठिकाना बना लीजिये । बडी निराशा से भगवान ने अपने देवता के अल्प ज्ञान पर दुःख जताते हुए बताया कि पृथ्वी के बाद सबसे ज्यादा अशांति कहीं है तो वो आकाश ही हे । हमारे समय में केवल एक पुष्पक विमान ही हुआ करता था आज आकाश में इतने विमान राकेट प्रक्षेपास्त्र ओर ना जाने क्या क्या यंत्र हैं जो लगातार आकाश में घुम रहे हैं जिनसे सारे ग्रह आक्रांत हैं वहाँ तो जरा भी चैन नहीं है।अब तो सारे देवता चुप थे बडा जटिल प्रश्न था भगवान कहां रहें ?

तभी एक बूढे से देवता ने खडे होकर बडे आत्मविश्वास से कहा मेरे पास इसका हल है प्रभु ।

“आप सब झंझट छोडिये और मनुष्य के दिल में रहना शुरु कर दिजिये ।”

सभी देवता चौंके , भगवान ने भी साश्चर्य पुछा “क्या मतलब मनुष्य के दिल में ? मैं मनुष्य से ही तो बचना चाहता हुं ।”

तभी तो मै कह रहा हूँ भगवन , मनुष्य आपको सारी दुनिया में खोजेगा लेकिन खुद के दिल को कोई बिरला ही टटोलेगा जो आपका सच्चा भक्त होगा और सच्चे भक्त से तो आप भी हमेशा मिलना चाहते हैं ।

बात तो सही कह रहे हो तुम , भगवान सोच मे पड गये । बहुत सटिक और उत्तम सुझाव था।भगवान ने तुरन्त मान लिया । और उसी दिन से भगवान मनुष्य के दिल में रहने लग गये ।

■■

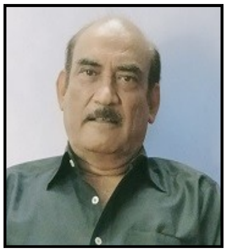

महेश शर्मा
२२४ सिल्वर हिल्स कालोनी धार
जिला धार मध्य प्रदेश

निधन से धन हार गया

प्राण पखेरू क्षणभंगुर है काया
काम ना आए धन दौलत और माया
ठन-ठन गोपाल धन रह गया
निधन से धन हार गया

जगत मिथ्या यही है शाश्वत सत्य
कोरोना काल ने दिखला दिया
पागल मन को समझा दिया
निधन से धन हार गया

रिश्ते नातों की डोरी टूट गई
रिश्ते नाते सब ही बिखर गए
पिता पुत्र को मुखाग्नि दे रहा
असहाय सा खड़ा रह गया
निधन से धन हार गया

रात दिन, सुख दुख, धूप छाया
भवसागर का चक्र मोह और माया
स्वाति की बूँद सा प्यासा चातक मन
हाथ मलता ही रह गया
निधन से धन हार गया

कोविड गया तो ओमिक्रोन आ गया
समस्त विश्व में हाहाकार मचा गया
प्रकृति से जूझा मानव प्रकृति से हार
गया
निधन से धन हार गया

■■

प्रो. नीलू गुप्ता विद्यालंकार
कैलिफोर्निया (अमेरिका)

Humanity
SHARE YOUR HUMANITY
WE NEED HUMANITY

द्वंद

द्वंद ही द्वंद है...
सवाल यह प्रचंड है...!
द्वेष लिए पल रहे सब...
अभिमान या घमंड है..?

कौन किस डगर चले ,
इसकी सूझ है किधर ..!
बस! छलावा छल रहे,
खुद की है खबर किसे?

परास्त कर भी चौन ना ,
लोभ चहूं व्याप्त है!
गजब की तृष्णा है ये,
मंजिले भी अपर्याप्त है..?

और.... और...
और.... और...
किस तलाश की है जोर...?

पा के कुछ न पाओगे ...
खाली हाथ जाओगे....!!
लूट के औरों को...,
चौन कहां पाओगे??

दिल को तुम तराश लो...
सुकून की छत पाओगे...
सुकून की छत पाओगे..
सुकून की छत पाओगे..!
द्वंद ही द्वंद है..!!

■■

मोनी विजय
(मोनी श्रीवास्तव कोइराला)
लेखिका, हिंदी ब्लॉगर,
सॉफ्टवेयर इंजीनियर

मनुष्य और प्रकृति...

आज मनुष्य स्वकेंद्रित हो गया है
समाज और राष्ट्र हित गौड़ हो गया है
स्वलाभ, स्वहित, स्वप्रचार
वसुधैव कुटुंबकम की जगह
ढाई परिवार या एकल परिवार का प्रचलन
संयुक्त परिवार तो महानगरों और बड़े शहरों में
केवल कागज में कहीं भले दिख जाते हैं
वास्तविकता में नजर न आते हैं
मनुष्य की तरह सूरज, चाँद और पेड़ पौधे भी
स्वलाभ की परिभाषा गढ़ने लगें
नदी, धरा और प्रकृति भी अपने
फायदा-नुकसान का गुणा गणित करने लगें
तो सृष्टि में शायद हाहाकार मच जाएगा
प्रदूषण और विनाश का अनुपात बढ़ जाएगा
नित नई महामारियाँ अपने वजूद का
एहसास कराएंगी
भूमंडल का सबका रहन-सहन और समीकरण
गुत्थमगुत्था हो जाएगा
शैलाब आना प्रारंभ हो जाएगा
चारों ओर चीख पुकार और रुदन होगा
सच में मनुष्य जैसा कोई स्वार्थी नहीं है
हम अपने लाभ के लिए अपना जमीर बेच दे रहे हैं
लाभ-हानि का सिद्धांत अपने अनुसार तय कर रहे हैं
प्रकृति के संसाधनों का हम बखूबी उपयोग कर रहे हैं
वहीं प्रकृति बिन स्वार्थ के हमें उपहार दे रही है...

■■

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
ग्राम-कैतहा, पोस्ट-भवानीपुर
जिला-बस्ती २७२१२४ (उत्तर प्रदेश)
मोबाइल ७३५५३०६४२८

तीन कवितायें

फिर वहीं धर्म

मेरी कविता का रक्त पल्लवित स्वर
बेचारगी के सहवास से हो गर्भित
स्वार्थ की भावना से हो
समझौता परस्त
बेबुनियादी, बेखौफ हो
मानवीय भावनाओं को
निर्ममता पूर्ण ढहाते हुए
ईमान और खुदगर्जी की हत्या कर
डूबाकर अंतरात्मा को
ब्रह्मराक्षस के छंदम भेष में
ठान आत्मोत्थान का संकल्प
आत्मघाती त्रासदी को देता निमंत्रण
खोता अपना ही अस्तित्व
अंधकर्म की यहीं गति
अंततः सद्गति का एकहि सूत्र
फिर वहीं धर्म।

लोक तपस्या

अग्नि के घेरे में विराजित
एक मनुष्य
आग की असहनीय तपन में
तापकर स्वयं को
सत्य शक्ति का प्रमाण
प्रस्तुत करता हैं
समाज को अथवा भगवान को
समाज उसको योगी कहता हैं तो कोई ढोंगी
लेकिन वह समझाना चाहता है
कि वह पाना चाहता है
ईश्वरीय शक्ति को
इस तपन से
और कहना चाहता है कि
यहीं प्रभु भक्ति अथवा तपस्या हैं।
क्या यहीं तपस्या हैं ?
शरीर को तापकर
राम रहीम रटकर
क्या जीवन सोउद्देश्य होगा पूरा
मैं यह जान पाया हूं
कि जीवन और मनुष्यता क्या
यहीं जान लेना तपस्या हैं।
और जीवन वहीं हैं
जो सम्यावस्थानुसार अर्पित हैं
स्वंय सत नितु आस्था से
सिर्फ शरीर को तपाकर
निज कर्तव्य भूलकर
दुनिया त्याज कर
समाज से डरकर
आत्माविहीन होकर
जीना तो एक झूठ सा हैं
सर्वहित, लोकहित का समर्पण ही
मनुष्यता निभाता है
जो जीवन लोक की
सुलझाये समस्या
वास्तव में वहीं
लोक तपस्या।

और फिर कुरुक्षेत्र

शांत नहीं रहेगा जनतंत्र
बजेंगी रणभेरी, नगाड़े और रडार
बरसेंगे टैंक,जेट और मिग
अभेद्य परमाणु बम और अणु बम
होंगें नगर दर नगर ध्वंस
नागासाकी हिरोशिमा सरीखे
मंडरायेंगे काले बादल फिर
लंका ऊपर बिना महाबली
विषय नहीं होगा-
दो इंच जमीन और द्रौपदी
विषय होगा-निर्लज्ज राजतंत्र
अन्याय, भ्रष्टता, जातिवाद
भुखमरी, बेरोजगारी, भाई भतीजावाद
जनसंख्या अतिवृष्टि
इस कुरुक्षेत्र में
बस नहीं होंगे
पांडव और द्रोपदी
महादानी कर्ण, पितामह भीष्म और
श्री कृष्ण,अर्जुन और भीम
होंगें तो बस शकुनि, दुर्योधन दुशासन
अंध धर्माहारी धृतराष्ट्र
सत्य, प्रेम,करुणा, श्रद्धा को
कुचलते, ढाहते मदमस्त हाथी
अब न रचेगा कोई कृष्ण गीता
धृष्टता दिखायेगी विनाश सहिंता
हिंसा के पड़ाव डालेगी
फिर अठारह अक्षोणि सेना
होगा फिर कुरुक्षेत्र।

- **राकेश छोकर**

बदल रहें हैं रोज कैलेंडर

बदल रहें हैं रोज कैलेंडर और नहीं कुछ बदले क्यों?
उजले उजले तन सबके पर दिखते न मन उजले क्यों?
चमक रहे चेहरों पर भी मुस्कान नहीं दिख पाती है,
मुस्काते चेहरों के अन्दर चेहरे दिखते गंदले क्यों?

रीति पुरातन वर्षों की है कोई किसी का होता न।
कोई किसी के दर्द को लेकर आँखें कभी भिगोता न।
गीली आँखों में भी अपने दिखते सबको धुँधले क्यों?
बदल रहें हैं रोज कैलेंडर और नहीं कुछ बदले क्यों?

केवल नूतन वर्ष है आता नया नहीं कुछ होता है।
बेपरवाह हुआ सा रक्षक न जाने क्यों सोता है?
स्तम्भ सभी उम्मीदों के मोम सरीखे पिघले क्यों?
बदल रहें हैं रोज कैलेंडर और नहीं कुछ बदले क्यों?

जाति धर्म के कल के लफड़े अब भी यहाँ पर होते हैं।
और सियासतधर्मी उनके बीज निरन्तर बोते हैं।
समरसता के मंजिल हमको दिखते आज भी धुँधले क्यों?
बदल रहें हैं रोज कैलेंडर और नहीं कुछ बदले क्यों?

उम्मीदें हैं हम सबकी नववर्ष नया कुछ लायेगा।
मिट जायेंगे सभी अँधेरे ऐसा दीप जलायेगा।
पर आशा के जुगनू सारे दिखते हमको धुँधले क्यों,
बदल रहें हैं रोज कैलेंडर और नहीं कुछ बदले क्यों?

■■

अमलेन्दु शुक्ल
सिद्धार्थनगर उ०प्र०

मनहरण घनाक्षरी छंद

१

आइए सुविज्ञजन, सुनिए कहानी इक
झाँसी वाली रानी जैसी वीर एक नारी की

लड़ती है हर पल ,जिन्दगी के रण में जो
पर हर हाल में ही, पूरी जिम्मेदारी की

घूँट पी के लहू के जो ,दिन-रात खटती है
अपनों ने तानों की उसी पे बमबारी की

सर को झुकाया नहीं,मान झुठलाया नहीं
जब भी अन्याय हुआ,जंग सदा जारी की

२

बुरी कामनाओं का समूल नाश कीजै प्रभु
काम, क्रोध, लोभ आदि पे प्रहार कीजिये

पाप के कलाप का प्रलाप दिन-दिन बढ़े
एक बार फिर गीता का प्रसार कीजिये

हा-हा कार घनघोर,मच रहा हर ओर
सबका कन्हैया आप ही उद्धार कीजिए

अपने ही अपनों के शत्रु हुए जा रहे हैं
हृदयों से अब दूर कुविचार कीजिये

■■

कामना मिश्रा
कलाप-- समूह,
मिश्रित कार्य, इवेंट

युद्ध

नहीं चाहिए युद्ध, कहते हैं गौतम बुद्ध
किसने इसे पुकारा है जमीन पर उतारा है
कितने हुए बेघर और कितनों को बेमौत मारा हैं
जीवन को रखो निर्मल व शुद्ध
नहीं चाहिए युद्ध, कहते हैं गौतम बुद्ध

महत्वकांक्षी आएं मेरी भी है शायद तुम्हारी भी हैं
करेंगे पूरी मिल बैठकर झांठ कर बांट कर
मिटायेंगे दूरियां दिलों की आपस में बैठकर
ना करेंगे तबाही अपने स्वार्थ और स्वाभिमान के लिए
करेंगे काम देश के निर्माण के लिए
आम जनता के समान आयुष्मान के लिए
करो ऐसे काम और बन जाओ प्रबुद्ध
नहीं चाहिए युद्ध कहते हैं गौतम बुद्ध

लगता है समय चीजों को बनाने में
फसलों को उगाने व पकाने में
नौनिहालों को नौजवान बनाने में
और नौजवानों को देश प्रेमी बनाने में
बस क्षणिक आत्म उल्लास के लिए
कुछ ही समय लगता है सब को मिटाने में
करके तपस्या जहान बनाया है सभी कुछ इस में समाया है
ना करेंगे नष्ट इसको कर ले मन को शुद्ध
नहीं चाहिए युद्ध कहते हैं गौतम बुद्ध

अगर हो गया युद्ध कुछ नहीं बच पाएगा
सब हो जाएगा नष्ट अंधकार छा जाएगा
बिछड़ जाएगा मां का लाल और शहीद हो जाएगा
कोई पति अपनी पत्नी से ना मिल पाएगा
क्या होगाउन मासूमों का जिनका मूल अधिकार छिन जाएगा
बिना किसी गलती के उन सब का भविष्य मिट जाएगा
कल्पना करके रोता है मन दिल होता है छूवध
नहीं चाहिए युद्ध कहते हैं गौतम बुद्ध

उजड़ी चीजों को बस आने में समय लगता है
गिरी इमारतों को बनाने में समय लगता है
बिखरे हुए गांव को बस आने में समय लगता है
नहीं मिलता इंसान का जीवन बाजार में
इंसान का जीवन बनाने में समय लगता है
चलो मिल बैठे खोल दे दुश्मनी की गांठे
मिलकर बनाएंगे नई दुनिया करके आत्मग्लानि को शुद्ध
नहीं चाहिए युद्ध कहते हैं गौतम बुद्ध

– **एल सी कुमार**
सहायक महाप्रबंधक
एनएमडीसी भारत सरकार का उपक्रम,
दोणिमलै, बेल्लारी, कर्नाटक

मैं दीवार हूँ उसके घर की

मैं दीवार हूँ उसके उसके घर की
खड़ी-खड़ी देखती रहती हूँ उसे
उसकी हरकतों को
उसकी चाल-ढाल को
उसकी बेहाल जिंदगी को
उसे पल-पल हारता
उसे अपने आप से भागता।

लेकिन कुछ महीने
पहले तक वो ऐसा नहीं था
शीशे में देख कर खूब मटकता था
जब भी किसी से मिलता
वो खूब चहकता था।

पता नहीं कुछ महीनों से
सोता ही नहीं
थोड़ा मुस्कुरा दे
ऐसा होता ही नहीं।

जैसे उसने अपने हाथ में
बहुत सारी हवा दबा रखी है,
पता नहीं कहाँ से पकड़ लाया
मानों एक सजा दबा रखी है।

दीवार हूँ सब देखती हूँ।
उसके पास केवल कुछ
जंगल वाले बगीचे बचे हैं,
जैसे ही चलता है
गलीचे में काँटे लगते हैं
और फिर दौड़ कर अपने सोफे
पर बैठ जाता है,
पता नहीं कहाँ से इतनी रेत लाता है।

चुप रहना, बेमन होना
भीड़ में अकेला होना
अकेलेपन में और अकेला
दर्द बगैर नासूर के
गहरा होना।
ये सब उसमें पनपता है

मन उदास है बस यही लगता है।
ये सब क्या है? क्यूँ नींद हवा है
अब हवा में वो नशा-सा नहीं लगता उसे।

एक दो दोस्त आये थे पिछले हफ्ते
उसके साथ बालकोनी में सिगरेट पी,
मेरे हाथ होते तो रोक देती
कहती ये धुआँ तुझे और जलाता है,
तू कमजोर है इसका हर कश बताता है।

वो बहुत प्यारा है हमेशा से
मेरी बराबर वाली नीली दीवार
उसे बहुत पसंद थी
पिछले साल उसने मेरे पर भी
पीला-सा वह्लपेपर लगाया था

अब ना वो नौजवान रहा, ना ही वैसा रंगीन
उसका मन बूढ़ा होता जा रहा है
वो धीरे धीरे चलता है
बोझिल होता जा रहा है

लगता नहीं कोई उसके पास है
साँस लेने की कहाँ कोई आस है
आस है कि कोई समझेगा
मिलेगा, बात करेगा।

पूरे तीन महीने से
हँसता है, मुस्कुराता नहीं।
हृदय में एक भय-सा है
अपने आप को भी बताता नहीं।

रात भर जागता रहता है
उँगलियों में जैसे धागा हो
उसमें उलझता उलझाता रहता है।
यूँ तो सूरज आता है खिड़की से
सभी के लिये शायद पूरा
इस घर में आधा दिन ही बना पाता है।

मन, मन उदासी में सना है
सना है अकेलेपन के मेले में
इतने सारे लोग दिखाई देते हैं
लेकिन वो बस अकेला है अकेले में।

रोज कल से ज़्यादा
ज़्यादा निकम्मा हो रहा है
बेचारे का कुछ करने का दिल नहीं करता
कुछ कहने का दिल नहीं करता

डॉक्टर साहब आये थे
बोले तुम बीमार हो रहे हो
क्यूँ खुद से इतनी
जल्दी हार रहे हो

लो ये नयी दवाई है
खास मँगवाई है
कल से तुम्हारी बर्विमिम बंद
भई कैफीन होता है it won^t help

कल बहन आयी थी
सर की मालिश की उसने
कुछ क्षण तो अच्छा लगा
फिर शिकन होने लगी माथे पर
दीदी आप रहने दो, I am good
और वो अंदर वाले कमरे में चला गया।
मम्मी, भाई वे सब फुसफुसाते रहे
परेशान है - ऐसा बताते रहे।

कल सुबह फिर डह्क्टर साहब मिलने वाले हैं
कैसे जीवन में झांकना है बताने वाले हैं
मेरा दोस्त भी उनसे मिलकर
कुछ दिनों से थोड़ा बेहतर हो जाता है

काश! मैं उसे अपनी गोद में बिठा पाती
थपकियों के साथ सुला पाती
मेरी ज़ुबान होती तो बात करती उससे
थोड़ा हँसती और हँसाती उसे।

सुनों आप मेरे घर आओ ना
एक बार बैठो बात करो उससे
हो सके तो बाहर समुंदर किनारे ले जाओ
इस नौजवान को नयी लहर दिखाओ,
इस नौजवान को नयी लहर दिखाओ।

■■

आशीष मिश्रा
लंदन

सुर साम्राज्ञी लता दीदी एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व : आपको न भूल पाएंगे

‘‘कल भी सूरज निकलेगा,
कल भी पंछी गाएंगे ,
सब तुझको दिखाई देंगे ,
पर हम ना नजर आएंगे ।’’

गीत की कर्णप्रिय मधुर आवाज अनंत में विलीन हो गयी । हम सबकी प्रिय , सबके दिलों पर राज करने वाली स्वर साम्राज्ञी देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से विभूषित आदरणीय लता मंगेशकर दीदी का अकस्मात चले जाना एक युग का अवसान है । लता दीदी ने अपना संपूर्ण जीवन मां वीणापाणी की पुत्री के रूप में स्वर साधिका के रूप में व्यतीत किया । स्वर कोकिला के जीवन का सफर प्रारंभ से ही संघर्षपूर्ण रहा। परंतु संघर्ष ही व्यक्ति को ऊंचाइयों तक ले जाने में सीढ़ी का काम करता है । कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी ने सत्य ही कहा है:-

‘‘जितने कष्ट कंटकों में है,जिसका जीवन सुमन खिला ।
गौरव गंध उन्हें ही उतना, यत्र तत्र सर्वत्र मिला ।

लता जी का जीवन संपूर्ण मानव जाति के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत के समान है । लगभग ८ दशकों तक देश की ५ पीढ़ियों ने लता जी को सुनकर अपने दिलों पर राज करवाया है । लता जी के निधन से गीतों का संसार अचानक से सूना लगने लगा। सुर साम्राज्ञी के निधन से केवल भारतवर्ष ही नहीं समूचा विश्व अपनी अश्रुधारा नहीं रोक सका । हर ओर उनके गाये एक गीत की आवाज गुंजायमान होने लगी... मेरी आवाज ही पहचान है२. गर याद रहे ।

ऐसा लगा कोई अपना अपने बीच से चला गया है । चीन के साथ १९६२ के युद्ध के बाद १९६३ में सैनिकों के बीच लताजी ने ‘ऐ मेरे वतन के लोगों! जरा आंख में भर लो पानी’ गाकर सुनाया था तो वहां प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की आंखें भी भर आईं थीं । बचपन में जब स्कूल में पंद्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी के दिन ”ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी“ गाना बजता था, तो शरीर में एक अलग सी सिहरन पैदा हो जाती थी ।

२४ अप्रैल १९४२ को जब वे केवल १३ वर्ष की थी तभी उनके पिता का साया परिवार से उठ गया था । इस छोटी सी उम्र में परिवार की सारी जिम्मेदारी लता जी के कंधों पर आ गई । परिवार में उनकी तीन बहनें मीना जी, आशा जी, और उषा जी थीं और उनके एक भाई हृदय नाथ जी थे ।

१२ वर्ष की छोटी सी उम्र में १६ दिसंबर १९४१ को पहली बार लता ने स्टूडियो में माइक के सामने गाना गाया था उनका मानना था कि वे और अच्छा गा सकती हैं । उन्हें अपने गानों से कभी संतुष्टि नहीं हुई । उन्हें तो यही लगता रहा कि और भी अच्छा गा सकती थीं ।

स्वर्गीय लता मंगेशकर जी पर ‘लताः सुर-गाथा’ जीवनी के लेखक यतीन्द्र मिश्र जी ने स्वर कोकिला की कहानी में उनके जीवन के इस प्रसंग को उल्लिखित करते हुए लिखा है-‘‘

ये वो दौर था जब लगा मंगेशकर जी पार्श्व गायन के लिए संघर्ष कर रही थीं, ये वाकया १९४४-४५ का रहा होगा। जब लता मंगेशकर की उम्र मुश्किल से १४-१५ साल की होगी। इस वक्त उन्होंने ये हसरत पाल ली कि उनका नाम रेडियो पर प्रसारित हो। उस दौर में रेडियो पर एक कार्यक्रम आता था, ‘आपकी फरमाइश’ जिसमें गाने सुनाए जाते थे। साथ ही, गीत की फरमाइश करने वाले का नाम भी पुकारा जाता था। लता जी के मन में ये हसरत हुई कि मैं भी अपना नाम रेडियो पर सुनूं। इसके लिए उन्होंने गजल की महान अदाकारा बेगम अख्तर साहिबा की एक गजल चुनी, ‘दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे’ उन्होंने रेडियो को लिखकर भेजा कि ये गाना सुनना है। इसके बाद वो रोज रेडियो चलाकर बैठती थी कि कब ये गाना सुनाया जाएगा। कई हफ्ते बाद, एक दिन अचानक रेडियो पर उनका नाम अनाउंस हुआ कि लता मंगेशकर ‘दीवाना बनाना हे तो बनाना बना दे’ गजल सुनना चाहती है। गजल सुनने से ज़्यादा अभिभूत लता जी अपना नाम सुनकर हुई थीं...

उन्होंने बताया कि इस छोटे से संस्मरण से एक नवोदित कलाकार के मन के भाव छिपे हुए हैं। हालांकि बहुत जल्द ही लता मंगेशकर के नाम एक गायिका के तौर पर पहले रेडियो फिर दूरदर्शन पर छा गया था, पर पहली बार रेडियो पर अपना नाम सुनने सुनने में जो रोमांच महसूस हुआ था वैसा रोमांच फिर दोबारा कभी नहीं हुआ।‘‘

यतीन्द्र जी के इस संस्मरण से पता चलता है कि उनके अंदर कुछ कर गुजरने का जज्बा और तमन्ना बचपन से ही थी यह रूचि, जज्बा यदि आज के युवा भी अपने जीवन में अपना लें और करियर के तौर पर अपनी रुचि को चुनें तो तरक्की निश्चित है। अपने जीवन को समाज के लिए समर्पित कर सकते हैं और अपनी रुचि को करियर के रूप में भी समाज के सामने ला सकते हैं । लता जी के विषय में एक घटना का उल्लेख और करना चाहूंगी लता जी अकेले में घंटों रियाज करती थीं । उनका मानना था कि यदि व्यक्ति को अपना काम आता है तो वह बहुत तरक्की कर सकता है उनमें सीखने की बड़ी ललक रही है । एक गाने में पवन शब्द को लेकर कि वह स्त्रीलिंग है या पुल्लिंग, इस पर उन्होंने काफी लंबा विमर्श किया था। इससे पता चलता है कि उन्हें केवल गाने में ही नहीं बल्कि शब्दों के स्वरूप पहचानने में भी गहरी रुचि थी । वे जानना चाहती थी कि पवन यानी हवा चलती भी है, पवन नाम का इंसान भी होता है और पवन देवता भी हैं इससे समझ आता है कि वे अपनी गायकी में भाव उड़ेल देना चाहती थी । इसलिए उन्हें जो भी गाना गाने को मिला उन्होंने उसे बड़ी खूबसूरती के साथ गाया ।

उनके जीवन से एक बात और सीखने वाली है कि वह जब तक रिकहर्डिंग नहीं करती थी जब तक उन्हें अपने गले से संतुष्टि ना हो जाए और यदि उन्हें संदेह होता था तो वह निर्माताओं को सीधे फोन कर देती थीं कि कृपया उन्हें माफ कर दें आज रिकहर्डिंग नहीं कर सकती । इस प्रकार सुरों की मलिका अपनी जीवन शैली से भी सभी के दिलों पर अपनी अमिट छाप छोड़ गई हैं । आपकी कर्णप्रिय गायकी हमारी पूंजी है, जिन्हें युगों युगों तक सुना और सुनाया जाएगा । आपको विनम्र श्रद्धांजलि...

‘‘तुम तो गाकर मौन हुए ओ गाने वाले,
किंतु अभी तक गूंज रहा है गीत तुम्हारा ।’’

■■

डॉ. दीप्ति गौड़
शिक्षाविद व साहित्यकार,
ग्वालियर मध्यप्रदेश, भारत
हिन्दी की गूंज पत्रिका
प्रतिनिधि भारत,
सदस्य जापान हिन्दी कल्चरल सेन्टर,
टोक्यो
(वर्ल्ड रिकॉर्ड पार्टिसिपेंट)
अवार्ड से सम्मानित।

संत साहित्य को रामानंद के शिष्यों का योगदान

संत साहित्य धारा में गुरु रामानंद के शिष्यों के योगदान पर चर्चा करने से पूर्व हमें हिंदी साहित्य में उस युग की पूर्वपीठिका एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि जांचनी होगी, क्योंकि आदिकाल में शास्त्र और काव्य अलग -अलग बँटे हुए राज्यों -दरबारों तक सीमित था। उस समय की अधिकतर रचनाएं वीर गाथाओं और ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित हैं, जिनमे कवियों ने अपने आश्रयदाता का गुणगान और उनकी वीरता का यशोगान किया। लेकिन इसी के समानांतर लोक जीवन में जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य के 'अवहट्ठ ' में रचने के साथ लोक साहित्य धारा भी अनवरत बह रही थी। जिस में जहाँ अमीर खुसरों जैसे जनकवि हुए, जिन्होंने खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाया। तो वहीं पूर्वी क्षेत्र में मैथिली के कवि विद्यापति राजतंत्र की बेड़ियों से निकल 'देसी बयना 'में शिव स्तुति कर रहे थे, जिनके भक्ति पद वहां के जनजीवन में आज भी नचारियों के रूप में विद्यमान हैं। इस प्रकार हिंदी भाषा ने भी स्थान और काल के भेद से अपनी दीर्घ यात्रा में अनेक रूप धारण किये, किन्तु इन सब में तात्विक समानता विधमान है। इसी परिप्रेक्ष्य में हमें यह भी देखना होगा कि तेरहवीं सदी तक श्रव्य और स्मृति ही वाणी के संचयन का माध्यम था एवं कागज के आविष्कार के बाद ही उस पर कलम से लेखन अभिव्यक्ति का माध्यम बना। संभवतः उसी सन्दर्भ में संत कबीर की उक्ति का अर्थ निहित है -'मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहि नहिं हाथ। ' कहने का तात्पर्य यह है कि प्राचीन काल से ही संत कवियों की वाणी के अजस्र प्रवाह को श्रमण संस्कृति से ही बल और बढ़ावा मिला। जिन का मूल उद्देश्य व्यक्तिगत उत्कर्ष के निमित्त आध्यात्मिक आधार लेना था, जिससे एक नयी साहित्यिक परम्परा का सूत्रपात हुआ। और कालांतर में इस संत काव्य धारा ने 'बहुजनहिताय 'की ओर मोड़ ले लिया, जिसमे वैदिक आदर्श 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की ध्वनि प्रतिध्वनित थी। अगर हम उस युग के संत साहित्य की पूर्वपीठिका पर नजर डालें तो पाएंगे कि तब विदेशी तथा विजातीय मुस्लिम आक्रमणकारियों के कारण प्रबुद्ध लोगों का ध्यान आत्म निरीक्षण और परिस्थिति परीक्षण की ओर आकृष्ट हुआ। लेकिन ये संत भयभीत होने की अपेक्षा आत्म रक्षार्थ उपाय करने लगे और सुरक्षा हेतु इन्होने आम जनता के बीच पैठ बनाकर उन्हें अधिक सचेत और सजग किया। इस लोक चेतना का एक परिणाम लोक भाषाओं के प्रयोग के रूप में लक्षित हुआ और वह मनोभावों और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनने लगी। जिससे अपभ्रंश से विकसित होती हुई लोक भाषाओं को शास्त्रीय बंधनो और शास्त्र के नियमों तथा दरबारी कायदे -कानूनों से मुक्त हो अभिव्यक्ति की आजादी मिली। इसके साथ मौखिक परम्परा की स्तरीय रचनाओं को भी लिपिबद्ध कर, उन्हें सुरक्षित रखने की प्रवृति बढ़ने लगी। लेकिन शास्त्रीय परम्परा के समर्थकों द्वारा इनकी भाषा के अनगढ़पन को लेकर 'ग्राम्य दोष ' ढूंढा जाने लगा एवं आचार्यों द्वारा तब इन कवियों को असहमति और आक्रोश का सामना करना पड़ा। किन्तु इनकी भाषा परिमार्जित और परिष्कृत न होने पर भी इन विषयों के लोकप्रिय होने के कारण, उनकी भाषा और शैली की सादगी से भक्ति प्रवाह में कोई बाधा नहीं पहुँची। बल्कि ''जनजीवन की उपेक्षित अनुभूतियों को भी अभिव्यक्ति मिलने लगी थी, जिससे लौकिक वर्ण्य विषयों का स्वर मुखर होने लगा था। इस काल में लोक गीतों और लोक -कथाओं को यथेष्ट सम्मान मिलने लगा और लोक प्रचलित एवं परिचित दृष्टांतों, रूपकों, प्रतीकों तथा लोकोक्तियों को भी यथायोग्य स्थान दिया जाने लगा।''(आचार्य परशुराम चतुर्वेदी-भक्ति काल:पूर्वपीठिका- हंदी साहित्य का इतिहास) ,

उपरोक्त परिस्थितियों में जिन कवियों ने अपनी वाणी से लोक कल्याण का कार्य किया, वे संत कहलाये। वस्तुतः 'संत ' शब्द की व्युत्पति 'सत 'से हुई है, जिसका का अर्थ है - परम धार्मिक साधु व्यक्ति, जो परोपकारी, पवित्रात्मा होता है। यह अंगरेजी के 'सैंट 'के समानार्थ ही है एवं संत श्रद्धा, क्षमा, दया, विवेक का पुंज एवं चरित्र से त्यागी और आचरण से महात्मा होता है। हिंदी साहित्य में उनके योगदान को रेखांकित करने के लिए, हमें संत साहित्य परम्परा को जानने के साथ गुरु रामानन्द और उनके शिष्यों के विषय में पूर्ण जानकारी लेनी होगी। क्योंकि गुरु रामानदं के प्रभाव और प्रेरणा से ही इनके शिष्यों ने अपने काव्य में भक्ति और ज्ञान का, निर्गुण और सगुन का, भाषा और संस्कृति का, पुराण और काव्य का, भाव और विचार का, गृहस्थ और वैराग्य का विराट समन्वय या सम्मिश्रण किया। यद्यपि योगियों और मुनियों के सान्निध्य में संत साहित्य की शुरुआत आदिकाल से ही हो गयी थी और डह्क्टर रामकुमार वर्मा का मत है कि नाथ पंथ से ही भक्तिकाल के संत मत का विकास हुआ था, जिसके प्रथम कवि कबीर थे। (हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास) हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान श्री राहुल सांस्कृत्यायन ने नाथ पंथ को सिद्धो की परम्परा का ही विकसित रूप माना है, जिसको चलाने वाले मत्स्येन्द्रनाथ तथा गोरखनाथ माने गए हैं। इसी तथ्य को आचार्य हजारी प्रसाद दिवेदी ने भी भाव, विचार तर्क पद्धति, भाषा -शैली आदि के आधार पर यह सिद्ध किया की हिंदी का संत काव्य पूर्ववर्ती सिद्धो व् नाथ पंथियों के साहित्य का सहज विकसित रूप है। उन्होंने अत्यंत सशक्त स्वरों में उद्घोषित किया कि जब भारत की धरती पर इस्लाम की छाया भी नहीं पडी थी, दक्षिण के वैष्णव भक्तों में भक्ति अपने पूर्ण वैभव के साथ विधमान था। इसी कथन की पुष्टि हमें संत कबीर के इस दोहे से मिलती है -

भक्ति द्रविड़ उपजी लाये रामानंद ,
प्रकट किया कबीर न,सात दीप नौ खंड। '

हिंदी साहित्य के इतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गुरु रामानंद को पूर्व मध्यकाल में भक्तिकाल की सगुन धारा की रामभक्ति शाखा में महाकवि तुलसीदास से पहले स्थान दिया है, जबकि इनके संत शिष्यों का निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा में उल्लेख है। उनके शब्दों में ,''रामानुज सम्प्रदाय में दीक्षा केवल द्विजातियों को दी जाती थी, पर स्वामी रामानंद ने राम भक्ति का द्वार सब जातियों के

लिए खोल दिया।'' आचार्य शुक्ल के अनुसार गुरु रामानंद जी के रचे हुए केवल दो संस्कृत ग्रन्थ मिलते हैं –वैष्णव मताब्ज भास्कर और श्रीरामार्चन –पद्धति। और हिंदी में उनके विनय और स्तुति के पद ही हैं, जिनमे हनुमान जी की आरती विख्यात है – 'आरति कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।' लेकिन डॉक्टर नगेन्द्र के 'हिंदी साहित्य के इतिहास ' में गुरु रामानंद को निर्गुण भक्ति धारा में भी प्रथम स्थान दिया और सगुन भक्ति काव्य की हिंदी रामकाव्य परम्परा में भी सबसे पहले रखा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि उस युग में गुरु रामानंद का प्रबुद्ध व्यक्तियों पर अमिट प्रभाव पड़ा, जिन्होंने निर्गुण –सगुन दोनों धाराओं के विकास में अहम् भूमिका निभाई। नाभादास के 'भक्तमाल 'के अनुसार ये रामानुजाचार्य की शिष्य परम्परा के चतुर्थ शिष्य थे एवं इनके अनेक शिष्य –प्रशिष्य हुए और फिर इसी आधार पर इनके शिष्यों का उल्लेख और आकलन किया गया। किन्तु इनकी शिष्य परम्परा को जानने से पूर्व हमें गुरु रामानन्द के व्यक्तित्व के विषय में सम्पूर्ण जानकारी देनी होगी, जिन के प्रभाव से उस युग में संत मंडली को नयी दशा और दिशा मिली। एक विद्वान के शब्दों में,'' रामानंद बड़े उदारचेता मनस्वी थे, जिन्होंने सामाजिक हीनता और असमर्थता की भावना को समूल नष्ट कर साधना का ऐसा भव्य एवं विशाल मंदिर निर्मित किया, जिसके द्वार सबके लिए उन्मुक्त थे। ''('संत काव्य – डॉक्टर त्रिलोकीनारायण दीक्षित)

गुरु रामानंद अपने युग के सर्वाधिक यशस्वी साधक एवं प्रगतिशील विचारक थे तथा संत मत के प्रचार एवं प्रसार का श्रेय इन्हीं को है। संतों की काव्यधारा में इनके अपने शिष्यों के अतिरिक्त गुरु नानक देव एवं अन्य सिख गुरुओं का नाम भी बहुत प्रसिद्ध है, जिनकी वाणियों और सबदों को 'ग्रन्थ साहिब 'में संकलित किया गया। इनके अलावा जम्भनाथ, हरिदास निरंजनी, लालदास, दादूदयाल, मलूकदास, सुन्दरदास, बाबालाल आदि संतों का भी भक्ति काव्य धारा में प्रमुख स्थान है। इनके अलावा कुछ अन्य पुरुष संतों में धर्मदास, सदना, बेनी, शेख फरीद,एवं महिला संतों में बावरी साहिबा इत्यादि का भी नाम भी गौण रूप में आता है और जिनका हिंदी साहित्य में अहम् योगदान है। उपरोक्त संतों के नाम गुरु रामानंद की शिष्य सूची में शामिल न होने पर भी किसी न किसी रूप में सब पर उनके उपदेशों का प्रभाव पड़ा और जिन्होंने उस काल की साहित्यिक धारा को कालजयी मोड़ दिया। इस प्रकार भक्ति काल के पूर्वार्ध और उत्तरार्द्ध में भी यह संत परम्परा निरंतर वेगवान रही, जो प्रेमाश्रयी, रामभक्ति और कृष्णभक्ति धारा के समकक्ष सशक्त और समृद्ध होकर बहती रही। अगर हम गुरु रामानंद की शिष्य मंडली की बात करें तो उन्होंने निम्न जातियों के साथ महिलाओं को भी भक्ति के वितान में समान स्थान दिया। उन्हें द्वादश महाभगवत के नाम से जाना जाता है, जिसमे तत्कालीन कबीरदास, रैदास, सेन नाई,पीपा जैसे निर्गुणवादी संत थे, तो अवतारवाद के पूर्ण समर्थक ,मूर्ति पूजा करने वाले अनंतानंद, भावानंद, सुरसुरानंद, नरहर्यानंद जैसे वैष्णव ब्राह्मण सगुणोपासक आचार्य भक्त भी। उसी परम्परा में कृष्णदास जैसे तेजस्वी साधक और गोस्वामी तुलसीदास जैसे विश्व विख्यात महाकवि भी शामिल हैं। किन्तु इस लेख में हम गुरु रामानंद के शिष्यों में सिर्फ निर्गुण धारा या संत काव्य धारा के कवियों का ही उल्लेख करेंगे।

वास्तव में गुरु ही अपने शिष्यों को वह चेतना और ज्ञान प्रदान करता है, जो अपने काल, स्थान और परिस्थिति का सही आकलन कर सकें। गुरु उनको वह दृष्टि देता है, जिससे उन्हें वह दिखाई दे, जो वाकई सच होता है। यही सत्य गुरु रामानंद और उनके शिष्यों के विषय में कहा जा सकता है, जिनका स्वर उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था के प्रतिरोध में उठा। इनका आर्विभाव काल चौदहवीं शताब्दी का अंतिम चरण माना जा सकता है और नाभादास के मत से गुरु रामानन्द दशधा भक्ति के आगार थे। दशधा भक्ति के प्रचार के साथ ही उन्होंने ज्ञान मार्ग का भी उपदेश दिया। अपने गुरु राघवानन्द से प्राप्त भक्ति और ज्ञान की पृष्ठभूमि में उन्होंने 'रामावत –सम्प्रदाय 'का प्रवर्तन किया। तीर्थ यात्रा, मूर्तिपूजा, वेदादि धर्म ग्रंथों एवं उपासना के बाह्य साधनों की आलोचना करते हुए, उन्होंने अन्तःसाधना का मार्ग प्रशस्त किया। इसके अतिरिक्त इनकी धारणाओं में उनका आध्यात्मिक और साधनात्मक पक्ष भी प्रगतिशील और वैज्ञानिक है, वह किसी एक विचारधारा या मतवाद में नहीं बंधा था। इन्होने वैष्णवों की भक्ति भावना, सिद्धों –नाथों की साधना और शंकराचार्य के अद्वैतवाद का जो समन्वयात्मक दृष्टिकोण रखा, उससे साहित्य और समाज में समानता और समरसता पनपी। इसी कारण संत कबीर ने अपने गुरु से प्रेरणा ग्रहण कर साधना और भक्ति को सभी वर्णों और वर्गों के लिए समान और सुलभ बनाया। काशी में गंगा की सीढ़ियों पर मुंह अँधेरे कबीर पर गुरु रामानंद के पैर पड़ने की कथा विश्व विख्यात है, जिसके उपरान्त उन्हें गुरु दीक्षा प्राप्त हुई। और इसमें कोई संदेह नहीं है कि कबीर को 'राम नाम ' गुरु रामानंद जी से ही प्राप्त हुआ। पर आगे चलकर कबीर के 'राम 'रामानंद के राम से भिन्न हो गए एवं कबीर के राम धनुर्धर साकार राम नहीं रह गए, वे ब्रह्म के पर्याय हुए –

दसरथ –सूत तिहुँ लोक बखाना।
राम नाम का मरम है आना।

सारांश यह है कि कबीर में ज्ञान मार्ग की सभी बातों का संचय रामानंद जी के उपदेशों से हुआ, जिसे वे आचरण और अनुसरण के लिए संदेश के रूप में सुझाते भी हैं –' कर्मक रेख मिटावो संतो, कर्मक रेख मिटावो।' जैसा कि प्रसिद्ध है, वे पढ़े –लिखे न थे, अतएवं माया, जीव, ब्रह्म, त्रिलोटी इत्यादि का परिचय उन्हें गुरु द्वारा ही हुआ। अनंतदास द्वारा लिखित 'परिचई 'और प्रियादास के 'सटीक भक्तमाल 'के अनुसार संत रैदास को भी स्वामी रामानंद ने दीक्षा दी थी, किन्तु उन की रचनाओं में उनका उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन उनकी एक उक्ति में 'नामदेव कबीर तिलोचन सधना सेन तरै 'से सिद्ध होता है कि वे कबीर के बहुत पीछे स्वामी रामानंद के शिष्य हुए। संत रैदास का नाम धन्ना और कवियित्री मीराबाई ने बड़े आदर से साथ लिया और इन्हे अपना गुरु मानकर

इन्होने भी बाह्य विधानों का विरोध कर आंतरिक साधना पर बल दिया। निम्न वर्ग में समुत्पन्न होकर भी उत्तम जीवन शैली, उत्कृष्ट साधना पद्धति तथा उल्लेखनीय आचरण के कारण संत रैदास आज भी भारतीय धर्म साधना के इतिहास में सादर स्मरण किये जाते हैं। संत पीपा भी पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में विधमान थे, यधपि इनकी रचनाये अनुपलब्ध हैं। लेकिन संत कबीर की जीवनी का उल्लेख 'श्री पीपा की वाणी 'में मिलता है। ये खीची -वैध के राजपूत गृहस्थ थे और इन्होने भी स्वामी रामानन्द से दीक्षा ली थी। संत सेन जाति के नाई थे और गुरु रामानंद के शिष्य थे। नाभादास के भक्तमाल में इनकी निष्ठा और साधना की प्रसंशा की गयी है ,किन्तु अधिकाँश संतों की भांति इनकी रचनाएं भी सुलभ नहीं हैं। संत धन्ना जाति के जाट थे और बाल्य अवस्था से ही भगवान् में अनुरक्त थे। भक्तमाल में इनका उल्लेख उच्च कोटि के साधक के रूप में हुआ है, जिन्होंने निरहउँ साधना पर बल देते हुए बाह्यचारों की निंदा की है।

गुरु रामानंद के शिष्यों के संत साहित्य में योगदान का लेखा -जोखा करने से पूर्व हमें संस्कृत भाषा के साहित्य के उन मानदंडों की भी बात करनी होगी, जिन्हे उत्कृष्ट काव्य की कसौटी मान लिया गया था। प्राचीन काल में काव्य शास्त्रीय परम्परा का सूत्रपात द्वितीय शताब्दी में भरत के नाट्यशास्त्र से माना गया एवं आगे चलकर अन्य आचार्यों ने भी इन का अनुसरण किया। जिनमें उत्कृष्ट काव्य रचना के लिए जहाँ भाव का मनोरम होना अनिवार्य है तो वहां उसकी व्यंजना शैली का सशक्त और प्रभावशाली होना अनिवार्य है। यधपि मध्यकालीन भक्ति साहित्य प्राय पद्ममय है और वहां साहित्य 'काव्य 'का पर्याय है। लेकिन संत कवियों का लक्ष्य काव्य -रचना नहीं था, इसीलिए उस कसौटी पर इसे नहीं कसा जा सकता। संत काव्य जन साहित्य है, जिसमें जन भावनाओं को जागृत करने का अथक परिश्रम किया गया। उनकी रचनाओं में जन -जन के हित और उनके उदबोधन की भावना सन्निहित है। इसीलिए संत साहित्य भावात्मक एवं अनुभूतिप्रवण है, उसमे किसी शास्त्र अथवा सिद्धांत के प्रति आग्रह व्यक्त नहीं हुआ है। यह साहित्य अपनी सरलता, जीवन दर्शन की गंभीरता और तत्व बोध के कारण अत्यंत प्रभाव शाली है। इसकी रचना समाज के निम्न अथवा सामान्य वर्ग के कवियों ने की है, जो साहित्य के अध्ययन के स्थान पर आत्मानुभव को प्रधानता देते थे। सत्य का निरूपण, सत्य का विवेचन, एवं सत्य का प्रचार -प्रसार उनकी कविता का मूल लक्ष्य था। सामान्य जनता में सत्य का निरूपण करना, कथनी-करनी में तारतम्य पर बल देना तथा 'नाम' के माधुर्य को जनता तक पहुंचाना ही इनका उद्देश्य था। और जिसके लिए उन्होंने लोकभाषा की आसान शब्दावली प्रयुक्त की, इसीलिए विद्वानों में संत साहित्य की उपलब्ध सामग्री को लेकर सदैव साहित्य-असाहित्य का विवाद रहा है।

चूँकि संत कवि काव्य शास्त्रीय मापदंडों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, इसीलिए इनकी भाषा और साहित्यकता को लेकर प्रश्न उठते रहें है। वास्तव में संत कवि भाषा, व्याकरण आदि के अनुशीलन से वंचित रहे, इसीलिए उनकी काव्य भाषा किलिष्ट और कठिन निर्झर की तरह स्वाभाविक बोलचाल की भाषा है। उनकी भाषा का रूप भी स्थिर नहीं है, लेकिन वह सहज, सरल एवं सरस् है। संत कवि पर्यटनशील थे, अतः उनकी भाषा में विभिन्न प्रदेशों की शब्दावली का सम्मिश्रण अनायास ही है। इसके साथ अरबी -फारसी के शब्द भी आम लोगों की जुबान में शामिल हो गए थे, जिनका मिश्रण स्वाभाविक ही हो गया । इसे हम नयी हिंदी के सन्दर्भ में आसानी से समझ सकते हैं, जिसमे आभासी मीडिया और करोना काल से सम्बंधित सभी शब्द शामिल हो गएँ हैं। यही बात संत काव्य धारा पर लागू होती है, जिसमे तत्कालीन शब्दों को लोक भाषा में ग्रहण कर लिया गया। लेकिन निर्गुण काव्यधारा में खास तौर पर संत कबीर की साखियों एवं पदों में सशक्त अभिव्यंजना, गंभीर रहस्यात्मक उक्तियाँ, प्रभाव शाली प्रतीक और भाषा का स्वाभाविक प्रवाह विधमान है। उनकी यही खिचड़ी भाषा जनसाधारण तक आसानी से पहुँची और इनके पद दैनिक दिनचर्या में शामिल हुए। इन संत कवियों के दोहे और गीत आज भी आम बोलचाल में लोगों की जुबान पर रहते है और बोलचाल में सूक्तियों के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं। इस प्रकार वह लोकप्रिय जनभाषा थी, जिस के माध्यम से अशिक्षित वर्ग के नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षण में बड़ा योगदान है। अतः इस पृष्ठभूमि में यह कहना उचित होगा कि संत काव्यधारा का जो महत्व सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से है, वह साहित्यिक दृष्टि से नहीं। साहित्य की जो लौकिक सीमाएं तथा काव्य शास्त्रीय एवं भाषा वैज्ञानिक स्वीकृतियां हैं, उनमें इस काव्य धारा को नहीं बांधा जा सकता।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, इसीलिए साहित्य का समाज पर अमिट और परिवर्तक प्रभाव माना जाता है। वैसे तो काशी में निवास करते हुए गुरु रामानंद ने मर्यादा पुरुषोत्तम को आदर्श मानकर रामभक्ति मार्ग का निदर्शन किया, किन्तु इनकी शिष्य मंडली में किसी के लिए कोई बंधन न था। इस दृष्टि से संत साहित्य में गुरु रामानंद के सभी शिष्यों का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि इनके काव्य का प्रेरणा स्रोत था -सामान्य मानव का हित साधन। इसीलिए संत कवियों ने समाज कल्याण का मार्ग अपनाया और शोषित तथा प्रताड़ित मानव की भावनाओं का गंभीर चित्रण किया। इस प्रयास में संत कवियों को सफलता भी मिली और उनके अनुयायियों ने अपने पंथों एवं सम्प्रदायों का गठन भी किया।सामाजिक स्तर पर संतों ने पाखंड एवं अंधविश्वासों का पूरी दृढ़ता से खंडन किया। निर्गुण संतों ने तत्कालीन समाज में एक प्रकार की वैचारिक क्रान्ति का उदय किया और परम्परागत रूढ़ि वादिता पर इन्होने गहरा प्रहार किया। मिथ्या आडंबरों के प्रति जैसी अनास्था इन संत कवियों ने व्यक्त की, वैसी न तो पहले कभी कोई समाज -सुधारक कर सका था और न परवर्ती युग में ही किसी का वैसा साहस हो सका। किसी भी धर्म की मिथ्या धारणाओं का खंडन करते समय इन संतों के मन में भय का संचार नहीं था। इस दृष्टि से संत साहित्य में गुरु रामानंद के संत शिष्यों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है, जिनके क्रांतिकारी विचारों का उस युग में उदबोध हुआ। इन्होनें धार्मिक रूढ़ियों और

सामाजिक -सांस्कृतिक परम्पराओं का अन्द्दानुकरण न करके, वर्णाश्रम -व्यवस्था का विरोध किया और क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा आदि दुष्प्रवृतियों की निंदा की। इसीलिए संत कबीर की वाणी में हिन्दू -मुस्लिम दोनों धर्मों के ठेकेदारों को चुनौती दी गयी और तीर्थ स्थलों और मंदिरों की कर्मकांडी व्यवस्था के विरोध में यह दोहा उल्लेखनीय है -

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया कासी जाँणि।
दसवाँ द्वारा देहुरा, तामै जोति पिछाँणि।

उपासना के बाह्य स्वरूप पर आग्रह करनेवाले और कर्मकांड को प्रधानता देनेवाले पंडितों और मुल्लाओं को उन्होंने खरी -खोटी सुनाई और राम -रहीम की एकता समझाई। वे हिंसा के लिए मुसलमानों को बराबर फटकारते रहे - बकरी पाती खाति है ताकी काढ़ी खाल, जो नर बकरी खात हैं तिनका कौन हवाल। “ धर्म के ठेकेदारों और सत्ता की ताकत के बेखौफ विरोध ने संत कबीर को सार्वभौमिक साहित्यिक पहचान दी। उन्होंने मौलवियों और पंडों को चुनौती दी, तो उनकी मुखर और आक्रामक सत्यता के सामने सब बौने हो गए। स्वभाव से विद्रोही कबीर ने स्पष्ट कहा ,“ मैं कहता हूँ आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी। “ इस प्रकार धर्म के क्षेत्र में संकीर्णता के ये घोर विरोधी थे, भक्ति के क्षेत्र में ये कर्मकांड रहित निष्ठा और समर्थन में विश्वास रखते थे। संत कवियों के पास धर्म, दर्शन, भक्ति और चरित्र निर्माण के लिए अपना निजी सन्देश था। संत कबीर ने ‘पंडित और मसालची दोनों सूझें नाहिं, औरन को करै चाँदना आप अँधेरे माँहि,‘ कहते हुए शास्त्र वचन को प्रमाण नहीं माना और चरित्र -विकास के लिए सत्य को जीवन निर्माण की एकमात्र कसौटी कहा।जिसका प्रभाव बीसवीं शताब्दी के युगपुरुष महात्मा गांधी के जीवन सिद्धांतों और आध्यात्मिक मान्यताओं पर पड़ा। इस प्रकार,“शास्त्र की अवहेलना एक कठोर चुनौती थी, लेकिन अनुभूति को प्रमाण मानने से शास्त्र मर्यादा भी शिथिल हो गयी। मानव को परम्परागत रूढ़ शास्त्र -परम्परा से मुक्ति केवल इन निर्गुण संत कवियों की आत्मानुभवमयी दृढ वाणी से ही मिली थी। वस्तुतः ये कवि अपने युग के मिथ्याडंबरों और धार्मिक रूढ़ियों के खोखलेपन से परिचित होकर ही सत्य के उद्घाटन का साहस कर सके। “ (डॉक्टर विजयेंद्र स्नातक -लेख - भक्तिकाल की उपलब्धियां)

उस समय देश और समाज में जाति -वर्ण को लेकर घनघोर घृणा का वातावरण था, धर्म को कर्मकांडों में फंसाकर शासन और लूट का साधन बना दिया था। मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा जबरन धर्मावंतरण करवाने से चारों ओर भय और डर का वातावरण था। यह सभी को विदित है कि संत कबीर जुलाहा जाति के थे और जात -पाँत के कटु आलोचक थे। संत रैदास मृत पशुओं को धोने का पैतृक व्यवसाय करते थे, जिसका उल्लेख करते हुए वे कहते हैं ,‘ कह रैदास खलास चमारा। ‘ गुरु रामानंद के अन्य शिष्य भी निम्न जातियों एवं दलित -वंचित तबके से थे, जो एक ओर अपने समाज के उच्च्य वर्ग का तो दूसरी तरफ विदेशी शासकों का जुल्म सह रहे थे। लेकिन सभी ने गुरु का सहारा पाकर जिस साहस और निडरता से समाज उत्थान के साथ व्यवस्था के प्रशासकों का विरोध किया, वह आज भी सराहनीय है। संत कबीर ने साफ -साफ कह दिया था - ऊँचे कुल क्या जनमियाँ, जे करणीं ऊंच न होइ। ‘ और फिर सबके सम्मुख अपनी उसी खोज की तथ्यता प्रकट कर उसे कसौटी पर कसा और सत्यता प्रस्तुत की। जिस वर्ण -जाति के कारण कई स्थानों पर आज भी छुआछूत का रवैया अपनाया जाता है, और आरक्षण के लाख प्रयासों के बावजूद भी ये जातियां समाज के हाशिये पर ही पडी है। तो पांच -छह सौ साल पहले यह अश्पृश्यता इतनी घनी भूत थी, जिससे समाज में घृणा और भय का माहौल फैला हुआ था। वर्ण व्यवस्था में सबसे अधिक व्यथित मेहनत करने वाले बुनकर, दस्तकार और शिल्पकार थे, तो श्रमिक वर्ग में किसान, कुम्हार, जुलाहा, नाई, धोबी, लुहार, बढ़ई, भिश्ती, चमार और भंगी इत्यादि लोगों की जातियां भी गरीब और दुखी थी। इन्ही को लक्षित करके संत कबीर ने उद्घोषणा की -

संतन जात न पूछो निर्गुणियाँ।
साध ब्राह्मण साध छत्तरी, साधै जाती बनियाँ।
साधनमाँ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियाँ।
साधै नाऊ साधै धोबी, साध जाति है बरियाँ।
साधनमाँ रैदास संत हैं, सुपच ऋषि सो भंगियाँ।
हिन्दु -तुर्क दुइ दीन बने हैं, कछु नहीं पहचनियाँ।

वस्तुतः हमारी अविकसित सामाजिक चेतना मानवीय श्रम और श्रमशील जनता को गरिमा व् सम्मान देने को तैयार नहीं हैं। और वर्ण व्यवस्था सामाजिक श्रम के अपहरण का ही एक रूप है, जो भारतीय व्यवस्था में जन्म से कर्म को निर्धारित करती है।ऐसे में संत रविदास और उनके सहयात्री संतों ने दुनिया में प्रेम की महत्ता बताई और घृणा, वैमनस्य व् क्षुद्रता का प्रतिपाठ रचा। इन संतों ने दलित को यह विशवास दिलाया कि वह अश्पृश्य एवं त्याज्य नहीं, बल्कि ईश्वर के सबसे करीब है। जहाँ संत कबीर ने भी ईश्वर की सर्व व्यापकता सिद्ध करते हुए साफ कहा था,‘ मोको कहाँ ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास हूँ। ‘वहीं संत रविदास ने यह कहने का साहस किया कि केवल भक्त को ईश्वर की जरुरत नहीं, बल्कि ईश्वर को भी हमारी जरुरत है। उन्होंने भक्त और भगवन के बीच परस्पर प्रेम और विशवास का धागा विकसित किया और दोनों का चन्दन और पानी का रिश्ता बनाया। उन्हें तरह - तरह के खांचे में बंधी और बँटी दुनिया स्वीकार्य नहीं थी, जिसमें ऊँच -नीच, द्वेष और नफरत की दीवारें हों। संत रैदास भी कबीर के साथ एक वैकल्पिक दुनिया बसाना चाहते थे, जिसका मूलाधार प्रेम और श्रम पर आधारित हो। प्रोफेसर सदानंद शाही के अनुसार,“ रविदास अकर्मण्य साधुता के बरअक्स श्रमशील साधुता का आह्वान करते हैं और कहतें हैं कि ईश्वर हर उस व्यक्ति का है, जो अपने कर्ममय जीवन के भीतर उसे (ईश्वर को) मन और प्राण से चाहता है। उनका साहित्य वर्ण आधारित श्रेष्ठता क्रम को चुनौती देता है।“(लेख -‘श्रम और प्रेम से नया संसार रचना चाहते थे रविदास’ हिंदी हिन्दुस्तान अखबार)

इसीलिए रविदास अपने भक्तों को श्रम करके पालन -पोषण करने का संदेश देते हैं -

रैदास श्रम करि खाइहि,जौ लौ पार बसाय।
नेक कमाई जउ करइ,कबहुं न निहफल जाय।

इस प्रकार संत कबीर ने भी सूफियों से प्रेमतत्व ग्रहण किया और अपना अलग पंथ चलाया। उन्होंने ‘ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सौ पंडित होय‘ की घोषणा के साथ मानव प्रेम यानी मानवीयता पर मोहर लगा दी। संत कबीर कर्म के औचित्य पर सवाल उठाते हुए साफ शब्दों में चेताते हैं –‘करनी किया करम का नास। ‘ इस प्रकार गुरु रामानंद और उनके शिष्यों की वाणी के मूल उद्देश्य पर विचार करें, तो वह मानव समाज के सामूहिक कल्याण की वाणी है। उन्होंने सामाजिक असंगतियों, धार्मिक विडंबनाओं, बहुदेवोपासना, मूर्तिभंजन आदि समस्याओं और उनके निदान की राह सुझाई। संत कवियों ने जीवन दायिनी शक्तियों की ओर जनसामान्य का ध्यान आकर्षित किया और समाज को सशक्त, निर्दोष एवं कल्याणकारी मार्ग पर अग्रसर करने की चेष्टा की।उनके प्रत्यक्ष प्रभाव का संकेत गुरु नानक की शिक्षाओं में भी मिलता है और आधुनिक युग में गुरु रविंदर नाथ टैगोर के विचारों में भी। यही विशेषता इन्हे आज भी लोकप्रिय बनाये हुए है एवं इनकी रचनाओं को कालजयी। एक विद्वान के शब्दों में , ‘‘ उसे धर्म –निरपेक्ष सत्योन्मुखी वाणी कह सकते हैं। संतों ने तथाकथित जाति या वर्ण व्यवस्था को स्वीकार न कर मानवमात्र को एक धरातल पर खड़ा कर दिया था। उनकी दृष्टि में मानववाद ही एक ऐसा स्तर था, जिस पर समाज की व्यवस्था संभव थी। जिस लक्ष्य को ये संत कवि प्राप्त करना चाहते थे, वह सार्वजनिक हित से समन्वित सर्वजनसुलभ ध्येय था। अतः अपने युग में इन्होने एक व्यापक वैचारिक क्रांति को जन्म देकर भारतीय जनता के समक्ष एकेश्वरवाद, सदाचार, सत्य, समता और शाश्वत धर्म का आदर्श प्रस्तुत किया था। अवतारवाद, पूजा –सेवा, रोजा, नमाज, मंदिर –मस्जिद, तीर्थ –व्रत आदि को इन्होने स्वीकार नहीं किया।
‘‘ (डॉक्टर विजयेंदर स्नातक –‘भक्तिकाल की उपलब्धियां ‘,लेख)

अंततः संत कवियों का व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में संवेदन शील था, जिनका साहित्य जन –भावनाओं की सहज प्रवृतियों, परिस्थितियों, विकृतियों और विडम्बनाओं का विशाल शब्दचित्र है। इन संतों का मानस स्वच्छ और उदार था, जिन्होंने तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र अंकित किया। डह्क्टर तारकनाथ बाली के शब्दों में , ‘‘ उनकी रचनाओं में मानव की क्षुद्रता, सीमाओं, स्वार्थपरता, असत्य प्रियता, संकीर्णता, अर्थ लोलुपता, कामुकता आदि का चित्रण, विवेचन और विश्लेषण हुआ।‘‘ (निर्गुण भक्ति काव्य –हिंदी साहित्य का इतिहास) वस्तुतः संतों ने अपने समय के मानव समाज को दोष मुक्त कर परिष्कृत बनाने की चेष्टा की, इसीलिए संत काव्य आत्मविश्वास, आशावाद और आस्था की भावना स्थापित करने में सहायक साहित्य है। यह जीवन शक्ति का अजश्र स्रोत है, जिसका प्रमुख प्रयोजन था – त्रस्त, संतप्त, उपेक्षित, उत्पीड़ित, मानव को संबल प्रदान करना। संत कवियों ने हर मनुष्य को यही उपदेश दिया कि ईश्वर प्रेम है और प्रेम ईश्वर है। मनुष्य का प्रेम ईश्वर का प्रेम है और यही वास्तविक धर्म है। इस तरह भाव तथा विचार में संत सम्प्रदाय विश्व सम्प्रदाय है, जिनका धर्म विश्व धर्म है। एवं समस्त वासनाओं, इच्छाओं एवं द्वेषों से रहित ह्रदय की निःसीम सीमाओं में ही इस विशाल धर्म का प्रवेश और समावेश संभव है। और यह सब सद्गुरु की कृपा से ही संभव है, क्योंकि वही भक्ति और मुक्ति का दाता तथा ज्ञान चक्षुओं का उद्घाटक है। गुरु रामानंद और उनके शिष्यों ने पवित्रता सम्मत स्वाभाविक और सात्विक आचरण से ही धर्म का वृहत रूप ग्रहण किया, अतः हम उसी धारणा के अनुसार उस योगदान को रेखांकित करेंगे। सम्भवतः अपने गुरु को लक्ष्य करके ही संत कबीर ने यह दोहा रचा और गुरु को ब्रह्म से भी महान माना –

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पायं।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविन्द दियो बताय।

■■

संतोष बंसल
A – १/७,मैनवाली नगर
पश्चिम विहार
दिल्ली–८७

SHARE YOUR
HUMANITY
(A Global Platform)

साहित्य का कैशबैक

मशहूर हिंदुस्तानी लेखक रस्किन बांड साहब ने फरमाया कि हिंदुस्तान में लिखने वाले ज्यादा हो गए हैं जबकि पढ़ने वाले कम , उन्होंने अच्छी बात कही लेकिन पूरी बात नहीं कि हिंदुस्तान में अवार्ड देने वाले ज्यादा हो गए हैं जबकि लेने वाले कम ।

एक दौर था कि एक पुरस्कार को लेने के लिये हजारों लोग प्रयास करते थे मिलता किसी एक खुशनसीब को था अब हालात बदल गए हैं पुरस्कार ज्यादा हैं आवेदक कम ,हजारों पुरस्कार बिना बंटे रह जाते हैं जिस तरह कंपनियों के गीजर और फ्रिज बिना बिके रह जाते हैं,तब कंपनियां उस पर छूट और कैशबैक का अहफर चलाती हैं ।

ऐसा ही एक आफर पिछले महीने मुझे भी आया।पुरस्कार की सूचना हर लेखक के लिये वैसे ही होती है जैसे फेसबुक पर १०६५ लोगों के कमेंट रिप्लाई कर चुकी महिला पर १०६६वां कॉमेंट बन्दा इस उम्मीद में कर देता है कि शायद इस बार मेरी दाल गल जाए।

सो वाकई ये दाल गलने जैसा ही था कि ईमेल में लिखा था कि हम आपकी कविताओं से प्रसन्न होकर साहित्य शिरोमणि का सम्मान आपको देने जा रहे हैं ,दस हजार नकद,शाल,मोमेंटो तो रहेगा ही जगह और दिन की सूचना जल्द ही दी जायेगी।

पहले तो मेरा दिल बल्लियों उछलने लगा जैसे कि कुछ रोज पहले हमारे दफ्तर वाली मैडम सामने आकर अकेले में हमसे पूछ बैठीं

“आज कैसी लग रही हूं मैं”।

मैं क्या करता मैंने उस ख्वाब की ताबीर करते हुए कहा “कहर लग रही हो ”।

उसने बुरा सा मुंह बनाते हुए कहा

“लेकिन बहस ने कहा कि मैं तो बवंडर लग रही हूं और आपने सिर्फ कहर कहा‘यू जेलस”।

मैंने बात संभाली-

“बवंडर के बाद ही कहर आता है दोनों ही सूरत में बिजली तो आशिक के दिल पर ही गिरनी है ”।

और यही बिजली मुझ पर गिरी जब मैंने ईमेल को ध्यान से पढ़ा कि कविता हेतु सम्मान ,पर कविता तो मैं लिखता नहीं , व्यंग्य लेखक को कविता का सम्मान मिलना ऐसा ही था जैसे हिंदी साहित्य के किसी दगे कारतूस को कोई अंग्रेजी मीडियम से पढ़ी और मल्टी नेशनल कंपनी में मोटी तनख्वाह पाने वाली युवती प्रेम निवेदन कर दे ।फिर अचानक ईमेल पर एक मोबाइल नंबर दिखाऔर नाम दिखा मैना विरहणी।

मैंने मैना का मधुर स्वर सुनने के लिये उस नंबर को इतनी बार रिंग किया जितनी बार देश में राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाने के कांग्रेस ने ख्वाब देखें हो मगर हर बार उस नंबर पर कौवे की भाँति यही कर्कश जवाब मिलता कि रिचार्ज ना कराने के कारण इन नंबर पर सेवाएं बन्द कर दी गयी हैं मुझे हैरानी हुई कि जो लोग बन्दी ३५ रुपये का रिचार्ज ना करवा पा रही हो वो दस हजार का अवार्ड मुझे कैसे देगी ? लेकिन इस बात की तसल्ली भी होती थी कि अवार्ड कैश मिलेगा , चेक से मिलने का खतरा नहीं है कि चेक बाउंस हो जाये और मैं काठ का उल्लू बना फिरूँ।दिन गुजरते गए लेकिन ना अवार्ड वाली का नंबर लगा और ना अवार्ड का दर्शन ।मेरी हालत उस भूखे इंसान की तरह हो गयी थी जिसे थाली का भोजन तो परोस दिया गया हो मगर उसे खाने की मनाही हो कि अभी ठाकुर जी का भोग नहीं लगा है।खाने की मनाही हो,भूख लगी हो ,थाली सामने रखी हो और भोजन की महक नथुनों में घुसी जा रही हो और बैकग्राउंड में गाना बज रहा हो -

“जित्थे होती है हथियार दी पाबंदी ,वीर उतथे ही फायर करता ”

तो फिर बन्दे की हालत वैसी ही हो जाती है जैसे लालू के बेटों का अंग्रेजी में ट्वीट करना।

दिन ऐसे बीत रहे थे जैसे कि मानों धरती जल रही हो ,घर ,दफ्तर हर जगह वो ईमेल मैंने ही लीक किया था अब सब राफेल के रेट की तरह मुझसे सवाल पूछ रहे थे कि कब मिलेगा अवार्ड ,और मैं सोनाक्षी सिन्हा की तरह असमंजस में था जो पापा के लिए कांग्रेस का वोट मांगते हुए सपा को कोसती हैं और मम्मी के लिये सपा का वोट मांगते हुए कांग्रेस की लानत -मलानत कर डालती हैं ।

मेंरे लिये अब इस अवार्ड को हासिल करना उतना ही बड़ा यक्ष प्रश्न था जितना कि संसद में एक भी सीट ना होने के बावजूद मायावती का प्रधानमंत्री बनने का मंसूबे पालना।

मैं उसी तरह हताश था जैसे कि सेक्युलर पार्टियों का साम्प्रदायिकता को ना हरा पाने पर होती हैं।यारों -दोस्तों से मैंने मिलना जुलना बंद कर दिया था ,हर जगह बस एक सवाल

“कब मिलेगा अवार्ड”।

अब तो जाते हैं बुतकदे से मीर।
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

यही शेर सुनाकर मैं अपना अज्ञातवास काट रहा था।तब तक तक एक दिन मैना जी का फोन आया उन्होंने मुझसे कहा “देखिये हम जिम्मेदार लोग हैं साहित्य में शुचिता के पक्षधर ,अतः आप दस हजार नकद इनाम पाना चाहते हैं तो टीडीएस की रकम भिजवा दें दस परसेंट ।

मैने उनसे विनम्र निवेदन किया

“जी मैं कविता नहीं ,व्यंग्य।

“उन्होंने बात को काटते हुए कहा

“दिल्ली आने की तैयारी कीजिये,टीडीएस की रकम तुरंत भेजें ”

ये कहकर उन्होंने फोन काट दिया ,मैंने बहुत बार उन्हें फोन मिलाया लेकिन वो फोन पर ऐसे ही नदारद रहीं जैसे लघुकथा की किताबों की बिक्री ।

मैंने नेहरू कट,कुर्ता पायजामा और पंप शूज का इन्तजाम कर लिया और मैना की वाणी सुनने का ऐसे प्रतीक्षा करने लगा जैसे मुलायम सिंह यादव का सैफई महोत्सव ।एक दिन फिर मैना वाणी मेरे मोबाईल में मधुर वचनों से बोलीं

“देखिये आपको बताना भूल गयी थी कि सरकार के नए कानून के हिसाब से अब कवियों पर जीएसटी १८ परसेंट कर दी गई है इसलिये आपको ८ परसेंट इनाम की रकम का और यानी आठ सौ रुपये और भेजने होंगे ,हम साहित्य में उच्च मानकों के पक्षधर हैं सो तुरंत पैसे भेजें और दो हफ्ते बाद पुरस्कार समारोह है”।

मैंने कहा कि

“लेकिन मैं कवि नहीं”

तब तक फोन कट चुका था और उनका मेरी काल को रिसीव करना ऐसे ही था चंद्रबाबू नायडू का सरकार के पांचवें साल में भाजपा को खराब बताना।मैंने दुबारा उनकी कही रकम भेज दी ।और फिर ऐसे राह तकने लगा जैसे अमिताभ बच्चन ,अभिषेक बच्चन की किसी सोलो हिट फिल्म की राह तकते हों ।

चन्द रोज बाद फिर उनका फोन आया और उन्होंने नाराजगी भरे स्वर में मुझसे कहा -

“मुझे पता नहीं था कि आप झूठे,बेइमान और फ्रॉड हो जबकि साहित्यकार होने का दम्भ भरते हो मुझे पता लगा है कि आप कवि नहीं हैं ,व्यंग्यकार हैं क्या ये बात सच है ”

ये कहते हुए उन्होंने केजरीवाल की भांति मुझ पर अनगिनत आरोप लगाए और मेरी एक ना सुनी ।मैं क्या करता ,अंत में उन्होंने कहा कि साहित्य के हित मे वो अवार्ड कैंसिल नही करेंगी इसलिये अब कविता की जगह व्यंग्य पर अवार्ड दिया जाएगा।

चूंकि गलती मैंने की है जो उन्हें नहीं बताया इसलिये जो शाल,मोमेंटो कविता के पुरस्कार हेतु बनवाये गए थे वे बेकार हो गए और अब उनकी जगह पर सब व्यंग्य के नए सामान लेने पड़ेंगे ।

कविता का अवार्ड देने के लिए जो बड़े कवि बुलाये गए थे उनके किराये और होटल की एडवांस बुकिंग कैंसिल करनी पड़ेगी और फिर से किसी बड़े व्यंग्यकार से समय लेना पड़ेगा और किसी नई तारीख और जगह पर पुरस्कार वितरण करना पड़ेगा इसलिये कविता को व्यंग्य पुरस्कार में बदलने के लिये और अपनी गलती की भरपाई के लिये तुरंत आठ हजार रुपये भेज दो ,नहीं तो फेसबुक पर तुम्हारी अच्छी खबर लेगी हमारी संस्था”

ये कहकर उन्होंने फोन काट दिया ।मैंने बहुत मिन्नत की , कि ये अवार्ड मुझको नहीं चाहिये लेकिन वो टस से मस ना हुईं।

वो आठ हजार रुपये भरने पड़े अब ये पुरस्कार का लालच था या फेसबुक पर मुझे दी गई धमकी का असर था ये सवाल उठना ही जटिल था जितना ये पता लगाना कि करण जौहर की कलंक ज्यादा महान फिल्म है या राम गोपाल वर्मा की शोले।

इसी बीच मैना का एक और ईमेल आया है कि जल्द ही पुरस्कार समारोह दिल्ली में होने वाला है ।जगह और तारीख,,, जी बस पता चलते ही बता दूंगा और हाँ आप समारोह में आना जरुर !

दिलीप कुमार

हाइकु

मन घायल
यूं न ठोकर मारो
होती है पीड़ा ।

रोता है दिल
बह रहें हैं आंसू
सह ले सब ।

उठा समुद्री
हाहाकार मन में
आंखें बरसीं ।

पेंशन नहीं
कैसे मिलेगा प्यार
मतलबी हैं ।

तुम न पास
आने की है न आस
छाया अंधेरा ।

लक्ष्मी रानी लाल

SHARE YOUR
HUMANITY
(A Global Platform)

वर्षा की सीख...

उतरी धरा पर वर्षा रानी।
लिए कलश में निर्मल पानी।।
गजरा लगाए इंद्रधनुष का।
सतरंगी चोली चूनर धानी।।

कारे-बादल का काजल बनाए।
मुस्काते अधरों संग मीठी बानी।।
पहुँची खेत खलिहान इठलाती।
बूँदे बरसा दीं देख फसल लहलहाती।।

रौंद डाली गैंहू की सारी बाली।
किसान की आँखों से बरसा पानी।।
कहीं बाट जोहे मरीचिका का बालक।
सूखे से तड़पता पुकारता जल-जल।।

जाने क्यों हुई रुष्ट ये देवी।
बाढ़ बढ़ाई सब बाँध तोड़ती।।
त्राही-त्राही करे जीवन देखो।
बस्ती बह गई मदद माँगती।।

सबने प्रार्थना में तब हाथ उठाए।
दंभित मानव ने सर अपने झुकाए।।
करो क्षमा हमें हे दया-दायिनी
जल रक्षक भक्षक बन ना जाए।।

क्षमाशील हो वरुण देवता।
वर्षा को फिर मनाने आए।।
करो ना गड़बड़ रानी ऐसे।
पालनहार फिर बनेंगे कैसे।।

सबका हमको ध्यान है रखना।
धरती को खुशहाल है करना।।
हम है शक्ति हम ही भक्ति।
मनुष्य की रिक्त झोली भरना।

मान गईं फिर वर्षा रानी।
मुस्काती चली रचने नई कहानी।।
मेघों ने स्वयं गाए मलहार।
झूमी मंद-मंद पुष्प क्यार।।

सूखे पोखर ताल भर डाले।
बचाए खेत ना अँधड़ चलाए।।
ओलों ने गर्मी मार भगाई।
रोकी बाढ़ ना तबाही लाई।।

झम झम झड़ी बस मधुर लगाई।
मोरनी-मोर ने रागिनी गाई।।
ना तूफान ना चक्रवात आया।
बादल को भी फटने से बचाया।।

अपनी सखी बिजली को समझाया।
घनप्रिया ने ना कोहराम मचाया।।
भोली है बरखा पर नाराज भी होती।
बहुत सारी सीख ये हमको देती।।

जो देंगें हम जग में सबको।
वही तो वापिस मिलेगा हमको।।
संग प्रीत से जो हम रहेंगे।
सबके सुख-दुख अपने सोचेंगे।।

तब ही प्रकृति प्यार करेगी।
वो भी हमारा ध्यान रखेगी।।

■■

नीलम मलकानिया
नई दिल्ली, भारत

SHARE YOUR
HUMANITY
(A Global Platform)

पुस्तक हैं अनमोल

“पुस्तक से बढ़ता है निज मनुज का ज्ञान
आपहु बुद्धि विवेक बढ़े जग का हो उद्धार
जन्मदिवस या अवसर विशेष पर देना हो
यदि तोहफा कुछ खास
कहती ममता दीजिए बस पुस्तक ही उपहार......”

पुस्तकें गुणों की खान हैं, सच्ची साथी हैं, मार्गदर्शक हैं । दुनिया में क्या, कैसे और कब हुआ? ऐसी तमाम जानकारियां हमें पुस्तकों से ही प्राप्त होती हैं । कहते हैं कि मनुष्य की पहचान उसके दोस्तों से होती है और पुस्तकों से बेहतर तथा सच्ची साथी कोई और हो ही नहीं सकता, दरअसल यदि किताबें ना हो तो हमारे बहुत से कार्य अधूरे ही रह जाएंगे । ज्ञान, मनोरंजन और अनुभव की बात कहती ये किताबें यूं ही नहीं पूजी जातीं, तमाम शिक्षाविद्, साहित्यकार, इतिहासकार विद्वानों ने ऐसी पुस्तकें लिखी हैं जिनके पन्नों पर जीवन का अर्थ पूर्ण अनुभव संरक्षित है ।

संभवतः इसी महत्व को ध्यान में रखते हुए २३ अप्रैल को उच्च उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा विकास की भावना से प्रेरित १९३ सदस्य देश तथा ६ सहयोगी सदस्यों की संस्था यूनेस्को द्वारा देश तथा विश्व पुस्तक तथा स्वामित्व (कॉपीराइट) दिवस का औपचारिक शुभारंभ २३ अप्रैल १९९५ को हुआ था । हालांकि इसकी नींव१९२३ में स्पेन में पुस्तक विक्रेताओं द्वारा प्रसिद्ध लेखक मीगुयेल डी सरवेन्टीस को सम्मानित करने हेतु आयोजन के समय ही रख दी गई थी । विश्व पुस्तक दिवस तथा कापीराइट दिवस “इन्हैंस बुक रीडिंग हैबिट्स” के एकमात्र महत्वपूर्ण उद्देश्य से प्रेरित है।

२३ अप्रैल का दिन साहित्यिक क्षेत्र में अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तिथि साहित्य के क्षेत्र से जुड़ी दुनिया के अनेक विभूतियों का जन्म या निधन का दिन है ।१६१६ में २३ अप्रैल को सरवेन्टीस, शेक्सपियर तथा गारसिल आसो डी लाव्हेगा, मारिसे ड्रयेन, के. लक्तनेस, ब्लेडीमीर, नोबोकोव्ह, जोसेफ तथा मैन्युएल सेजीया , धीरेन्द्र वर्मा, माधवराव सप्रे, रमाबाई, जी. पी. श्रीवास्तव आदि के जन्म/ निधन के दिन के रूप में मनाया जाता है तथा एक ऐसे लेखक जिनकी कृतियों का विश्व की समस्त भाषाओं में अनुवाद हुआ शेक्सपियर का तो जन्म एवं निधन दोनों ही की तारीख २३ अप्रैल है । साहित्य जगत में शेक्सपियर को जो स्थान प्राप्त है उसी को देखते हुए १९९५ से और भारत सरकार ने २००१ को विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की ।

वर्तमान समय में जब दुनिया डिजिटल हो रही है पुस्तकों का अस्तित्व खतरे में नजर आने लगा है । ऐसे समय में आवश्यकता है अपने बच्चों को महान विभूतियों की जीवनीओं से अवगत कराने का यदि हम स्वामी विवेकानंद की बात करें तो उनके थैले में हमेशा किताबे रहती थी वह जहां भी जाते लोगों को आगे बढ़ने की राह दिखाते क्योंकि जो पढ़ेगा वही आगे बढ़ेगा भीमराव अंबेडकर जब लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक से वापस भारत लौटे थे तो उनके पुस्तक संग्रह को एक अलग जहाज से भेजा गया था जिसे जर्मन पनडुब्बी टॉपीडो द्वारा डुबो दिया गया । डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन हमारे ऐसे ही प्रकाश-स्तंभ हैं जो समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है और यही आदर्श समाज संरचना का आधार है । तन को तंदुरुस्त रखने के लिए हम क्या कुछ नहीं करते हैं । अच्छा भोजन, योग- व्यायाम लेकिन अफसोस मन की सेहत का, दिमाग की तंदुरुस्ती का ख्याल रखना हम भूल जाते हैं।बहुत ही आवश्यक है कि हम अपने बच्चों में पुस्तकें पढ़ने की आदत डालें, उन्हें पुस्तकें भेंट स्वरूप दें, घर में अन्य आवश्यक वस्तुओं के साथ-साथ नियमित पुस्तकें भी मंगाए और अपने घर के एक कोने में एक खूबसूरत सा कोना किताबों का भी सजाएँ । क्योंकि पुस्तके मस्तिष्क को स्वस्थ बनाती हैं और स्वस्थ मस्तिष्क स्वस्थ समाज का निर्माण करता है ।

■■

- डॉ ममता श्रीवास्तव सरुनाथ
८४१९०२०३१९

भारत कैसे बनेगा आत्मनिर्भर

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सर्वप्रथम ‘स्वदेशी अपनाओ’ पर बल देना होगा। २०० वर्ष तक अंग्रेजों का गुलाम रहा भारत स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी जी के नेतृत्व में ‘स्वदेशी अपनाओ और विदेशी का बहिष्कार करो’ के नारे पर अमल करके ही अंततः स्वतंत्रता प्राप्त कर सका था।परतुं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हम फिर उसी लीक पर चलने लगे।भारत की क्षमताओं का लोहा आज पूरा विश्व मान रहा है।भारतवासियों को अपने भीतर का वही स्वाभिमान जगाने की आवश्यकता है-

“यूनान मिस्र रोमां सब मिट गए जहां से
लेकिन सभी तलक है दौरे जहाँ हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।”

अब सवाल यह है कि कोरोना काल में जहाँ सभी पर आर्थिक संकट के बादल मंडरा रहे हैं,चाहे छोटे व्यापारी हों या बड़े उद्योगपतिय दिहाड़ी मजदूर हों या हस्तकरघा संगठन, ऐसे में प्रधानमंत्री द्वारा जिस पैकेज की घोषणा की गई है।उसका वितरण किस हद तक जरूरतमंदों तक पहुँचता है ? देश के शासन तंत्र में इतने छेद है कि जब तक मदद सही हाथों में नहीं पहुँचेगी और उसका रिसाव भ्रष्ट नालियों से होता रहेगा तब तक देश का आत्मनिर्भर होना कदापि सम्भव नहीं हैं । राहत जमीनी स्तर पर प्रत्यक्ष रूप से जरूरतमंदों तक पहुंचनी चाहिए। राहत को ऋण के रूप में वितरित करके कितनो को राहत मिलेगी कह नहीं सकते क्योंकि चाहे वह बड़ा व्यापारी हो या दिहाड़ी मजदूर सबकी मासिक आय पर भी ताला लग गया है। जब तक उत्पादन और बिक्री नहीं है तब तक ऋण चुका पाना सम्भव नहीं है , ऐसी स्थिति में ब्याज दर महत्वपूर्ण नहीं है।

आवश्यकता है उस जीवन चक्र से प्रेरित होने की जो संतुलन बनाने के लिए शक्तिशाली द्वारा कमजोर को भोज्य बनाने का अधिकार देता है।

आज शक्तिशाली को कमजोर की तरफ हाथ बढ़ा कर उसे ऊपर उठाने की आवश्यकता है । जन- जन जब अपने कर्तव्य व जिम्मेदारी को समझेगा तभी एक दूसरे का अवलंब बनकर समाज को आत्मनिर्भर बनने में मदद होगी। भ्रष्टाचार भूल कर , दोषारोपण छोड़ कर ईमानदारी से सरकार की नीतियों को सफल बनाने की आवश्यकता है।

अभी विदेशों से भी बहुत से बेरोजगार भारतीयों के लौटने की आशंका है ,ऐसे में उन्हें आर्थिक तंत्र में जोड़ने का प्रयास भी आत्मनिर्भरता की तरफ एक कदम बढ़ाना हो सकता है।

आत्मनिर्भरता भारतवासियों के एकीकरण,आचरण और उस सोच पर निर्भर है जो निस्वार्थ भाव से सबको साथ लेकर समृद्धि के पथ पर बढ़ना सिखाती है।तभी सम्भव है “सबका साथ सबका विकास ।”

■■

तरुणा पुण्डीर ‘तरुनिल’
नई दिल्ली।

गरीब की मां

हुआ वही, जिसका उसे अंदेशा था। घर की देहरी पर पैर रखते ही बीमार मां का खनखनाता प्रश्न, उल्कापिंड की भांति, उसके कानों से टकराया-“म्हांकी दबाई ल्यायो बेट्टा?”

उसने मां के चेहरे की झुर्रियों में उभर आई क्षणिक आशा की झलक देखी और फिर उसे अचानक खांसी में तब्दील होते हुए भी देखा। मां का चेहरा काला पड़ने लगा। लगा, जैसे उसकी सांस निकली, अब निकली।

मां की हालत देखकर वह घबरा गया। मां दमे की मरीज है। रोज दवा लाने के लिए कहती है। वह रोज ही, कोई-न-कोई बहाना बनाकर, दवाई न लाने की बात कह दिया करता था। लेकिन आज मां की हालत देखकर उसे झूठ बोलना पड़ा-“हां, ल्यायो हूं मां! इबी ल्यायो।”

घर के अंदर घुसते हुए उसे अपनी फैक्ट्री के मालिक पर बड़ा गुस्सा आ रहा था। कितना गिड़गिड़ाया था वह सौ रुपए 'एडवांस' लेने के लिए, लेकिन उसने एक न दिया। मां की बीमारी की दुहाई देने से भी उस बेरहम का दिल नहीं पसीजा।

एक आले में रखी कुछ पुरानी शीशियों को उसने टटोला। हिलाकर देखने पर पता चला कि एक शीशी में कुछ दवा है। उसने, बिना सोचे-समझे, वह दवा मां के हलक के नीचे उतार दी।

दवा अंदर जाते ही मां का खोखला शरीर झंझना उठा। जोर की खांसी के साथ उसे उल्टी और दस्त भी आने लगे। हिचकियां बंध गईं तथा आंखें बाहर निकल आईं। थोड़ी ही देर में मां का चेहरा पीला पड़ गया।

“अरै या किसी दबाई ल्यायो हरिया?” मां का प्रश्न था।

“मैं वा डाकदर रो खून पी जाऊंलो मां! वा कमीणा नै गलित दबाई दे दी। स्यात गरीबा री मां, मां नाही होवै ली।” पुनः झूठ बोलकर, अपराध-बोध से मुक्ति पाने का प्रयास करते हुए, वह कहता है।

■■

डॉ रामनिवास 'मानव'
--५७१, सैक्टर-१, पार्ट-२,
नारनौल-१२३००१ (हरि)

विज्ञापन- नन्हे-नन्हे चमकीले तारे

टीवी की स्क्रीन पर आँखें गढ़ाये सुनीति विज्ञापन देख रही थी !!

“अगर आपकी इच्छा के बगैर कोई आपको छूता है तो यहाँ फोन करें”,

“मेरी बस का कंडक्टर मुझे छूता है”,

“मेरे मामा मेरे साथ गन्दी हरकतें करते हैं और कहते हैं कि तुम्हारी मम्मी की सहमती से ही हो रहा है।

छि!!!!!!!! अनचाही बूँदें आँखों से छलक गालों तक ढुलक आयीं ।

जमाना कितना ही बदल जाए, कुछ बातें हर दौर में वैसी ही रहती हैं, शायद! उसकी नजरों के सामने उसका खुद का बचपन चलचित्र की भांति चलायमान थाद्य

“सुनीति बेटा! जरा ये मिठाई ऊपर वाली बड़ी अम्मा जी के यहाँ दे आ”, कपड़े धोते-धोते माँ रसोई में आयीं और किसी शादी में मिली मिठाई एक छोटी प्लेट में डालकर रुमाल से ढकती हुई बोली थीं । नादान, घुम्मकड़ छुटकी-सी सुनीति ठुमकती हुई ऊपर पहुँची परन्तु बड़ी अम्मा जी तो दिखाई नहीं दीं । चाचा जी थे, झट गोदी में उठाकर बोले-लाओ मैं ले लेता हूँ मिठाई ।

बदन में झुरझुरी-सी छूटी और नन्ही सुनीति हिचकिचाहट में गोदी से उतर भागी, सीढ़ियाँ उतर कर ही चैन की साँस ली ।

वो दिन और आज का दिन, चाहे कोई बहाना बनाना पड़े, वो फिर कभी अकेले 'ऊपर' नहीं गयी ।

पाँच साल की बच्ची सिहर गयी थी उस अजीब, शरीर में गड़ती हुई छुअन सेद्य तब से पहले मम्मी ने, कभी पापा ने, दीदी ने, भाई ने निहालाते हुए, गोदी उठाते हुए छुआ था किन्तु इस तरह अजीब कभी नहीं लगा था । नहीं पता था, यह क्या था पर इतना तो लगा कि कुछ गलत हुआ ।

फ्रॉक से कब सलवार-कमीज पहनने वाली हो गयी सुनीति, समय का पता ही नहीं चला । एक बार कोशिश भी की थी माँ को बताने की पर माँ तो 'चाचा' की तारीफ करते नहीं थकती थी, तो कहती भी किससे और कैसे ।

गर्मियों की छुट्टियों में नानी के घर जाने की उत्सुकता के बीच भी सुनीति डरी-सी रहती । खुशी की चहक में कहीं एक अन्जाना डर भी रहता था । यहाँ-वहाँ, अड़ोस-पड़ोस के सभी बच्चे छत पर खेलने जाते और रात में वहीं खुले आसमां के नीचे सभी बच्चे-बड़े बिस्तर बिछा कर सोते । रात के गहरे अँधेरे में अचानक एक हाथ आता और उसे अपने लड़की होने का भद्दा एहसास कराता किन्तु रात का सन्नाटा उसे अपनी सिसकी को निगल, आँखें और जोर से भींच लेने को बाध्य कर देता और दिन! दिन का का उजाला 'उससे' नजरें चुराकर, झुका के चलने को ।

? माँ से जब 'चाचा' के बारे में कह नहीं पाई तो वहाँ ननिहाल में क्या बताती जहाँ सब 'अपने' ही थे ।

एक दुस्वप्न-सा अतीत आज सुनीति के गले में अटक रहा है और वह टेलीविजन के सामाजिक सरोकार के विज्ञापन में बोलते हुए उन नन्हे बच्चों में स्वयं को देख रही थीद्य ये सरकारी एजेंसियाँ तब कहाँ थीं मदद के हाथ के साथ जब लाज, शर्म का पहरा और शीई.ईश.श..!!!!!!! मुंह पर चुप्पी की टेप लगानी पड़ती थी ....एक उबकाई-सी आई पर अचानक डोर-बैल बज उठी -ट्रिन ट्रिन .... ।

सुनीति की तन्द्रा टूटी । अपने गर्भ में पल रहे शिशु को सहलाने उसके हाथ पहुँच गए .... वह लम्बी साँस लेते हुए उठी, आशीष के आने का समय था- वो ऑफिस से आ गए । सोच में खोई सुनीति के पाँव स्वतः

ही रसोईघर की ओर बढ़ चले चाय-नाश्ते के लिए ।

उसी हालत में आशीष के साथ यंत्रवत-सी चाय पीती वह अब भी खोई-खोई थी

आशीष पूछ ही बैठे -क्या हुआ? कोई परेशानी? ।

सुनीति झटके से सीधे बैठते हुए बोली-नहीं तो!

विवाह के दो बरस हो गए थे आशीष इतना तो समझते थे कि कुछ तो है । वो बोले -किसी ने कुछ कहा क्या?

सुनीति फूट पड़ी- ‘‘कौन देता है अधिकार बिना उनकी इच्छा के बच्चों के शरीर को अपनी गन्दी सोच से मैला करने का, उनके कोमल मन को आहत, आतंकित करने का । क्यूँ ये इंसान इंसान नहीं रहते, पशु बन जाते हैं? क्या ये छोटे-छोटे बच्चें खासकर लड़कियाँ सच में फोन कर सकते हैं अपनी परेशानी बताने को, क्या कोई इनकी बात सुनेगा, कोई इनकी हालत समझेगा?

कौन-से बच्चे, क्या हालत? हमारा बच्चा तो अभी इस दुनिया में आया भी नहीं । सुनीति तुम किस बच्चे की बात कर रही हो?-आशीष ने पूछा ।

‘‘क्या तुम तब ही कुछ करोगे जब तुम्हारे अपने बच्चे के साथ कुछ होगा? आखिर आज के समाज को हो क्या गया है जो दूसरे की समस्या को अपनी समस्या नहीं समझता, और यह तो वह समस्या है जो हमारे समाज को जोंक की तरह खाए जा रही है, बचपन को खत्म किए जा रही है......’’ सुनीति लगातार बोलती जा रही थी ।

‘‘पर! सुनीति मुझे कुछ समझ तो आये कि किसका बचपन छिन गया, समाज पर कौन सा पहाड़ टूट पड़ा । लगता है तुम्हारे अन्दर की समाज-सेविका फिर जाग गयी है। याद है तुम्हे पिछली बार हमने सड़क पर पड़े घायल आदमी की मदद की थी तो अस्पताल वालों ने उसकी मरहम-पट्टी करने से भी मना कर दिया था और कहा था कि जब तक पुलिस नहीं आयेगी तब तक हम हाथ भी नहीं लगायेंगे । फिर तुमने पुलिस ही बुलवा ली थी, उसके बाद पुलिस ने थाने के कितने चक्कर लगवाए थे, मेरी तो नौकरी जाते-१ बची थी ।’’

‘‘उस इंसान की जान तो बच गयी थी’’- सुनीति ने तपाक से ऐसे कहा जैसे हर बात का जवाब वो पहले से ही सोच कर बैठी थी और आशीष उसके चेहरे की तरफ देखता रह गया। उसे समझ आ गया था कि सुनीति अब किसी की सुनने वाली नहीं और जो वो सोच रही है कर के ही मानेगी ।

‘‘फिर भी सुनीति तुम अपनी हालत तो देखो, क्या इस परिस्थिति में तुम्हे इतना तनाव लेना सही लगता है?’’

पर सुनीति कहाँ कुछ सुन रही थी,वो तो लगातार बुदबुदाती जा रही थी ।

आशीष ने सुनीति की बुदबुदाहट को ध्यान से सुनने की कोशिश की। थोड़ी कोशिश करने पर उसे साफ-१ सुनाई देने लगा- ‘‘.. ...यही कि कोई घर का, आस-पड़ोस का, कोई बहुत ही अपना, जाना-पहचाना व्यक्ति इन बच्चों का शारीरिक शोषण कर रहा है, इनके स्वाभिमान के नाजुक शीशे पर भद्दी लकीरें डाल रहा है जो शरीर के साथ-साथ इनके दीमाग में ज्यादा गहरी हो रहेंगी..........’’ - सुनीति अपनी रौ में बोलती जा रही थी । पर कोई ‘अपना’ ही कैसे बालमन को ठेस पहुँचाना चाहेगा, क्यों उनके कोमल शरीर से छेड़-छाड़ करेगा?

आपको नहीं मालूम, आशीष किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, अपनी माँ तक से कुछ कहना भी असंभव सा हो जाता है। ‘अपनों’ की ये छुअन परायों की गाली से भी बदत्तर अनुभव होती है। और तो और चुपचाप सहने और स्वयं में सिकुड़ने के अतिरिक्त कोई चारा नजर नहीं आता ।

चाय पीते-१ आशीष किसी गहरी सोच में था उसके पास सुनीति के द्वारा दिए गए तथ्यों का सच में कोई जवाब नहीं था साथ ही उसे ये अभी भी लग रहा था कि सुनीति को इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहिएद्य ये सोचते-१ वो अपने अतीत में जाता जा रहा था क्योकि कुछ उसे भी अन्दर से झंझोड़ रहा था । वो समझ नहीं पा रहा था ऐसा क्या है जो उसे शांत नहीं होने दे रहा । काफी देर अपने अतीत को खंगालने के बाद उसे याद आई वो बात जब वो खुद भी पड़ोस के एक अंकल के द्वारा शारीरिक शोषण का शिकार होते-१ बचा था । उसने तो उन अंकल के खिलाफ आवाज भी उठाई थी और उसके पिता ने बात समझ कर उन अंकल को लताड़ भी लगाई थी । उसके बाद बात आई-गई हो गयी थी पर आज वो नजारा उसकी आँखों के चलचित्र की तरह चल रहा था । आशीष अब सोच रहा था कि अगर उसके पिता ने ध्यान नहीं दिया होता तो क्या होता और यह सोचते-१ उसकी आँखों के सामने से छाई धुंध अब हटने लगी थी । अब सुनीति की बात उसे समझ आने लगी थी और चाय का कप रख, सोफे से उठ आशीष सुनीति के पास आ गये, उसके कंधे दबाए, हाथ थाम कर बोले -समझता हूँ मैं पर जब एक अच्छी पहल हुई है तो उसका अंजाम भी अच्छा ही होगा । आज के बच्चे मोबाइल का इस्तेमाल हम से जल्दी और बेहतर जान जाते हैंद्य अगर वे आवश्यकता समझेंगे तो जरूर उसकी खबर भी इन एजेंसीज तक पहुंचेगी । न होने से कुछ होना तो अच्छा है ।

बस जरुरत है कि उनके अपने भी उनके मौन को सुने, उनके सहमे चेहरों पर डर की छाया को देख पायें । इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में अपने बच्चों को भी समय दें, उनके दोस्त बने ..... घर में ऐसा वातावरण दें कि बच्चें उनके साथ खुल के बात कर सकेंद्य और फिर आज के बच्चे हमारी-तुम्हारी तरह चुप बैठने वाले नहीं, सुनीति । ‘जेट-एज’ के बच्चे अपना अच्छा, बुरा जल्दी समझ जाते हैं । माना कि कुछ लोग नहीं बदलते, उनकी हैवानी फितरत नहीं बदलती, छोटी हो या बड़ी उम्र, बड़े-बूढ़े भी गलत हरकतों से बाज नहीं आते किन्तु सकारात्मक सोच रख आशा के दीप जलाना है, रोशनी होगी, तम छटेगा ही ।

सुनीति की गीली आँखों में भी एक नई चमक थी और अपने भीतर पलती नयी जान को सहलाते हुए वह बालकनी में आ गईद्य मूसलाधार बारिश के बाद अब आसमान साफ हो गया था, काले बादल छंट गए थे .....नन्हे-नन्हे चमकीले तारे यहाँ-वहाँ बच्चों-सी खिलखिलाहट लिए आसमानी मैदान में आँख-मिचौनी खेलने निकल आये थे .... ।

■■

.डॉ पूनम माटिया (मानद)

कवि, लेखिका, संचालिका

दुम टूटने का दुख -एक नजर

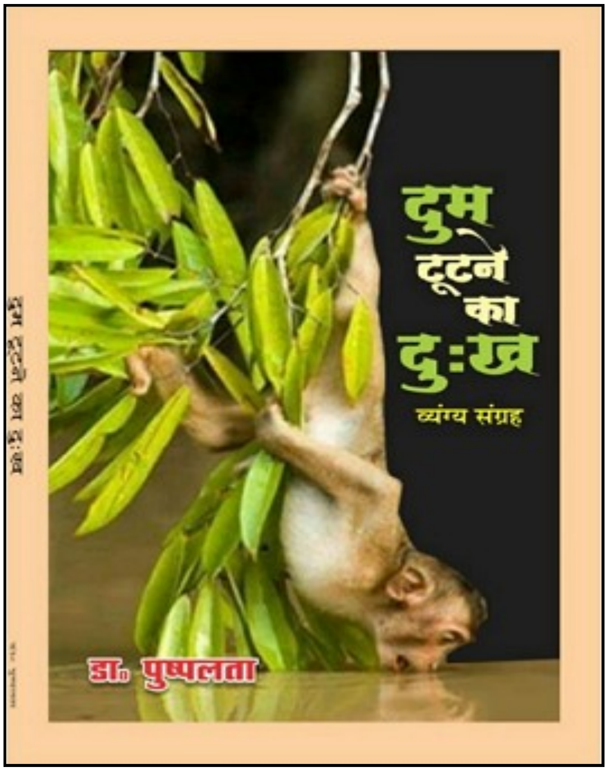

डॉ पुष्पलता द्वारा भेजी गई पुस्तक पढ़ी । उनकी २१ वीं कृति दुम टूटने का दुख व्यंग्य सँग्रह पुस्तक में लेखिका ने जो व्यंग्य बाण चलाए हैं उन्होंने तो सब दुम दारों की दुम काट डाली। दुम टूटने का दुख क्या होता है ये तो दुम वाले ही जानते हैं।पुस्तक में उन्होंने किसी का उधार नहीं छोड़ा, सबका ब्याज सहित भुगतान कर दिया गया है।

काणे को काणा कहने की हिम्मत हर किसी में नहीं होती है। लेखिका ने जो भी लिखा है निर्भीक और बेधड़क होकर लिखा है। पढ़ कर बहुत मजा आया।

इसे पढ़ने में मुझे समय जरूर लगा ।क्योंकि पुस्तक मेरे पास पीडीएफ में पहुँची थी । किंतु इसके पीछे भी एक महिला का हाथ है ।जिसे मेरी पत्नी के रूप में जाना जाता है।

कहने लगी “ कई दिन से देख रही हूँ मोबाइल में ऐसे चिपके पड़े हो जैसे इसमें रसगुल्ला की थाली आ गई हो। इसमें आखिर है क्या?”

मैंने कहा “ पुष्पलता जी की पुस्तक है उसे पढ़ रहा हूँ।”

वैसे अनपढ़ पत्नी के फायदे नुकसान दोनों हैं, बेचारी एक बार कहने से ही मान गई, केवल इतना पूछा ,“कैसी है यह मैडम जी?”

मैंने कहा “ एकदम धरती माँ जैसी।” जिसके दोनों ध्रुवों पर बर्फ है एकदम ठंडी, बीच ह्रदय में विचारों की ज्वाला जलती है, जब इसमें से शब्दों का लावा निकलता है तो कोरे कागज पर बहता है। जिसकी आग से बहुत से लोग जल जाते हैं तथा इसी से कुछ लोग कीमती धातु प्राप्त कर लेते हैं।

एक बानगी देखिये

“न चाहते हुए भी वे चलकर आदमी के पास पहुँचे।कौन है भाई
क्या हुआ
मैं साहित्य हूँ
बड़ा बढ़िया नाम रखा है
नाम नहीं साहित्य ही हूँ
पागल लगता है ?
पागल कर दिया गया हूँ
गड्ढे में क्यों पड़ा है ?
गड्ढे में फेंक दिया गया हूँ
अबे बाहर निकलना है कि नहीं?
इतनी जान नहीं है
पकड़ हाथ एक ने हाथ बढ़ाया
वह बाहर आया
लेक्चर देने वाले ने पैसे दिए ले सवारी लेके घर चला जा
घर नहीं है।”

कुछ व्यंग्यों में कौरवी बोली का तड़का उन्हें रोचक बना रहा है। मैं कोई कोरी प्रशंसा नहीं कर रहा हूँ लेखिका का व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों ही प्रशंसा के काबिल हैं ।पुस्तक के लिये सरस्वती की कृपा तो आप पर है ही, आप लक्ष्मी जी की भी लाडली हो । सौंदर्य की देवी कौन है मैं जानता नहीं, किंतु उसने भी कुछ कसर नहीं छोड़ी है।

इसीलिए तो आप लेखक, कवियित्री, व्यंग्यकार, पत्रकार, सम्पादक, डाक्टर, प्रिंसिपल, सुप्रीम कोर्ट की वकील हो। ये कोई साधारण उपलधियां नहीं है।इसीलिए तो कुछ साहित्यकार कहते होंगे:------
आपने हमारी खता,
सबको दी बता,
हे देवी पुष्पलता,
अब और मत सता
खूबसूरत ,उत्कृष्ट कृति भेजने के लिए बधाई
धन्यवाद

व्यंग्यकार
गोपाल सिंह राघव
प्रताप नगर जयपुर राजस्थान
मोबाइल नं -९६३४१३६२३२

आज आपकी किताब के कुछ कुछ पन्ने पढ़े ।आपके पास लिखने की गजब कलाएँ हैं ।
बहुत अच्छा लिखती हैं व्यंग्य ।
कल्पना और सत्य का गजब कंबीनेशन है ।
आपको बारंबार प्रणाम।
विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं आप।ऊपर वाले ने आपको लिखने की अद्भुत क्षमता दी है।
आपका लेखन गजब का है।

अपने लेखन के प्रशंसकों में मेरा नाम भी शामिल कर लीजिये।

रविन्द्र सिंह
लेखक

आपको बहुत-बहुत बधाई और मैं पढ़कर आपको बताऊंगी जरूर। वैसे मैं आपकी लेखनी से अभिभूत हूँ। आप बहुत ही तीखा, धारदार लिखती हैं, सीधा दिल पर तो असर करता ही है कुरीतियों पर प्रहार करने में भी सक्षम है आपका लेखन।

सविता चड्ढा
साहित्यकार

बहुत बढ़िया व्यंग्य संग्रह है यह आपका एक से एक विषयों को छुआ है आपने कोरोना और जीवन साथी । गधा पच्चीसी ।साहित्य की रजिया ....रोचक है। विसंगति और विडंबना को बहुत ही बारीकी से छुआ है । हरेक व्यंग्य पढ़ना चालू करो तो पूरा पढ़ने को जी चाहता है।रोचक और कटाक्ष से भरपूर व्यंग्य हैं आपके ।सब तो नही पढ़ पाया कुछ पढ़े बेहद रोचक लगे।इस व्यंग्य संग्रह की शुभकामनाएं

संजय जोशी
व्यंग्यकार

अक्सर हम अपने कार्यक्षेत्र की कमियों को सामने लाने से बचते हैं जिस कारण कार्यक्षेत्र की शुचिता व्याधिग्रस्त होने लगती है ।डॉ पुष्पलता ने अपने इस व्यंग्य संग्रह की शुरुआत ही साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त बुराइयों से की है एवं पुस्तक के एक चौथाई पृष्ठ इसी विषय पर खर्च किये हैं जो उनके अदम्य साहस का परिचायक है ।साहित्य समाज का दर्पण इसीलिए कहा गया है ताकि समाज में व्याप्य बुराइयों को साहित्य में निष्पक्ष रूप से समाज को जागरूक किया जा सके ।जब लेखन का उद्देश्य चाटुकारिता या पुरस्कार के लिये जोड़ तोड़ ही रह जाये तो उँगली उठना स्वाभाविक है ।साहित्य के अलावा निर्बल वर्ग की नारी को भी डह्र पुष्पलता ने उचित स्थान दिया है ।इस विषय को इतने सजीव तरीके से उठाया है जैसे वे उनके बीच ही रहती आई हों।राजनीति की कमियों को उजागर करना तो आज बर्र के छत्ते में हाथ डालने जैसा हो गया है ।सोशल मीडिया हर समय तैयार है आपको लानत मलानत भेजने के लिए मगर डह्क्टर पुष्पलता ने इस क्षेत्र की कमियों को उठाकर हंस के संपादक राजेन्द्र यादव की याद ताजा कर दी है।सोशल मीडिया को भी डह्र पुष्पलता ने बड़े चुटीले अंदाज में सामने लाने का कार्य इस व्यंग्य सँग्रह में किया है ।सँग्रह की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभ कामनाएँ ।

■■

विनोद वत्स
समीक्षक

हाइकु

१.सजना
मेरा सजना
एकटक यूँ देखे
मेरा सजना
२.सजा
घर है सजा
आजाओ अब जल्दी
ना दो यूँ सजा
३.मान
बात ये मान
तू करना हमेशा
बड़ों का मान

बात ये मान
ना करना तू कभी
काया का मान
४.पता
मुझे पता है
तुम्हारा आजकल
कहाँ पता है।
५.धरा
कहती धरा
सब रह जाएगा
इधर धरा
६.राज
करोगे राज
गर रखोगे गुप्त
हमारा राज
७. हार
दिलो की हार
होने पर मिलता
फूलों का हार
८.बाल
आते है बाल
तो झड़ने लगते
सिर के बाल
९.घडी
स्मार्ट है घड़ी
कदम है गिनती
यूँ हर घडी
१०
सुंदर जग
देखना है अगर
भोर में जग

शालिनी गर्ग

श्वेता सिंह 'उमा' की कवितायें

जहन से सफे का सफर

शब्द तुम्हारे जहन में,
कोहराम क्यों मचाते हैं ?
अपनी बात बताने को,
जुगत कई लगाते हैं।

कलम से क्या है लिखवाना,
कानों में फिर बताते हैं।
दिमाग जब न मानें तो,
दिल की दहलीज पर जाते हैं ।

जरा ,जो टोको तुम इन्हें,
बगावती तेवर भी दिखाते हैं ।
आखरि में तुम से जीतकर,
हकीकत से मिल ही जाते हैं।

जहन की दरिया से उतर ,
कलम की धार वो बन जाते हैं।
कागज पर उतर कर शब्द फिर,
जिंदा नज़्म का रूप पाते हैं।

नई दुनिया नए लोगों में ,
पहचान नयी बनाते है।
जहन से सफे का सफर,
लाफानी उन्हें बनाते हैं।

उम्मीद

गरीब की रसोई में चलो
''उम्मीद'' से मिल के आते है ।
हर दिन की रोटी के लिए
क्या क्या जुगत लगाते है ।

पसीना अपना बहा कर
गीली लकड़ियों को जलाते है ।
बुझ ना जाए अँगीठी की आग
जुगत कई लगाते है ।

कल से भूखे बच्चों को
रोटियाँ बना खिलाते है ।
उन सुखी रोटियों पर
पारियों की कहानी का घी लगाते है ।
कुछ अच्छा पकेगा कल
बच्चों को यकीन दिलाते है ।
सपनो की गाढ़ी खीर में
हकीकत का गुड मिलाते है ।

हर दिन की वो जद्दोजहद
बच्चों को ना बताते है ।
गैरत की चादर ओढ़ कर
गरीबी को फिर सुलाते है ।

हिम्मत से कैसे जीते है
चलो तुम्हें दिखाते है ।
गरीब की रसोई में चलो
''उम्मीद'' से मिल के आते है ।

■■

श्वेता सिंह ''उमा''
मास्को, रुस

हिन्दी की गूंज

धंधे की बरकत

(मानवता को शर्मशार करने वाले कृत्य का काला चिठ्ठा खोलती यह कहानी)

सूरज की किरणें परदों से छन छन कर अंदर तक आ रही थीं । बाहर पेड़ों पर खगकुल परिहास करने लगा था। उनके उसी परिहास की चूं-चूं कानों में टकरा रही थी। आँखों में कुछ अजीब सा महसूस होने लगा था तभी चादर को ऊपर तक खींचकर अपना चेहरा ढक लिया था छुटकी ने देर तक सोने की इच्छा से।

चादर को ऊपर तक खींचकर सिर ढका ही था तभी घर की डोर बेल बजी छुटकी ने एक दम अपना चादरा को दूर फेंक दिया और उठ खड़ी हुई दरवाजे की तरफ जाने के लिये।

“बेटा और सो ले थोड़ी देर।” माँ ने कहा।

लेकिन बेटा सबसे पहले गेट पर। ऐसा इसलिये नहीं कि कोई द्वार पर आया है ऐसा इसलिए क्योंकि उसके दादा जी प्रातः काल को सैर से वापस जो आ गए थे । पिछले एक महीने से उस पर विशेष प्यार उड़ेल रहे थे। बिना टॉफी, बिना चॉकलेट घर में घुसते ही नहीं थे।

इन्हीं टॉफियों और चॉकलेटों ने छुटकी को चादर छोड़ने पर मजबूर कर दिया था।

मम्मी १० बजे तक मुश्किल से जगा पाती थी लेकिन आजकल पहली डोर वेल पर उपस्थित हो जाती थी।

छदामी लाल अपनी पोती पर पिछले एक महीने से बडे दयालु थे। उसकी हर इच्छा पूरी करते थे। नये खिलौने भी आ गए,नई फ्रॉक भी और प्रतिदिन चॉकलेट अलग अलग टेस्ट की टाफियां और पता नही क्या-क्या?

ये वही छदामी लाल थे जो चार साल पहले बड़े दुखी थे कि उनके इकलौते बेटे के पुत्री हुई है। कई दिनों तक इसी दुख में गले के नीचे निवाला नहीं गया था। आज दिल खोलकर अपनी पोती की नहीं बल्कि पूरे घर की हर फरमाइश पूरी। घर का नक्शा ही बदल डाला इसी एक महीने के अंदर। पर्दे नये हो गए थे,बहु के लिए ज्वेलरी बेटे के लिये एक चमचमाती कार,घर के बाहर बड़ी सी नेमप्लेट ‘सेठ छदामी लाल’।

सोसायटी वाले घर से बाहर तो निकलते नहीं थे क्योंकि पिछले एक महीने से लॉक डाउन की मार झेल रहे थे। घर का हाल बेहाल हो रहा था और इधर सेठ जी के बढ़ते प्रभाव को देखकर लग रहा था कि सेठ जी की कहीं लॉटरी लग गयी है।

सेठ जी अपने परिवार का बड़ा ध्यान रख रहे थे बेटा अंशुल और बहू व्यंजना को घर से बाहर नहीं निकलने दे रहे थे। इच्छाओं की पूर्ति घर पर ही कर थे। दूसरा अपने परिवार को कोरोना से भी बचाना था,स्वयं भी अपना बड़ा ध्यान रखते थे।

“क्यों पप्पू एक बात समझ में नहीं आ रही इस मक्खी चूस सेठ ने अपनी पगार इस महीने क्यों बढ़ा दी।” बालों को खुजलाते हुए रामू ने कहा।

“हाँ रामू सेठ जी आजकल डाँट भी नहीं रहे। बड़े प्यार से बात करते हैं कुछ गले के नीचे नहीं उतर रहा।” पप्पू भी चिंतन की मुद्रा में आ गया।

ग्राहक कुछ सामने खड़े थे उन्हें भी चला रहे थे। आजकल धंधा पूरे यौवन पर था। आज १० -१२ साल हो गए थे रामू और पप्पू को इस दुकान पर काम करते -करते उन्होंने कभी नहीं देखा था कि इतना अच्छा बिजनिस चला हो।

बाहर दुकान के आकर एक गाड़ी रुकी रामू और पप्पू के हाथ एकाएक तेज चलने लगे बातें भी बंद करलीं आज्ञाकारी सेवकों की भाँति।

बाहर से ही छदामी लाल जी अपने नौकरों को आवाज लगाई

“अरे कहाँ हो मेरे दोनों शेरो।”

पिछले कई दिनों से यही सम्बोधन हो गया था जो कहा करता था-

“अरे कहाँ मर गए कम्बख्तों दिन भर गप्पें मारते रहते एक धेला का काम नहीं करते हो।”

इस परिवर्तन पर नौकरों के पैर जल्दी उठने लगे थे।

दौड़ते हुए आये कार की डिग्गी से दोनों पोटली निकाल लीं अंदर ले जाकर रख लीं। यही क्रम था पिछले महीने भर से।

काफी पुराने थे रामू और पप्पू अब हर बात इशारों में समझने लगे थे अपने सेठ जी की।

अंदर जाकर पूरी गठरी को खोला और जो काम दिया गया था पूरा करने लगे।

इधर सेठ जी ने काउंटर सम्भाल लिया था सामने खड़े ग्राहकों को भी बड़ी ततपरता से निपटा रहे थे।

कोई भी ग्राहक उनकी दुकान पर कभी मोल भाव नहीं किया करता था। क्योंकि उनका और कोई प्रतिद्वंद्वी था ही नहीं पूरे शहर में,जो मांगते थे वही मिलता था।

उन्हीं की दुकान ऐसी थी पूरे शहर में जो पूरे दिन खुलती थी इस आपदा में। कोई पुलिस वाला भी बंद नहीं कराता था। वैसे पूरे शहर में कर्फ़्यू लगा था कोरोना के कारण लेकिन सेठ जी को अति आवश्यक वस्तुओं को बेचने के कारण उन्हें स्पेशल परमिशन मिली हुई थी।

रुपये तिजोरी में बनते नहीं थे। शाम तक बैग भरकर अपने घर ले जाते थे।

हर तरफ शहर में हाहाकार मचा था इस वैश्विक महामारी से प्रतिदिन इतने बुरे समाचार मिलते थे की दिल घबराने लगता था। कहीं न कहीं से कोई न कोई समाचार पूरा दिन खराब कर देता था। पूरा शहर ही क्या पूरा देश त्राहिमाम- त्राहिमाम कर रहा रहा था तब उस काल मे सेठ छदामी लाल अंदर ही अंदर मुस्करा रहे थे क्योंकि उन्होंने अपने धंधे की ऐसी बरकत कभी नहीं देखी थी। सेठ जी जो आराम से ६ बजे तक सोते थे आज रात में भी नहीं सोते हैं इतना बरकत मिल गयी थी धंधे को ।

बेटा अंशुल अक्सर कहा करता था

“ बाबूजी दुनिया घरों में आराम कर रही है और आपकी गाड़ी

दौड़ती ही रहती है। कुछ आराम भी कर लिया करो। कहीं बीमार पड़ गए तो।”

“नहीं बेटा ये आराम करने का समय नहीं है। यही समय है पीड़ित मानवता की सेवा करने का,वही कर रहा पूरी लगन के साथ। आज हम ये नहीं करेंगे तो शहर में कोई दूसरा नहीं है जो इस काम को करता हो।“ सेठ जी अपने बेटे को समझाते हुए कहा।

हाँ बाबूजी वो तो है लेकिन फिर भी अपना ध्यान रखिये ये महामारी बहुत बुरी है। पता नहीं कहाँ से कौन चपेट में आ जाये।”

“देख बेटा मैं तो बस गाड़ी में बैठा रहता हूँ। गाड़ी में माल भरना उतारना नौकरों का काम है ।मैं कहीं हाथ भी नहीं लगाता पूरी तरह ध्यान रखता हूँ तू निश्चिंत होकर सो जा। अब बहुत समय हो गया है।”

सेठ जी विश्राम करने जा ही रहे थे तभी अचानक कुछ गाड़ियां सायरन बजाती हुई उनके दरवाजे पर आकर रुकीं सोसायटी वाले भी जग ही रहे थे। उन्होंने भी अपनी खिड़कियों से झाँक कर देखा इतनी सारी गाड़िया सेठ जी के द्वार पर।

मन में एकाएक वहीं दृश्य कौंध रहा था कहीं कोरोना की चपेट में तो नहीं आ गए । लेकिन एम्बुलेंस इसमें एक भी नहीं आखिर माजरा क्या था। कुछ समझ मे नहीं आ रहा था।

पोल की लाइट भी आज नहीं जल रही थी इसलिए कुछ साफ नहीं दिख रहा था पड़ौसी सुरेश चंद्र को। बाहर निकलने की किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कौन आफत मोल ले। आजकल वैसे ही हवा में वायरस घूम रहा।

गाड़ियों से पुलिसवालों का उतरना सेठ जी के घर जाना और पुनः किसी को खींचते हुए गाड़ी में बैठाना सब कुछ नाटकीय किसी फिल्मी दृश्य की तरह इस लगा जैसे कोई सीन शूट किया जा रहा हो।

गाड़ियां पुनः फर्राटा भरती हुई रवाना । सभी के समझ से परे केवल अनुमान और कुछ नहीं।

अनेको अनुत्तरित प्रश्न छोड़ गई सोसायटी में पुलिस का आगमन । सेठ जी के मोबाइल की कई घण्टिया भी बजी। लेकिन फोन स्विच ऑफ। माजरा कुछ समझ नहीं।

बड़ी हिम्मत करके पड़ौसी सुरेश ने अंशुल को फोन लगाया उसने इतना ही बताया पुलिस वाले कह रहे थे कि आवश्यक कार्य से ले जा रहे हैं थोड़ी देर के लिये फिर छोड़ जायेंगे।

यह जबाब कुछ गले नहीं उतरा सुरेश के रात भर सोचते रहे लेकिन कब आँख लगी पता ही नहीं चला।

सुबह पूरे शहर में हंगामा मच गया अखबारों और चैनलों की खबर देखकर।

मानवता शर्मशार हो गयी ,पूरा देश थू-थू कर रहा था । सभी टीवी पर बस एक ही खबर कफनचोर सेठ छदामी लाल।

छुटकी ने जैसे ही टी वी खोला उसे अपने दादा जी की फोटो दिखाई दी उसने अपने मम्मी पापा को बुलाया देखो दादाजी टी वी पर देखो दादाजी टी वी पर । उछलने लगी मेरे दादाजी टी वी पर । अंशुल और उसकी पत्नी व्यंजना ने दौड़कर देखा तो आँखे फटी की फटी रह गयी अंशुल धड़ाम से सोफे पर गिर पड़ा। जैसे तैसे उसकी पत्नी ने सम्भाला । यही हैं उसके पापा सेठ छदामी लाल अंतिम संस्कार वाले। जो आस-पास के सभी शहरों से लाशों के कफन उठवाकर , लाउंड्री में धुलवाकर अपना लेवल लगाकर आज बेच रहे थे ,तभी धंधे में बरकत आ रही थी। छुटकी को आज टॉफी व चॉकलेट अच्छी नहीं लग रही थी। उसने अपनी सभी टॉफी और चौकलेट डस्टबिन में फेंक दी थी उसे घिन आ रही थी अपने दादाजी पर।

बाहर लगी नेमप्लेट को कुछ लोगों ने काले रंग से पोत दिया था।

■■

डॉ राजीव पाण्डेय
१३२३/ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर-२
वेवसिटी, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश(भारत)
मोबाइल-९९९०६५०५७०

स्नेहिल माँ

लगातार जिन्दगी के झंझावातों से संघर्ष करती हुई कौशल्या जी अब थकने लगी थीं।घर-गृहस्थी के कामों में अब उन्हें अधिक रूचि नहीं रह गयी थी,लेकिन जवाबदारियों से मुँह मोड़कर वह एकदम वानप्रस्थ भी नहीं ले सकती थीं।

इसी उधेड़बुन में वह लगातार लगीं रही कि कोई सुपात्र आकर उनके कंधे का भार उठा ले,लेकिन जिम्मेदारियों से भरे उस भारी-भरकम संदूक को कोई भी सम्भालने के लिए तैयार नहीं हुआ।

‘माँ‘ को यह भय भी था कि इस नाजुक घड़ी में मेरे बच्चे कहीं आपस के खींचतान में ही न उलझ जाएं,लाख न चाहते हुए भी,उस अनुभवी हाथों ने एक बार फिर से चाबी का वह भारी गुच्छा,पूरी ताकत के साथ झटके से उठा लिया और अपने उलझे संतानों के साथ सुलझे धागे की तरह घर की तरफ चल दी।

उधर पडोसी जो बहुत देर से अपनी-अपनी खिड़कियों के झरोखों में इस ताक में आँख सटाए बैठे थे कि ‘अब तो माँ वृद्धाश्रम जाएगी,फिर हम मिर्च-मसाला लगाकर चटकारे लेकर बातें करते रहेंगे,लेकिन उम्मीदों पर पानी फिरते देख,वह कभी अपनी खिड़कियों पर लगे रेशमी पर्दों को तो,कभी वृद्धाश्रम की तरफ जाते हुए सूने पड़े रास्ते को देख कर हाथ मलते रह गये।

■■

डा.क्षमा सिसोदिया

गीत

१.

वक्त की तकली पर खुद से ही टांग लिया खुद को
रेशा रेशा रोज जिन्दगी काते है मुझको
इतनी काँपी भाग्य की ऊँगली हौंसला भी छूटा
फिसली तकली हाथ से धागा बार बार टूटा
कैसे अनाड़ी हाथों में रब छोड़ दिया मुझको ......
चुकती जाती उम्र की पूनी हाथ न कुछ आया
एक पहरन बनने लायक सूत न कत पाया
फटी चदरिया ओढ़ उम्मीदें ताकें है मुझको.......
एक हठीली आस अभी तक वक्त से लड़ती है
सधेगी तकली इक न इक दिन हर पल कहती है
एक इसी विश्वास पे फिर से जोड़ लिया खुद को ...
रेशा रेशा रोज जिन्दगी काते है मुझको ....

२.

हवा जरा इस और बहो ,पवन जरा इस और बहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे और तुम अपनी कहो
तूने प्यार की बस्ती देखीटूटे नीड भी देखे हैं
हर गुलशन हर वीराने के तेरे पास तो लेखे हैं
कहाँ कहाँ हो आयी हो गंध की बोली में कहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे .....
कर्तव्यों की कहपी में लिखा गया और मिटता रहा
लोक व्यवहार की चौखट में सदा ये जीवन घुटता रहा
खोल दिए हैं सारे झरोखे निर्बाध मेरा मन गहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे .....
ख़्वाबों के जंगल से चुन कर टहनी एक मैं लाई थी
छील छाल कर बड़े जतन से बंसी एक बनाई थी
रूठे सुर इस बांसुरी के बन सरगम कुछ पल रहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे ......
संग तेरे मैं बह न पायी गिला न इसका करना तू
देर से आयी पर हूँ आई बाहों में भर लेना तू
जिस अग्नि में अंतस जलता बन हमदम तुम भी सहो
आज कहूँ मैं अपनी तुमसे और तुम अपनी
कहो

■■

--शोभना श्याम
ग्रेटर नोएडा वेस्ट
फोन -९९५३२३५८४०

बोधि–वृक्ष

रोटी के लिए
जड़ से दूर
पलायित मेरे जैसे युवा
रोज जीते रहते हैं
सिद्धार्थ और बुद्ध को...
हर क्षण
संघर्षरत मन
रोज रचता है
महाभिनिष्क्रमण
और विरक्ति के बाद
रोज दो-चार होता है
चारों आर्य सत्य से।
यहाँ जो विरक्ति होती है
भोग-विलास और
अति संपन्नता की जगह
विपन्नता और भूख से
और बुद्ध बनने की प्रक्रिया में
प्रसेनजीतों-अंगुलीमालों को गले लगाते
हो जाते अकेला
लुम्बिनी से कुशीनगर तक के सफर में
रोज मिलते हैं
जड़हीन
बोधि-वृक्ष।

■■

- **केशव मोहन पाण्डेय**
नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका

संस्था पंडित तिलक राज शर्मा स्मृति न्यास का वार्षिक सम्मान समारोह सम्पन्न

न्यूयॉर्क की सुप्रसिद्ध संस्था पंडित तिलक राज शर्मा स्मृति न्यास द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मान समारोह का आयोजन ३० अप्रैल २०२२ को दिल्ली में संपन्न हुआ। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष इंद्रजीत शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में देश के अनेक गणमान्य साहित्यकार संस्कृतिकर्मी, फिल्मकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिक व्यक्तित्व को ‘‘पंडित तिलकराज शर्मा स्मृति शिखर सम्मान २०२२’’ से सम्मानित किया गया। इस सम्मान में प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शाल,पुष्प हार के साथ ₹११००० की राशि भी प्रदान की गई। इस वर्ष मुख्य रूप से सम्मान प्राप्त करने वालों में न्याय के क्षेत्र में डॉ. हुकुमचंद्र गणेशिया, साहित्य की अविरल धारा को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रोफेसर उदय प्रताप सिंह एवं प्रोफेसर उमापति दीक्षित, कथा साहित्य में विशेष उपलब्धि के लिए उदयवीर सिंह, गजलों में विशेष योगदान के लिए प्रसिद्ध शायर सुशील साहिल, विश्व भर में भारतीय सनातन संस्कृति की ध्वज स्थापना के लिए स्वामी सूर्यदेव, प्रशासनिक क्षेत्र में विशेष कार्य के लिए कुमार अविकल मनु, राजनीतिक क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए त्रिनगर की निगम पार्षद मंजू संजय शर्मा तथा बाल शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए मोनिला शर्मा आदि को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ स्वस्तिवाचन एवं दीप प्रज्वलन से हुआ तथा सभी मंचासीन अतिथियों को शहल पुष्पगुच्छ पुष्प विहार से अभिनंदित किया गया।कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री आशीष कांधवे ने किया । ज्ञात हो कि पंडित तिलक राज शर्मा स्मृति न्यास के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री इंद्रजीत शर्मा जी हर वर्ष अपने पिता जी की स्मृति में इस भव्य कार्यक्रम का आयोजन करते हैं जिसमें हर वर्ष समाज और समाज के महान विभूतियों को सम्मानित किया जाता है।

■■

पंडित तिलकराज शर्मा जी के नाम पर त्रिनगर,दिल्ली में मार्ग का नामकरण

अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका हिंदी की गूँज के संरक्षक एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री इंद्रजीत शर्मा जी के परमपूज्य पिताजी स्व. श्री पंडित तिलकराज शर्मा जी के नाम पर त्रिनगर,दिल्ली में मार्ग का नामकरण किया गया । कुछ व्यक्ति जीवन भर समाज के लिए समर्पित रहकर मरणोपरांत भी अमर हो जाते हैं । सुप्रसिद्ध समाजसेवी पंडित तिलकराज शर्मा ऐसे ही महान व्यक्तियों में शामिल थे । समाज में किये गए उनके महान कार्यों को याद करते हुए ,बुधवार २० अप्रैल २०२२ को प्रातः ११ बजे दिल्ली उत्तरी दिल्ली नगर निगम द्वारा आयोजित एक समारोह में क्षेत्र के प्रख्यात समाजसेवी स्वर्गीय पंडित तिलक राज शर्मा की स्मृति में मार्ग का नामकरण किया गया । क्षेत्रीय निगम पार्षद सुरेश कुमार गर्ग की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में पूर्व विधायक नंद किशोर गर्ग, रामकिशन बसोया, सेवा भारती के जिलाअध्यक्ष श्री राम वर्मा एवं जिला अधिकारी अशोक बहल, सत्यपाल, जगतपाल, तिलक राज, राजेंद्र वर्मा, भीमराज, राजेंद्र तायल, जसपाल चानी ,सतपाल सिंह गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी सदस्य ज्ञानी मेघ सिंह एवं वैद्य धर्म गोयल एवं स्थानीय एसीपी श्री मीणा समेत बड़ी संख्या के लोग में उपस्थित थे ।

वक्ताओं ने पंडित शर्मा के सुपुत्र इंद्रजीत शर्मा के सेवा कार्यों की प्रशंसा की । स्वर्गीय पंडित तिलक राज शर्मा निस्वार्थ समाज सेवा के लिए पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध रहे हैं ।उनका परिवार उनकी स्मृति में निशुल्क, डिस्पेंसरी, पुस्तकालय, फिजियोथैरेपी क्लिनिक, कंप्यूटर सिलाई केंद्र के साथ बाल संस्कार केंद्र संचालित कर रहा है ।

■■

किसान

वह कृषक है,
चलाता वह हल
इसीलिए वह ‘ हलधर ’ भी कहलाता
उपजाता वह अन्न
इसीलिए ‘ अन्नदाता’ भी कहलाता,
वह धरती को
अपनी माता समझता
इसीलिए ‘ पृथ्वीपुत्र’ कहलाता
परंतु ये सब
महान विशेषताओं वाले
‘विशेषण’
क्या उसकी
वास्तविकता को दर्शाते ?
असल में तो उसे
‘होरी’, ‘झुरी’, और ‘ धनिया’
हीं कहा जाता
भले हीं उसके जीवन पर
लिखें जाते हों महाकाव्य
पर शायद उसकी दर्द भरी ब्यथा
केवल दो हीं
समझ हैं पाते
एक ‘ अन्न ’
दूसरी यह ‘ धरती ’ ।

■■

डा अम्बे कुमारी
सहायक प्राचार्या
हिन्दी विभाग
मगध विश्वविद्यालय
बोधगया, बिहार, भारत

हाइकु

गहरे भाव
बलखाती सरिता
नन्ही कविता

सुप्रभात

भोर सुन्दरि
आई हरने तम
निहारें हम’

ओस के मोती
स्वागत में बिखरे
उषा निखरे
’
स्वर्ण कमल
सूर्य प्रभा चंदन
खग वंदन

धरा अचला
करता कलकल
शीतल जल

शुभयामिनी

सांध्य सुन्दरि
करती मनुहार
सजाती द्वार
’
नीरव निशा
राधा बैठी उदास
प्रिय प्रवास
’
राग यमन
गुनगुनाते सितारे
श्याम पधारे

चाँदनी रात
उजली जलधार
नौका विहार
’
स्वप्न प्रवाह

पंचतत्व

दिव्य दर्पण
पंचतत्व नर्तन
प्रकृति लीन
’
पृथ्वी की गंध
जीवन अनुबंध
प्राण प्रवाह

जल सिंचित
दृष्य प्रतिबिम्बित
नित्य नवल
’
अग्नि ओजस्वी
प्रज्वलित तपस्वी
यश का स्रोत
’
वायु निर्बाध
मधुरस अगाध
स्मित सुहास
’
नक्षत्र ज्ञाता
रंजित नभ गाता
नीलाभ गान
’
सुन्दर भ्रम
लास्य-तांडव क्रम
शिव संकल्प

■■

- **नीलम वर्मा**

बेटी-बेचवा

सकट का बायना ननद को देने गयी तो उनकी खुशी चेहरे से छलकी पढ़ रही थी मानो कुबेर का खजाना हाथ लग गया हो !एकांत मिलते ही मैं खुद को रोक नहीं सकी,“ दीदी,आज कोई लौटरी लग गयी क्या जो आप ... “बात पूरी नहीं कह पायी थी कि दीदी ने मेरे हाथ में तीन- चार तस्वीरें रख दीं,जो एक सुन्दर सलौनी किशोरी की थीं और शायद विदेश से ! एक तस्वीर में वो मृगनैनी केक काट रही थी,दूसरी में अपनी माँ को केक खिला रही थी और तीसरी में एक सज्जन जो शायद उस किशोरी के पिता लग रहे थे वो उसके कंधे पर एक हाथ रखे दूसरे हाथ से उसे कार की चाबी पकड़ा रहे थे !लड़की का चेहरा आश्चर्य मिश्रित खुशी से दमक रहा था !

“ दी,यह मिष्ठी है ना ?” दीदी मुस्कुरा उठीं एक अनकहे गर्व के साथ ! मिष्ठी..उनकी सौत की पोती थी और आज जिस पादान पर वो पहुँच सकी है वहां तो उसकी सगी दादी भी नहीं पहुंचा सकती थीं !सुनंदा दी ..मेरी ननद,एक दुहाजू को ब्याही गयी थीं क्यूँ कि उनकी पीठ में कूबड़ था !जीजाजी ने उनसे शादी इसी शर्त पर की थी कि वो अपनी सौत की तीनो संतानों को पालेंगी और अपने बच्चे के लिए नहीं कहेंगी ! दीदी,ने भी नौकरी ना छोड़ने की अपनी शर्त रखी थी और साधारण रस्म के साथ उनकी शादी चार जनों की उपस्थिति में कर दी गयी !

तीनो बच्चों की शादी उन्होंने अपनी नौकरी से कर्जा लेकर की थी लेकिन “विमाता” का ठप्पा उनके माथे से कभी नहीं मिट सका बल्कि एक लांछन और लग गया था ! दरसल,छोटे बेटे की पत्नी एक बच्ची को जन्म देने के दस दिन बाद चल बसी थी ! बड़े बेटे से २ बेटियां और बेटी से भी २ बेटियां थीं और अब पांचवी बेटी का खर्चा उठाने की कुव्वत परिवार में किसी में नहीं थी !दूरदर्शी दीदी ने उस नन्ही सी जान को बिना किसी से पूछे सुदूर आस्ट्रेलिया में बसी अपनी बेऔलाद भतीजी को देकर उसकी गोद भरी थी,जिनके पास पैसा बेशुमार पर औलाद नहीं थी !

मुझे सोच में डूबे देख दीदी हंस कर करुण स्वर में बोली , “ विमाता के साथ बेटी-बेचवा सही, क्या फर्क पड़ता है मुझे ?”

■■

पूर्णिमा राघव शर्मा

डेरियाना

सारा शहर यहां शोर में डूबा हुआ है। सायरन की आवाज बार बार सुनाई देती है। बच्चे बूढ़े और स्त्रिया डर के माहौल में जी रही है। बार बार सायरन की आवाज सुनकर बच्चे सहम कर डर जाते हैं।

कई बृद्ध निराशा के गहरे कुएं में खो गए। उनके पुत्र तो युद्ध में चले गए और उन्हें सूचना का इंतजार था। कई तो ऐसे नौजवान हैं, जिनकी सादी कुछ समय पहले ही हुई। लेकिन देश भक्ति की भावना उनको अपने घर में नहीं रोक पाई।

रात के समय में अचानक ही एक धमाके के साथ चारो और अंधेरा छा जाता है। एक अफरा-तफरी का माहौल चारों ओर फैली गया। लोग समझ नहीं पा रहे हैं कि क्या करें?

एक फ्लैट में एक अकेली बुजुर्ग महिला मार्था जिसकी उमर करीब ८० वर्ष की होगी रहती है। किशोर बेटे युद्ध में लड़कों के लिए चले गए।अकेली रह गई वह। पति भी द्वितीय विश्वयुद्ध में मारे जा चुके हैं।

मार्था की एक बेटी जो की एक डॉक्टर है, युद्ध में घायल सैनिको की देख भाल में लगी हुई है।

माँ काफी परेशान है अपनी बेटी के लिए । मां बाप ने बेटी का नाम डेरियाना रखा था । जिसका मतलब होता है, “भगवान का उपहार” ।

डेरियाना तीनो भाई की सबसे छोटी बहन है। तीनो भाई तो सेना में शामिल हो कर अपनी सेवाएं दे रहे हैं।जबकि डेरियाना डॉक्टर के रूप में सेना में अपनी सेवा दे रही है।

डेरियाना अपनी मां के लिए बहुत ही चिंतित रहती है। उसके भाई अक्सर युद्ध में रहते हैं। वे अपनी मां से सिर्फ टेलीफोन पर ही बात कर शकते हैं।

मारियाना सोच रही है कि कैसी विडंबना है आज का माहौल कितना खराब होता जा रहा है। चारों तरफ विनाश की काली छाया पसरी हुई है। लोगों का और भी बुरा हाल रहा है।

घायल सैनिकों के बीच दुखी डेरियाना यह बात सोच रही है। इस बीच वह अपनी मां को भी कभी कभी टेलीफोन मिलामे की कोशिश करती रहती है। सैनिको का इलाज करते हुए उसे अपने भाइयों की भी कभी कभी बहुत याद आती है। वो भी तो लड़ाई के मैदान में युद्ध कर रहे हे। बहुतत देर तक प्रयास करने के बाद उसके मां का फोन लगता है।

उधर से मां की आवाज आती है-

कैसी हो बेटी मैं तुम्हारे लिए बहुत चिंतित हूं।

मां मैने बाल लड़कों की तरह कटवा लिए है । डोरियाना ने विषय बदलते हुए कहा।

यहां लड़कियों के साथ बहुत ही अत्याचार किया जा रहा है। लड़कियों के साथ अत्याचार होने के कारण मैने ऐसा किया। इस तरह मैं भी लड़का लग सकूं इसिलिए मैने अपने बाल कटवा लिए।

अचानक ही बॉर्डर पर हलचल तेज हो जाती है।फोन पर मां गोलियों की आवाज सुनती ।है मा से टेलीफोन संपर्क भी टूट गया। मां अपने खाल रखना कह कर डोरियाना की आवाज बंद हो जाती है।

■■

सुरेश पांडे

सब निश्चित है

निश्चित है इस दुनिया में जो
होना है वो निश्चित है।
पल पल बदलता है ये जीवन
फिर भी सब व्यवस्थित है।

स्वीकार करे तू या ना करे
यहाँ सब कुछ क्रमबद्ध घटता है।
अच्छा या बुरा उसे मान के तू
कभी रोता है कभी हँसता है
धारण कर ले इस सत्य को
इसमें ही तेरा हित है
पल पल बदलता है ये जीवन
फिर भी सब व्यवस्थित है।

हर अनुकूल परिस्थिति में तू
कर्ता भाव ही रखता है
और प्रतिकूल अवस्था में तू
व्यर्थ ही क्रोध से भरता है।
कुछ करने ना करने के भावों से
क्यों आकर्षित है।
पल पल बदलता है ये जीवन
फिर भी सब व्यवस्थित है।

सहजता की सरिता में तू
बहने दे रहे ये जीवन
सरलता की धारा में प्रवाहित
कर दे रहे तू अपना मन।
चिंता ना कर कुछ ना घटेगा
तू चारों तरफ से सुरक्षित है।
पल पल बदलता है ये जीवन
फिर भी सब व्यवस्थित है।

अपने स्वरूप को जाने बिना तू
कुछ भी समझ नहीं पायेगा।
उपयोग अपना लगा तू निज में
राज हर खुल जायेगा।
जानेगा स्वभाव को अपने
तू तो सदा आनन्दित है।
पल पल बदलता है ये जीवन
फिर भी सब व्यवस्थित है।

■■

पूनम गौतम

हां मैं तुम्हें भुला नहीं पा रही हूं

क्या तुमको याद आती हूं मैं
क्या तेरी रगों में दौड़ती हूं मैं
या मोहब्बत- ए- इकरार मजाक रहा
आये नहीं तुम /बरसों बीत गए
अम्मी ने कहा तुम
किसी और के हो लिए
निकाह -ए- कुबूल /निगाहों की रजा थी
ना मौलाना, ना बाराती
जमीं चांद और सितारों की
हस्ताक्षर थी जिंदगी /उन लम्हों को जीकर
जिंदगी गुजार रही हूं
हां
मैं तुम्हें भुला नहीं पा रही हूं
सोती हूं सुहाग सेज पर
बिखरे सुर्ख फूलों के बीच /आगोश में होती हूं तेरी
ना होता है फलक /ना होती है जमीं
कुबूलनामा तेरे मेरे बीच का /दामन में समेटे जा रही हूं
सुनो
मैं तुम्हें भुला नहीं पा रही हूं
मैं तुम्हारे बिना जी नहीं पा रही हूं...
तुम्हारी सुकूनियत भरी बदमाशियों को
भुला नहीं पा रही हूं...
सुनो
जब तुम चुपके से महफिल में
नजर चुरा कर देखते थे
मेरे जिस्म की उस सिरहन को भुला नहीं पा रही हूं
सच कहती हूं /मैं खुद में बस तुमको
जीती जा रही हूं
हां मैं तुम्हें भुला नहीं पा रही हूं
वह अम्मी के कमरे में /मेरा हाथ छूना
अब्बू के आते ही /शब्बा खैर कहना
तुम्हारे अल्फाज / तुम्हारी आवाज की खनक
से सो नहीं पा रही हूं
हां मैं तुम्हें भुला नहीं पा रही हूं....

■■

सौम्या दुआ

नारी सशक्तिकरण

नारी हूँ नारी ही कहलाऊंगी
चाहे युग कोई भी आये /मैं जननी ही कहलाऊंगी
नारी हूँ--------
पर मेरे भी हैं रूप अनेक
नहीं बनूँगी इस समाज की कठपुतली
मान और सम्मान से रहकर /मैं अपना परचम लहराउंगी
नारी हूँ------

हे नारी - इस परिवर्तित समाज की
आज नहीं तुम अबला हो /सहम न जाना किसी मोड़ पर
तुम इस समाज की सबला हो

संभालो अपने अस्तित्व को नारी
माना डगर कठिन है आगे /फिर भी डटकर चलने वाली
तुम हर मंजिल पर विजय करो

अपने इतिहास को पहचानो /नारी ने क्या क्या रूप दिखाए थे
आज अपने मान और सम्मान की खातिर
तुमने अपनी एक नई पहचान बनाई है

इस नवीन समाज तुम नई परिभाषा हो
अपने कर्तृत्व से कभी डोर नहीं भागी हो
ऐसी तुम मां ,बहन और पत्नी हो
हर रिश्ते की तुम कमान हो /अपनी शक्ति की पहचान हो

रूढ़िवादिता की बेड़ी तोड़ो
हर मंजिल को पार करो /अपने मन के भय का नाश करो
नई मंजिल पर पांव धरो

माना मुशिकल बहुत बड़ी है
फिर भी मन में संकल्प धरो
बेधड़क चलकर समाज में /अपनी ख्वाहिश पूर्ण करो

तोड़ो डर की उस बेड़ी को
जो पैरों में पड़ी हुई /नारी हो तुम, सबल हो तुम
नव अवतार धरो तुम अपना

आज समाज को शिक्षित नारी की अभिलाषा है
क्योंकि
नई किरण को लाने वाली /तुम समाज की
आशा हो

■■

डॉ मीना शर्मा "मनु"

नहीं भूली हूँ

नहीं भूली हूँ मैं आज तक
अपने बचपन का वो पहला मकान
पिताजी का बनाया वो छोटा मकान
कुछ ऋण अहफिस से
बाकी गहने माँ के काम आए
मेरे लिए वो ताजमहल था
सफेद न सही लाल ही सही
छत पर सोने का मजा तो वैसे भी
ताजमहल में कहाँ आ सकता था

नहीं भूली हूँ आज तक वो मिट्टी की सोंधी महक
जब हम शाम को छत पर पानी उड़ेलते
तपिश कम हो तो रात को छत पर सोएँगे
छत की सफाई ने हमें जैसे टाइम मैनिज्मन्ट सिखा दिया था
स्कूल जाना, फिर होमवर्क करना, खेलना, खाना
और फिर रात को ऊपर सोने के लिए
छत पर छिड़काव, वो माटी की भीनी-भीनी खुशबू
बिछौना व छत वाले पेड़ के नीचे मस्ती
आसमां में चमकीले तारे
चाँद को देखना, और फिर सोना

नहीं भूली हूँ आज तक, वो मेरे शहर की सुबह
चिड़ियों का चहचहाना
मुर्गे की बांग, माँ का नीचे से आवाजें लगाना
मेरा उस सोंधी खुशबू में लिपटे-लिपटे बड़े हो जाना
खुशबू में तैर कर सात समुंदर पार आना
यहाँ खुशबू के तो पंख निकल आए थे
मैं जब चाहे उड़ कर उस पुराने मकान
को छू आती थी
वो छुअन वाले मोह के धागे ही तो थे
जिन्होंने मुझे मेरे मकान से बांधे रखा
इसीलिए नहीं भूली हूँ मैं आज तक
अपने बचपन का वो पहला मकान
जिसकी यादें दिल में सीमेंट बन गई है
और दिल वही मकान बन गया है

■■

डॉ अनिता कपूर
(कैलिफोर्निया, अमेरिका)

मृग तृष्णा है प्रेम

रेम सब से बड़ा इक छलावा !
स्नेह पाने की अंधी दौड़ में !!
बीतता जीवन सारा ,
कौन अपना बन पाता?
पकड़ते पकड़ते दामन
कोई कोना ही हाथ आता !
हृदय का घट रहता खाली
जो भी मिलता
रीता करता
स्नेह नीर जाने कहाँ उड़ जाता !
अपेक्षा से थोड़ा कम स्तर ,
कभी पूरी
प्यास नहीं बुझाता !
''जितना हमें है प्यार''
उसको भी है ?
इस कसौटी पे
कोई खरा उतर नहीं पाता !
और ,और अभी !
और !!
दिल
दिन रात बस यही आँसू बहाता !
जिद्दी बच्चे सा ही
हर सा तांडव रोज रचाता !
झींकता पछताता
अपेक्षाओं के जाल में उलझता जाता !
मृग तृष्णा है प्रेम
समझ क्यूँ यह नहीं पाता!!

■■

सुमन तनेजा

लुप्त होती कलाएं

हमारे देश के ग्रामीण अंचल से लेकर शहरी परिवेश में बहुत सारी कलाएं दम तोड़ती जा रही हैं। वास्तव में हमारे देश के परंपराओं में शहरी और ग्रामीण दो तरह की परंपराओं ने अपने अस्तित्व को सदैव कायम रखा है। मानव मात्र के जीवन जीने के तरीकों में और उनके व्यवहार करने के नए-नए मंच उन्हें अपनी प्रक्रियाओं से अवगत कराते हैं। हम जानते हैं कि मानवीय जीवन जीने के आदिकाल से चल रहे तरीकों में निरंतर नयापन आता रहता है। नये का आग्रह पुराने को स्थापन्न कर देता है। अर्थात जब नया आता है तो पुराने को परिदृश्य से हट जाना होता है। यह अपने आप में बहुत ही विलक्षण है।

हमारे जीवन में हमारे देशते देखते बहुत सारी चीजें या तो स्थापन्न हो गई या उनका स्वरुप बदल गया। इस बदलते हुए स्वरुप ने हमारे जीवन को जहां बहुत ही सहज और सुलभ बनाया है वहीं इसने हमारी बहुत सारी परंपरागत चीजों को हमसे छीन लिया है। यदि हम क्रमबद्ध रूप से उन्हें कहना चाहें तो ग्रामीण परिवेश में - खाट की बुनाई, मचिया, पुआल का बना हुआ बिस्तर तथा बैठने का मोढा बनाना ऐसी कुछ क्रियाएं हैं जो इस समय पूरी तरह से तो अस्तित्वमान नहीं है। इसी तरह- दूध जमाने से लेकर के, दही जमाना ,नैनो निकालना ६ बिलोना, छाछ बनाना यह सारी क्रियाएं भी कहीं लुप्त होती जा रही हैं।

मशीनीकरण हमारे समय समाज में आधुनिकता का एक बहुत बड़ा उदाहरण है। मशीनों के नए-नए प्रारुप से हमारे जीवन को सरल बनाने में हमें बडी मदद मिली है। मशीनों के माध्यम से हम अपने बहुत सारे कामों को समय बचा करके बहुत जल्दी और अच्छे तरीके से सुरक्षित रूप में कर पाते हैं। ट्रैक्टर के आ जाने के बाद बैलों से खेत की जुताई, पाटा चलाना, बीज बोना, थ्रेशर के लगने के बाद आए परिवर्तन में महीनों दँवरी जो चला करती थी, उसका सर्वथा अभाव देखा जा सकता है । यह मशीनीकरण के कारण हमारी परंपराओं में क्षरण का एक बहुत बड़ा उदाहरण है।

हम मशीनीकरण से अपने आप को सुरक्षित स्थान तो दे पाते हैं परंतु हमारी क्षमता और हमारी कलाएं क्षीण होती चली जा रती हैं। मलाई बनाने के तौर और परंपरागत तरीके अब नहीं रहे। कुओं का लुप्त होना जिसके कारण पानी खींचने के कई तरीके, रहट चलना, पुरवट चलना आदि क्रियाएं खत्म हो रही है । यह चीजें परिवर्तन की साक्षी हैं परिवर्तन सकारात्मक भी होता है तथा नकारात्मक भी होता है । यह हम पर निर्भर करता है कि होने वाले परिवर्तन को हम किस रूप में लेते हैं।

एक बात और परिवर्तन कभी भी अच्छा या बुरा नहीं होता। जब हम परिवर्तन का समर्थन या विरोध करते हैं तो वह हमें प्रभावित करता है। निश्चित तौर पर समर्थन करने की स्थिति में हमारे मन के अनुसार परिणाम न मिलने हम विचलित होते हैं। इसी प्रकार विरोध करने की स्थिति में हमारे द्वारा वांछित परिणाम का न मिलना हमें दुख देता है।

यहां कलाओं के निरंतर लुप्त होने की बात कही जा रही है। यहां हम मशीनीकरण के इस युग में पुरानी कलाओं को पुराने तौर-तरीकों को संरक्षित और सुरक्षित रखे जाने की जरूरत पर बल दे रहे हैं। हम परिवर्तन और नई तकनीकी के आगमन का विरोध बिल्कुल नहीं कर रहे हैं क्योंकि उसी से विकास के नवप्रभात का आगाज होता है।

धीरे-धीरे हम देख रहे हैं कि बहुत सारी चीजें, बहुत सारी कलाएं लुप्त होती जा रही है। यह हमारे पुराने हुनर की उपयोगिता और उसकी उपादेयता को नजरअंदाज करने के बराबर है । हमें एक मानव के रूप में जो हमने अपने कार्यों में सहयोग के लिए नए नए रास्ते तलाश करके सुरक्षित मार्ग दिया था, उन्हीं कलाओं के संरक्षण के लिए अब हमें कृत संकल्प होना होगा।

कोई समय था तमाशा दिखाने के लिए गांवों एवं कस्बों में कलंदर आया करते थे । वे दो सिरों पर रस्सियां बांध कर उस पर चलते थे। डमरू बजाता हुआ उस्ताद और उसके सागिर्द की बातें भी सुनने देखने को नहीं मिलती है। अब यह चीजें अस्तित्व में नहीं है।

ऐसी बहुत सारी कलाएं हैं, जो लुप्त होती जा रहे हैं। इसी प्रकार शहर में भी लोग अपने-अपने घरों में सीमित होते जा रहे हैं समाज से जुड़ी बहुत सारी कलाएं लुप्त होने के कगार पर हैं। जिस यंत्र पर हम यह पोस्ट दे रहे हैं अर्थात मोबाइल इसने भी संवाद के, परिचर्चा के बहुत सारी कलाओं को समाप्त किया है ।

समाज एक मोड़ पर निरंतर गतिमान रहा है। सारे समाज में यह प्रक्रिया समान रूप से लागू होती है । इन सब के पीछे कारण देखा जाए तो नए नए आविष्कारों को अपनाया जाना तथा पुरानी परंपराओं का तिरस्कार करना भी जिम्मेदार माना जा सकता है। व्यक्ति का निरंतर सुविधाभोगी होना भी इसमें एक बहुत बड़ा कारण हो सकता है।

हमें इन्हें सहेजने की जरूरत है ।समेटने की जरूरत है। बहुत सारी खाद्य सामग्रियां अब नहीं रही सत्तू का बनना ,सत्तू का मिलना ,भंवरा ,लिट्टी, बाटी, चोखा , खाने पीने की बहुत सारी सामग्रियां अब नहीं हो पा रही है, नहीं बन रही है। इन चीजों पर ध्यान रखना बहुत आवश्यक है । यह कलाएं लुप्त होती जा रही है।

नरकट के कलम से लिखने की कला स्याही और दावत का प्रयोग यह चीजें भी खत्म होती जा रही है। इन पर हमें ध्यान देने की जरूरत है । गांव में दंगल चलता था। खुशियां होती थी। खुशियों के बहुत सारे दांव चलते थे। बच्चे मजबूत बनते थे । वह कलाएं भी खत्म होती जा रही हैं। कारण आधुनिकता की चकाचौंध में हम अपने परंपरागत श्रेष्ठता को भूलते जा रहे हैं।

मेरे इस समय के प्रस्तुति में जो बातें ध्यान में आई उन्हें मैंने आपके सामने रखा। यह कुछ सामान्य बातें हैं। बहुत सारी ऐसी बातें हैं जिनको हम नहीं कह पा रहे हैं। आज जरूरी यह है कि पुराने और नए के बीच में एक समन्वय बनाया जाए । सामंजस्य बैठाकर दोनों को उनका वाजिब सम्मान दिया जाए। पुरानी परंपराओं को भी सुरक्षित रखने की कोशिश की जाए और नए को भी अपनाया जाए। नए पुराने के संगम से मानवीय जीवन को निरंतर सरल, सहयोगी और विकास की ओर उन्मुख बनाया जाए।

■■

डाक्टर जयशंकर शुक्ल
भवन संख्या ४६,
पथ संख्या -०६,
बैंक कॉलोनी, मंडोली,
दिल्ली -११००९३

सुनो अर्जुन

अर्जुन,
जब मैं राम बना था,
तब मेरा ही अंश क्रमशः/भरत,लक्ष्मण,शत्रुघ्न थे ।
लेकिन किलकारी को आतुर
पिता दशरथ और तीनों माताओं ने
मेरे पहले आने के हर्ष में
अधिकांश वक्त मेरी बाल लीला को दिया
अतिरिक्त खीर का मिठास मुझे दिया ...
आज्ञाकारी भाइयों के मन में खराश का होना
या बाकी दोनों माताओं
कैकेई और सुमित्रा की उदासी
अनकही होकर भी /एक स्वाभाविक स्थिति थी,
शायद इसी दृष्टिकोण में
हमारे मध्य /सहज भाई-बहनों जैसी लड़ाई नहीं हुई ।
वनवास मुझे मिला था,
परन्तु पतिव्रता धर्म निभाने में
माँ सुमित्रा ने /भाई लक्ष्मण को मेरे साथ भेज दिया
तो मैं और सीता
उर्मिला के आगे दोषी हो गए ।
यह भाई होने का कर्तव्य निभाने जैसा
बिल्कुल नहीं था,
बेवजह वजह बनाकर/बिना किसी वचन के
लक्ष्मण को भी चौदह वर्षों का वनवास मिला ।
नाना के घर से /जब भाई भरत और शत्रुघ्न लौटे
तो पूरी अयोध्या
भरत को उपेक्षित नजरों से देख रही थी,
भरत के लिए तनिक भी आसान नहीं था
अयोध्या का राजा बन जाना !
और ऐसी विषम परिस्थिति की जिम्मेदार
माता कैकेई हुईं /लज्जा तो आनी ही थी भरत को ।
उसके चित्रकूट आने पर /लक्ष्मण का क्रोध -
जिसे शंका मान लिया गया,
उसके युवा मन के जबरन त्याग का परिणाम था ।
मेरी पादुका सिंहासन पर रख
भरत भी मांडवी से दूर रहा,
निश्चय ही इसीका दंड था
की चौदह वर्षों के बाद /कोशल लौटने पर
मैं भी
सीता से दूर हो गया / ... हमेशा के लिए !
कर्म अपना हो /या जन्मदाताओं का
अंतर क्या !
श्राप या वरदान /फल तो भरना ही पड़ता है,
परिणाम की धधकती अग्निगुहा से
गुजरना ही पड़ता है।

■■

रश्मि प्रभा
मुंबई

मन के भीतर बैठ जुलाहा

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

आढ़े टेढ़े उलझे सुलझे
धागे कितने रंग-बिरंगे
कोई कैसा कोई कैसा
कोई किसके साथ जंचता
अपने मन से मेल मिलाता
और किसी की कब है सुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

कौन सा ताना कहाँ जुड़ेगा
कौन सा बाना कहाँ खिलेगा
रिश्तों का हर ताना बाना
कितनी बार है बनता मिटता
टूटने की पीड़ा भी सहता
घुट घुट कितने सपने गुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

नित नूतन करने की सोचे
मन ही मन कितना है भुनता
उलझे धागे को सुलझाता
नये कपास के फूल है चुनता
बैठ अकेले झेल झमेले
अपने ही सपनों को धुनता

मन के भीतर बैठ जुलाहा
भावों के धागे है बुनता।

■■

डॉ प्रीति समकित सुराना

साँझ की लाली

मीना धर पाठक

लगभग आधा फरवरी माह बीत चुका था पर अभी भी सारी प्रकृति शीत से ठिठुर रही थी। सूर्यदेव दोपहर बाद अलसाए से बादलों की रजाई से मुँह निकाल कर थोड़ा-सा झाँकते और फिर से छुप जाते। मौसम विभाग अभी एक दो दिन तक ऐसी ही कड़ाके की ठण्ड पड़ने की आशंका जता रहा था। सुबह के नौ बज रहे थे। पूजा-आरती के बाद सुजाता रजाई में बैठी ‘कारवाँ’ पर मंद स्वर में गूँज रहे ओंकार ध्वनि का आनंद ले रही थी। आँखें मूँदे जैसे वह ॐ मन्त्र की डोर थामे ब्रह्माण्ड में विचर रही थी कि तभी खट खट खट की ध्वनि ने उसे ब्रह्माण्ड से खींच कर धरती पर ला पटका था। आँखें खुल गयीं। कोई दरवाजा खटखटा रहा था। पृथा शायद अभी तक सो रही थी और धनेश पूजा घर में थे। सोउसे ही मन मार कर रजाई से निकलना पड़ा। इस ठण्ड में रजाई से निकलना किसी सजा से कम न था। अच्छे से खुद को शहल मे लपेटते हुए उसने स्लीपर में पाँव फँसाया और कुछ लंगड़ाते हुए जा कर गेट खोला तो चौंक पड़ी। मुस्कुराता हुआ एक स्मार्ट दृसा युवक गुलाब का बड़ा-सा बुके और एक गिफ्ट पैक लिए खड़ा था।

”जी कहिए!”

”आप के लिए है मैम!“ वह कुछ और बोलती कि युवक उसी मोहक मुस्कान के साथ बुके और गिफ्ट पैक उसे थमा कर चला गया।

”अरे! ये किसने भेजा?” जैसे वह स्वयं से पूछ रही हो।

”इतने सारे लाल गुलाब कौन भेज सकता है मुझे?” सोचते हुए वह भीतर आई ही थी कि फोन बज उठा, ”हेल्लो...!;”

“चरणस्पर्श मम्मी !“

“अरे तुम...!”

“मम्मी...! अभी-अभी आपको कुछ मिला ?”

“हे भगवान्! तो ये सब तुमने भेजा है? आज कुछ है क्या?” पूछते हुए वह सोच रही थी कि आज न तो उसका जन्मदिन है न विवाह की वर्षगाँठ। फिर ये उपहार किस लिए!”

“ये सब छोड़िए मम्मी! पहले मेरी बात सुनिए। आप ये गिफ्ट्स पृथा को दीजिए प्लीज। और हाँ, मैं आपको विडियो कॉल करता हूँ। आप स्पीकर और फ्रंट कैमरा ऑन कर दीजिए। गिफ्ट लेते हुए जरा मैं भी तो उसके चेहरे का रंग देखूँ!”

अब सुजाता समझ गयी थी कि यह सब उसके लिए नहीं, बहू पृथा के लिए है।

‘वैलेंटाइन डे’ की तैयारी में सज रहे बाजारों की खबरें वह कई दिनों से टीवी पर देख रही थी। तो आज चौदह तारीख है! इसी लिए विदेश में बैठे सुपुत्र ने अपनी पत्नी को उपहार भेजा है। आज की पीढ़ी इन विदेशी त्योहारों के बहाने भी अपने प्रेम का इजहार कर लेती हैं। और एक हमारी पीढ़ी है, जिनसे सरसों का एक फूल भी तोड़ कर नहीं दिया जाता। इन छोटी-छोटी खुशियों से ही तो अतीत की तिजोरी भरती हैं। सोच कर उसके चेहरे पर खुशी छलक पड़ी। तभी दोबारा बेटे की कह्ल आ गयी। सुजाता ने कह्ल ले कर फ्रंट कैमरा ऑन कर लिया।

“पृथा बेटा! अभी तक सो रही हो? देखो तो कितना समय हो गया!” कहते हुए सुजाता बहू के कमरे में पहुँच गयीं। पृथा ने जैसे ही चेहरे से रजाई हटाई, सुजाता ने उपहार बहू की ओर बढ़ा दिया और फोन घुमा कर उसकी तरफ कर दिया।

“हैप्पी वैलेंटाइन डे बाबू !” आवाज सुन कर पृथा चौंक कर उठ बैठी। इतने सारे गुलाबों के साथ पति को स्क्रीन पर मुस्कुराता देख उसका चेहरा रक्तिम आभा से खिल उठा था। रात में बात करते करते ही सो गई थी और सुबह-सुबह सरप्राइज! उसने बाहें पसार कर उपहार समेट लिया।

”पैकेट भी तो खोलो।” तभी उधर से मधुमिश्रित आवाज आई।

पृथा ने पैकेट खोला। उसमें प्यारा सा कुशन था जिस पर उन दोनों की तस्वीर थी और साथ में एक चह्कलेट का डिब्बा। पृथा के रोम कूपों से छलकती खुशी को सुजाता देख रही थी और मन ही मन मुदित हो रही थी। प्रेम का ये रंग दोनों के जीवन मे यूँ ही बना रहे। दिल ही दिल में दुआएँ देते हुए बहू को फोन थमा, सुजाता अपने कमरे में आ गयी। पूजा घर से मानस की पंक्तियाँ उचारते धनेश की तेज-तेज आवाजें आ रही थी।

‘ढोल गँवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी।’

‘‘दुनिया प्रेम के सागर में गोते लगा रही और ये महाशय तुलसी बाबा की इनइ पंक्तियों में उलझे हैं।’’ भुनभुनाते हुए वह फिर से रजाई में दुबक कर बैठ गयी पर अब उसका मन ॐ ध्वनि में नहीं लग रहा था। उसने ‘कारवाँ’ ऑफ कर दिया। रह रह कर आती पृथा की हँसी घुँघरू-सी उसके कानों में बज रही थी कि तभी दरवाजा खुला, ‘‘कौन था ? कितनी बार कहा है कि जब मैं पूजा पर बैठूं तो कोई शोर न हो, इस बात का ध्यान रखा करो।’’ धनेश झल्लाए।

‘‘अरे उपहार आया है।’’

‘‘तुम्हारे लिए!’’

‘‘अब इस उम्र में मुझे उपहार देने वाला कौन है? पृथा के लिए आया है।’’

‘‘साहबजादे ने भेजा होगा!’’

‘‘और कौन भेजेगा!’’

‘‘ये आज कल के लड़कों के बहुत चोंचलें हैं। दुबई से तोहफा भेज रहे हैं बरखुदार! जानती भी हो कि कितने रुपए टूटे होंगें!’’

‘‘तुम जिंदगी भर रुपए ही तो कमाते रहे! और पड़े रहे निन्यानबे के फेर में!’’ ताना दिया सुजाता ने।

‘‘अरे प्रेम भी कोई दिखावे की चीज होती है क्या...!’’

‘‘हाँ, प्रेम दिखावे की चीज नहीं है पर दिन-रात आँखें दिखाना कितना जरूरी होता है। है न !’’ तंज किया सुजाता ने।

‘‘तुमसे तो बात करना ही व्यर्थ है।’’ झुँझलाते हुए धनेश कान में मफलर लपेटने लगे।

‘‘आजकल के बच्चे गुस्सा करते हैं तो प्रेम जताना भी जानते हैं पर कुछ लोगों को तो पत्नी से दो मीठे बोल बोलने में भी उनका अहम् आड़े आता है।’’

‘‘सुबह-सुबह बहस ले कर बैठ गयी। ये नहीं लग रहा है कि उठ कर एक कप चाय बना दो।’’

‘‘मैं ही जानती हूँ कि इस ठण्ड में मेरे घुटनों की क्या हालत होती है! प्र तुम्हें क्या! मैं मरूँ या जीयूँ!’’ सुजाता खिसियाते हुए उठी और किचन की ओर चल पड़ी। बेटे बहू की हँसने-बोलने की धीमी आवाजें अब भी आ रही थीं।

अदरक वाली चाय बना कर वह एक कप धनेश को और दूसरा कप बहू को थमा आई। धनेश अखबार पढ़ते हुए चाय सिप् करने लगे और वह किचन में नाश्ता तैयार करने में जुट गयी।

‘‘देखना जरा! गेट पर कोई है।’’ डोरबेल की आवाज सुनते ही बोले धनेश।

सुजाता जानती थी कि धनेश जब तक पूरा अखबार पढ़ नहीं लेंगे, उठने वाले नहीं थे। सो जा कर उसने गेट खोल दिया और सामने पुलिस देख कर चौंक पड़ी। ‘‘जी बताइए?’’ धड़कते दिल से पूछा उसने।

‘‘पासपोर्ट इन्क्वारी के लिए आये हैं।’’ सुनते ही वह समझ गयी। पृथा का पासपोर्ट अप्लाई किया गया था। उसने आ कर धनेश को बताया और अपने काम में लग गयी। पासपोर्ट आने भर की देरी है पृथा भी हवाई जहाज में बैठ कर उड़ जाएगी। सोचते हुए उसने एक लम्बी साँस भरी और धुला पोहा तड़के में डाल दी। इन्क्वारी तो बहाना था। उन्हें जो लेना था,ले गए थे। उनकी खातिर कर धनेश कमरे में लौट आये थे।

‘‘कितना ले गए ?’’ पोहे की प्लेट बढ़ाते हुए सुजाता ने पूछा।

‘‘दे रही हो क्या ?’’ प्लेट थामते हुए बोले धनेश।

‘‘हमेशा टेढ़ा ही बोलते हो, कभी सीधा भी बोल लिया करो !’’ सुजाता की त्योरी भी तन गयी थी।

”कितनी बार कह चुका हूँ कि अपने काम से काम रखा करो। हर बात में अपनी टांग मत अड़ाया करो।’’

‘‘इस आदमी को जिंदगी भर बोलने का शऊर नहीं आएगा।’’ भुनभुनाती हुयी सुजाता अपनी प्लेट लिए ड्राईंग रूम में आ कर बैठ गयी। ये कोई नई बात नहीं थी। उसे जब भी गुस्सा आता है, कुछ समय के लिए वह धनेश से दूरी बना लेती है। एक साधारण सी नौकरी में बेटे को उच्च शिक्षा दिलाई थी। एक छोटा सा घर और अपने बुढापे के लिए कुछ एल०आई०सी० की पॉलिसी भी ले ली थी। इसके सिवा न तो कभी स्वयं के लिए कुछ सोचा न ही पत्नी ने कभी कुछ कहा। सच तो ये है कि जेब ने अलाउ ही नहीं किया और देखते ही देखते न जाने कब जिंदगी के इतने वर्ष उम्र की तिजोरी से खर्च हो गए। वे जान ही नहीं पाए। सोचते हुए पोहा खतम कर धनेश उठे और कपड़े पहन कर बाहर निकल गए।

बाहर गाड़ी रुकने की आवाज सुन कर सुजाता ने दीवार घड़ी की ओर देखा। शाम के चार बज रहे थे। वह गेट खोलने के लिए उठ ही रही थी कि धनेश हॉर्न पर हॉर्न देने लगे। ”दो मिनट भी सब्र नहीं इन्हें! अरे कोई जवान जहान थोड़ी न हूँ जो दौड़ कर गेट खोल दूँगीं।“ बड़बड़ाती हुई जा कर गेट खोल दी और धनेश की ओर देखे बिना ही मुड़ कर पृथा के कमरे की ओर बढ़ गयी।

‘‘पृथा बेटा! पापा बाहर से आये हैं। उठ कर चाय बना दो।’’

‘‘जी मम्मी जी।’’ पृथा फोन रख कर किचन में चली गयी।

सुजाता जैसे ही अपने कमरे में पहुँची, धनेश चाँदी के वर्क से सजे पान के दो बीड़े उसकी ओर बढ़ाए मुस्कुराते हुए खड़े थे। देख कर उसकी आँखें फैल गयीं। भीतर का क्रोध तिरोहित हो गया। उसे याद आया जब विवाह के शुरुवाती दिनों में धनेश ऑफिस से लौटते हुए उसके लिए मीठा पान लाया करते और रात के खाने के बाद दोनों पान खाया करते थे। पान उसे बहुत पसंद था। बेटे के जन्म के बाद धीरे-धीरे न जाने कब उन दोनों के बीच से पान की मिठास कम होती चली गयी।

‘‘कुछ याद आया सुजाता !’’ कहते हुए धनेश उसके और करीब आ गए थे। हाँ में सिर हिलाते हुए सुजाता के चहरे पर साँझ की लाली उतर आई थी। तभी चाय की ट्रे थामे पृथा कमरे में चली आई। सास स्वसुर को हमेशा लड़ते-झगड़ते ही देखती थी। आज उन्हें देख कर उसके होंठों पर मुस्कन खिल उठी थी।

‘‘अब ले भी लीजिये मम्मी जी! पापा जी कितने प्यार से पान दे रहे हैं।’’ कहते हुए वह ट्रे बेड पर रख कर चली गई।

‘‘तुम्हें लाज नहीं आती! क्या सोचेगी पृथा! इस बुढ़ापे में...!’’ कहते हुए सुजाता ने पान का एक बीड़ा उठा लिया।

‘‘बूढ़ा होगा उसका बाप...!’’ धनेश फुसफुसाए। सुजाता आँचल से मुँह दबा कर हँस पड़ी। चाय ठंडी हो गयी थी। आज पान की मिठास और गुलाबों की सुगंध से घर महक उठा था। ■■

इस अंक के चित्रकार

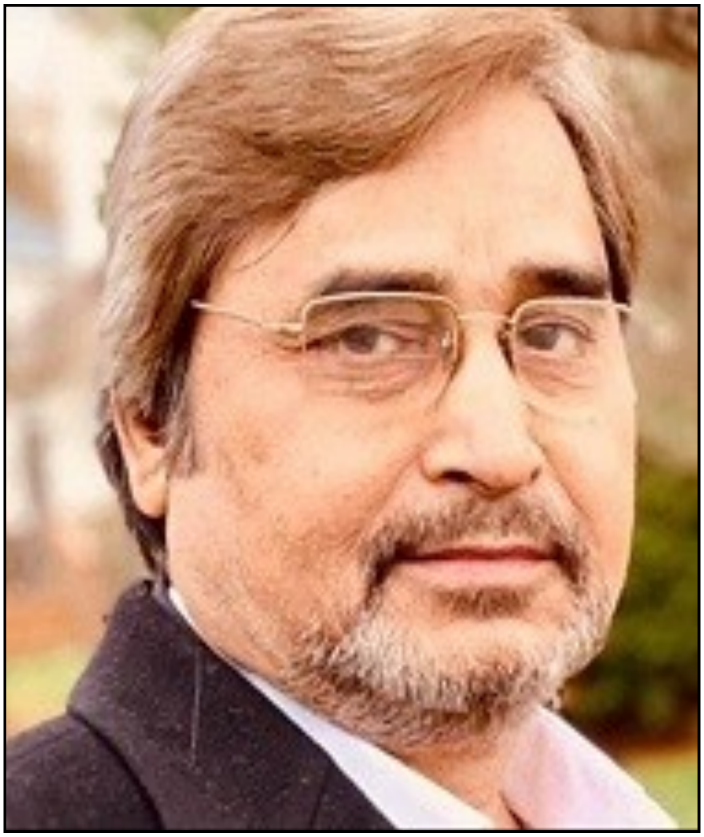

डॉ हरीश नवल
६५ साक्षरा अपार्टमेंटस
ए–३ पश्चिम विहार, नई दिल्ली–११००६३
☎ 9818999225
harishnaval@gmail.com

डॉ हरीश नवल जी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी हैं। वे पेशे से प्राध्यापक, संस्कारों से व्यंग्यकार, रुचि से पत्रकार और निष्ठा से सामाजिक कार्यकर्ता हैं। अब तक ३० से अधिक पुस्तकों के रचयिता हरीश जी को देश-विदेश में तमाम पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया ।

डॉ. हरीश नवल बतौर स्तम्भकार इंडिया टुडे, नवभारत टाइम्स, दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएँ, कल्पांत, राज-सरोकार तथा जनवाणी (महरीशस) से जुड़े रहें हैं। इन्होने इंडिया टुडे, माया, हिंद वार्ता, गगनांचल और सत्ताचक्र के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम किये हैं। वे एन.डी.टी.वी के हिन्दी प्रोग्रामिंग परामर्शदाता, आकाशवाणी दिल्ली के कार्यक्रम सलाहकार, बालमंच सलाहकार, जागृति मंच के मुख्य परामर्शदाता, विश्व युवा संगठन के अध्यक्ष, तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय सह-संयोजक पुरस्कार समिति तथा हिन्दी वार्ता के सलाहकार संपादक के पद पर काम कर चुके हैं। वे अतिथि व्याख्याता के रुप में सोफिया वि.वि. बुल्गारिया तथा मुख्य परीक्षक के रूप में महरीशस विश्वविद्यालय (महात्मा गांधी संस्थान) का दौरा कर चुके हैं।अपनी पहली पुस्तक बागपत के खरबुजे के लिए युवा जनपीठ पुरस्कार (पुरस्कार) के प्राप्तकर्ता । उन्हें ‘‘मध्यम पुरस्कार’’, ‘‘सहिया मणि’’, ‘‘जैनेंद्र कुमार सम्मान’’, ‘‘फिकरा तौसविन पुरस्कार’’, ‘‘बाल्कन जी बारी अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार’’ आदि जैसे अन्य पुरस्कार भी मिले हैं।

■■

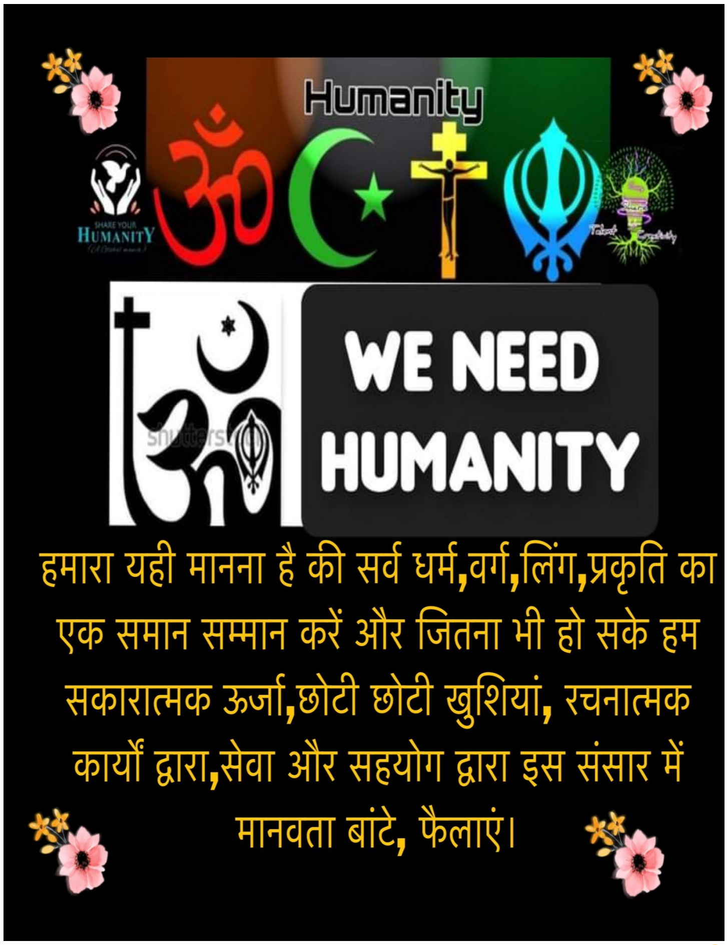
Humanity
SHARE YOUR HUMANITY
WE NEED HUMANITY
हमारा यही मानना है की सर्व धर्म,वर्ग,लिंग,प्रकृति का एक समान सम्मान करें और जितना भी हो सके हम सकारात्मक ऊर्जा,छोटी छोटी खुशियां, रचनात्मक कार्यों द्वारा,सेवा और सहयोग द्वारा इस संसार में मानवता बांटे, फैलाएं।

कार्यक्रम रिपोर्ट

सोशल मीडिया और इंटरनेट के प्रयोग के बढ़ने से हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए पूरे विश्व में रह रहे भारतीय समुदाय अब और चढ़-बढ़ कर आगे आ रहे हैं । निरंतर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है ,विश्व भर के सभी हिंदी प्रेमी एक सार्थक उद्देश्य हेतु आपस में ऑनलाइन मिल रहे हैं और काव्य-गोष्ठी अथवा साहित्यिक चर्चा सम्पन्न कर रहे हैं । ऐसे ऑनलाइन जुड़ाव से व्यक्तिगत सम्बन्ध में भी प्रगढ़ता आ रही है तो ऑफलाइन मिलने पर भी साहित्यिक और बेहतर ढंग से सम्पन्न हो रही है क्योंकि वैश्विक स्तर पर हिंदी प्रेमी आपस में परिवार की तरह जुड़ रहे हैं ।

ऐसी ही एक सुखद घटना पिछले दिनों कतर की राजधानी दोहा में घटी जब अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका हिंदी की गूँज की संरक्षक और मुख्य सम्पादक श्रीमती रमा शर्मा जी का दोहा आगमन हुआ । वहाँ की एक प्रसिद्ध संस्था शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म ने अपनी तरफ से उनके सम्मान में एक कवि मिलन और साहित्यिक चर्चा का कार्यक्रम आयोजित किया । कई विशेष सामाजिक और साहित्यिक हस्तियों की उपस्थिति में संस्था की संस्थापिका मोनी विजय जी ने रमा शर्मा जी का अभिनंदन किया । हिंदी के प्रति उनके योगदान के लिए मोनी जी ने उन्हें मोमेंटो,सर्टिफिकेट और एक शहल प्रदान कर सम्मानित किया गया स कार्यक्रम में सम्मान के पश्चात एक सुंदर परिचय कार्यक्रम और काव्य-गोष्ठी का आयोजन भी सम्पन्न हुआ ।

कई प्रतिष्ठित कवि कवयित्रीगण भी इसमें सम्मिलित हुए जिसमें प्रमुख रूप से
समीर मूसा जी(कतर एडमिन SYH),
डॉ मीनू मानसी जी,
शालिनी गर्ग जी,
शालिनी वर्मा जी,
आरती सिंह वर्मा जी,
चंद्रा जोशी गुरुरानी जी,
वंदना राज जी,
अंकिता बाहेती जी! का नाम उल्लेखनीय है ।

इस सम्मान समारोह एवं काव्य-गोष्ठी में में सभी ने अपने काव्य पाठ से इस कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया । अपने वक्तव्य में रमा जी ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया और हिंदी हेतु ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला । विदेशों में रह रहे भारतीयों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम बहुत जरूरी हैं जो सब को एक खास रिश्ते में जोड़ता भी है और हिंदी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान भी देता है । अंत में रमा जी ने शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल संस्था ,मोनी विजय जी और उपस्थिति सभी कवि और कवियत्रीयों का आभार व्यक्त किया स रमा जी ने बताया कि भविष्य में जापान में हिंदी की गूँज पत्रिका भी अपनी बैनर तले काव्य - गोष्ठी और साहित्यिक चर्चा आयोजित कर के साहित्यकार और हिंदी प्रेमियों को एक सूत्र में जोड़ने का प्रयास करेगी ।

◆ ◆

नैतिकता

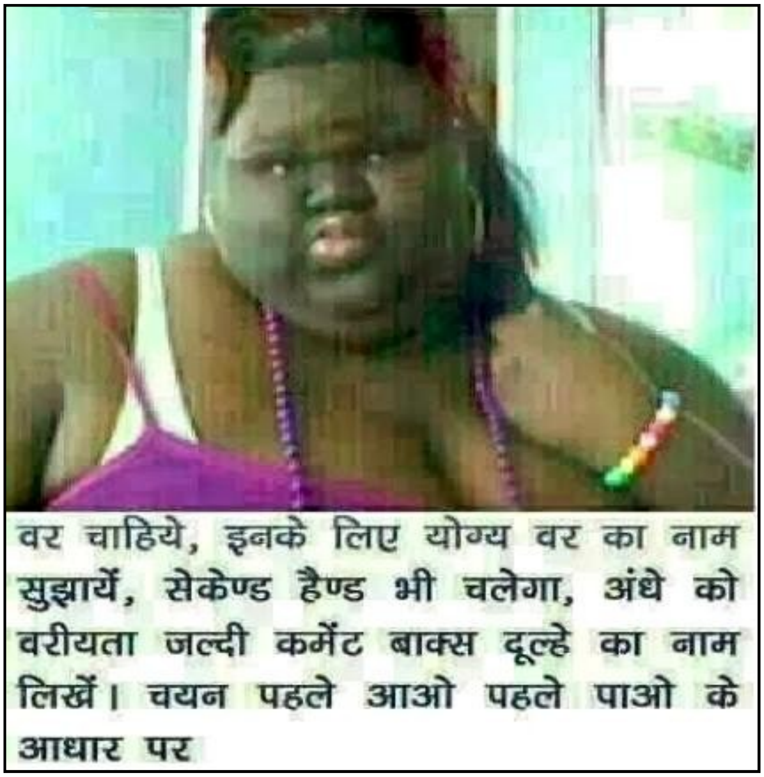

वर चाहिये, इनके लिए योग्य वर का नाम सुझायें, सेकेण्ड हैण्ड भी चलेगा, अंधे को वरीयता जल्दी कमेंट बाक्स दूल्हे का नाम लिखें। चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर

(चित्र : गूगल/इंटरनेट से साभार)

आजकल व्हटसअप पर तरह-तरह के जोक्स, चुटकुले आते रहते हैं । जिन्हें देख कर बहुत कोफ्त होती है । मन में विचार आता है कि लोग के नैतिक संस्कार कहाँ चले गए।रंग रूप सब कुदरत की देन होती है।इस में हम सब का कोई हाथ नही होता , हाँ आजकल कई तरह के आपरेशन होने लग पड़े है ज्यादा सुंदर दिखने के लिये।लेकिन ये सब चीजे वो ही लोग कर पाते हैं जिनके पास पैसा है।लेकिन जिनके पास पैसा नही और कुदरत ने उन्हे शक्ल भी अच्छी न दी हो तो क्या उनकी खिल्ली उड़ानी चाहिये ? उनके दिल पर क्या गुजरती होगी जब हर कोई उन्हें मजाक का निशाना बनाता होगा। लोगों के कटाक्ष, व्यंग्य भरी खिल्ली उड़ाती मुस्कानें । अगर कुदरत ने उनके साथ न्याय नहीं किया तो हम क्या कर रहे हैं उन का मजाक उड़ा कर। कभी सोचिए । ये सब मेरे व्यक्तिगत विचार हैं। दरअसल आज एक जोक था किसी गहरे रंग की मोटी सी लड़की पर ”इनके लिये योग्य वर का नाम सुझायें, सेकेंड हैंड भी चलेगा, अंधे को वरीयता, जल्दी कमेंट्स बाकिस में दूल्हे का नाम पता लिखें,चयन पहले आओ पहले पाओ के आधार पर ” अब आप ही बताइए ये कहाँ का मजाक है। कैसा भद्दा और फूहड़ जोक। मन रो उठा ये सब पढ़ कर। हमारी सोच हमारे संस्कार हमारी संस्कृति क्या सही है ?

जब मैं छोटी थी तो हमें एक किताब पढ़ाई जाती थी जिसमें हमें नैतिकता का सबक सिखाया जाता था। शायद उन्ही बातो और संस्कारो के कारण मैं इन बातो पर हँस नही पाती हूँ । मुझे फूहड़ सी हँसी ठिठोली सा किसी को तंज कसने वाली बातें या किसी के मजाक का निशाना बनाना कभी पसंद नहीं आया ।लेकिन अगर किसी को मना करना चाहो तो वो भी बुरा मानता है, चुटकुला कह कर बात खत्म कर दी जाती है पर ऐसी बातें या चुटकुलों को बंद नहीं किया जाता। हम तो सिर्फ मजाक कर रहे थे... । यहाँ पर चर्चा खत्म हो जाती है ।

लेकिन ऐसा मजाक मेरे मन को कहीं अंदर तक मथ जाता है , मैं अकारण ही सोचने लगती हूँ कि अगर मैं ऐसी होती तो मेरा भी यूँ ही मजाक बनता... ? तब मेरे मन पर क्या गुजरती !

काश नैतिकता की शिक्षा फिर से शुरू हो जाये और घर में भी बच्चो को किसी का मजाक उड़ाना नही उससे सहानुभूति करनी सिखाई जानी चाहिए।अगर बड़े ही हँसते रहेंगे ऐसी बातों पर तो बच्चे क्या सीखेंगे । स्वयं को बदल कर बच्चों को सिखायेंगे तो धीरे धीरे ही सही नैतिक संस्कार फिर से जागेंगे ओर अपराधो में भी कमी आयेगी।क्योंकि ये भटके हुये लोग सिर्फ शारीरिक सुंदरता की ओर लपकते हैं... इन लोगों में भावनाओ का कतई अभाव होता है। तभी समामें अनैतिक तत्व सर उठा रहे हैं ।

रमा शर्मा, जापान

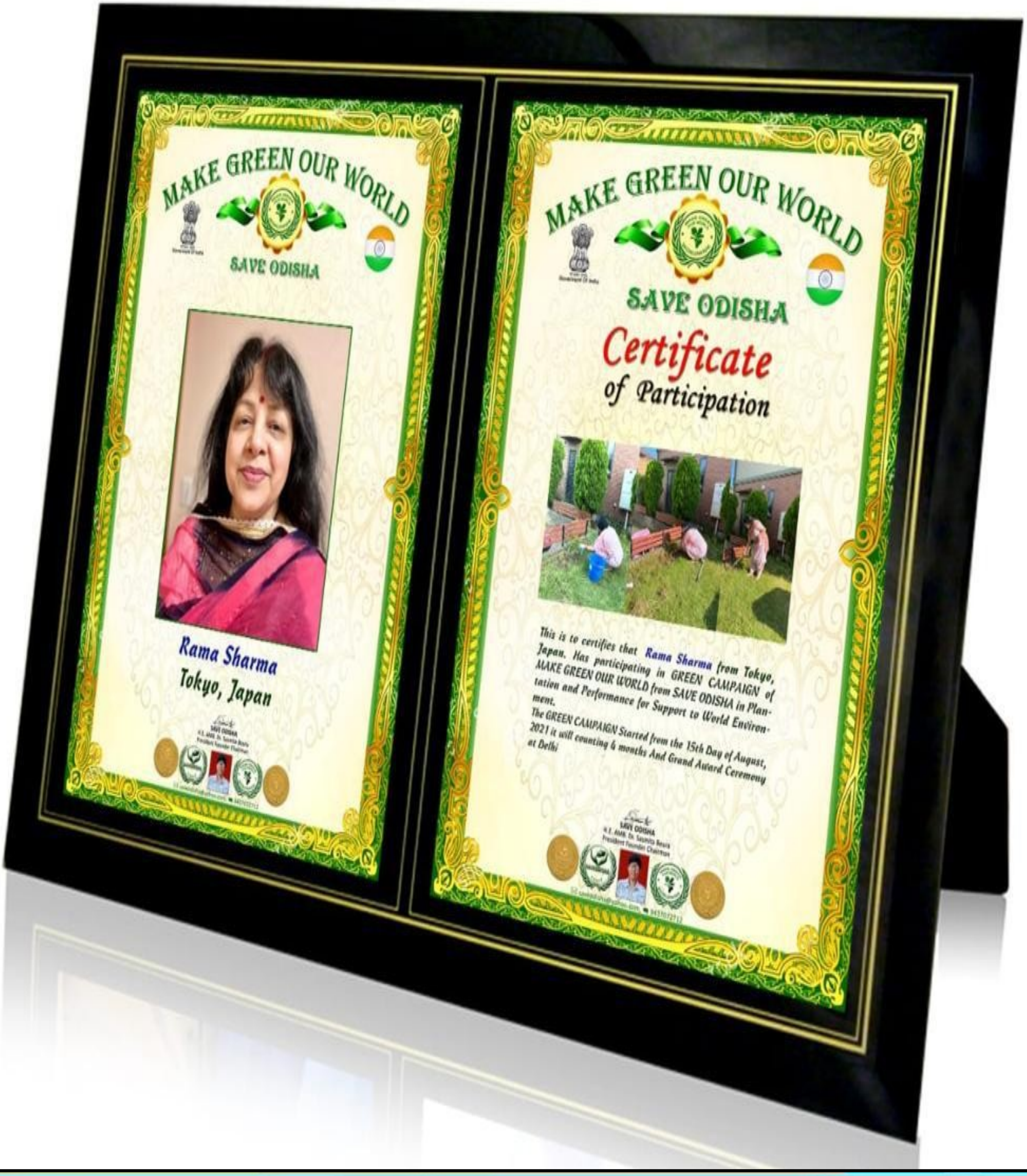

MAKE GREEN OUR WORLD

SAVE ODISHA

Rama Sharma

Tokyo, Japan

SAVE ODISHA

President Founder Chairman

MAKE GREEN OUR WORLD

SAVE ODISHA

Certificate
of Participation

This is to certifies that **Rama Sharma** from Tokyo, Japan. Has participating in GREEN CAMPAIGN of MAKE GREEN OUR WORLD from SAVE ODISHA in Plantation and Performance for Support to World Environment.

The GREEN CAMPAIGN Started from the 15th Day of August, 2021 it will counting 6 months And Grand Award Ceremony at Delhi

SAVE ODISHA

President Founder Chairman